Accredited by NAAC with Grade-B-2.17(2014)
Permanently Affiliated to University of Mumbai

Mangaon Shikshan Prasarak Mandal's
D. G. Tatkare Mahavidyalay
Arts, Science, Commerce.
Tal. Mangaon, Dist. Raigad. 402 104
☎: Off. 02140 - 263928, Mob. : 9075610653

Estt. 14th July 1993
Reg. No. 3664/93

www.mangaonseniorcollege.com mspmmangaonseniorcollege@gmail.com

Late Ashokdada Sable, Founder - (Ex. M. L. A.)
Shri. Rajiv Sable, President
Shri. Krishna Gandhi, Secretary
Dr. Baban M. Khamkar, Principal

Ref.....

Date : 10 / 02 /2022

3.3.3 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ internatio

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Year of publication	ISBN/ISSN number of the proceeding	Affiliating Institute at the time of publication
1	Asst. Prof. Singare B. K.	वस्ती भूगोल	2016	ISBN- 978-93-5212-468-8	University of Mumbai Syllabus Based
2	प्रा. पाण्डेय जे. आर.	नाट्य-प्रदर्शन के आवश्यक तत्व	2016	ISBN-978-93-80788-49-4	University of Mumbai Syllabus Based
3	प्रा. पाण्डेय जे. आर.	संत कबीर का सामाजिक दृष्टिकोन	2016	ISBN- 978-93-81549-97-1	University of Mumbai Syllabus Based
4	Dr. Singare Baban Kacharu		2016	ISBN-978-93-81948-90-3	University of Mumbai Syllabus Based
5	प्रा. पाण्डेय जे. आर.	गोविंद मिश्र के धीर समिरे उपन्यास में चित्रित मानविय संवेदना ।	2017	ISBN-978-81-926634-9-4	University of Mumbai Syllabus Based
6	Prof. Sangita Gangaram Utekar	Information Literacy	2017	ISBN-978-93-83871-74-2	University of Mumbai Syllabus Based
7	Prof. Sangita Gangaram Utekar	राजर्षि शाहू महाराज - लोक कल्याणकारी राजा	2017	ISBN -978-93-5240-161-1	University of Mumbai Syllabus Based

PRINCIPAL
D.G. Tatkare Mahavidyalaya
(ARTS, SCIENCE, & COMMERCE)

Mangaon Shikshan Prasarak Mandal's

D. G. Tatkare Mahavidyalay

Arts, Science, Commerce.

Tal. Mangaon, Dist. Raigad. 402 104

☎: Off. 02140 - 263928, Mob. : 9075610653

Estt. 14th July 1993
Reg. No. 3664/93

www.mangaonseniorcollege.com mspmmangaonseniorcollege@gmail.com

Late Ashokdada Sable, Founder - (Ex. M. L. A.) | Shri. Rajiv Sable, President | Shri. Krishna Gandhi, Secretary | Dr. Baban M. Khamkar, Principal

Ref.....

Date : 10 / 02/2022

8	Prof. Sangita Gangaram Utekar	Innovating Library services to users	2017		University of Mumbai Syllabus Based
9	Prof. Sangita Gangaram Utekar	Comparative Study on use of Print Vs Electronic Resources	2017		University of Mumbai Syllabus Based
10	Prof. Sangita Gangaram Utekar	राजर्षि शाहू महाराजांचे विचार व कार्य	2017	ISBN-978-1-312-73129-5	University of Mumbai Syllabus Based
11	Prof. Sangita Gangaram Utekar	Management & Indicators for Qualitiesin Library	2017	ISBN-978-93-87580-01-05	University of Mumbai Syllabus Based
12	Prof. Sangita Gangaram Utekar	**Moocs: Agateway to learning Environment**	**2018**	978-93-5288-314-1	University of Mumbai Syllabus Based
13	Prof. Sangita Gangaram Utekar	Mobile Techology & service- oriented Architecture	2018	ISBN-978-1-947099-03-6	University of Mumbai Syllabus Based

PRINCIPAL
D.G. Tatkare Mahavidyalaya
(ARTS,SCIENCE,& COMMERCE)
Mangaon-Raigad

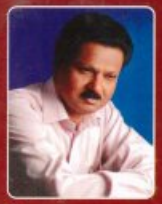

डॉ. अर्जुन जानू घरत

जन्म स्थान : केळवणे, पनवेल, जिला- रायगढ़, महाराष्ट्र, पिन - 410206

शिक्षा : एम.ए., एम.फिल., पीएच-डी. (मुंबई विश्वविद्यालय)

कृतियां :
- आभाळ ठेंगणे (कविता संग्रह)
- पदम्भूषण (नाटक)
- नागार्जुन के नारी-पात्र (लघु. शोध प्रबंध)
- कथाकार नागार्जुन एवं बाबा बटेश्वरनाथ (समीक्षा)
- नयी सदी नये नाटक
- नागार्जुन के साहित्य में आँचलिकता

सम्प्रति : महात्मा फुले कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय पनवेल, रायगढ

प्रा. संदिप कदम

जन्म : 19 अगस्त 1984 को भवानी नगर, जिला- सांगली (महाराष्ट्र)

शिक्षा : एम.ए., नेट (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर)

लेखन प्रकाशन : राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में अनेक शोधालेख प्रकाशित
राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सक्रिय सहभाग एवं प्रपत्र पठन

अध्यापन अनुभव : रयत शिक्षण संस्था, सातारा के विभिन्न महाविद्यलायों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापन

शोधकार्य : पीएच.डी. उपाधि हेतु शोधकार्य जारी

पुरस्कार/सम्मान : डॉ. अप्पासाहेब पवार कमवा व शिका 'प्रबोधिनी शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर द्वारा एम.ए. में प्रथम आने हेतु सम्मानित

शैलजा प्रकाशन
57-पी, कुंज विहार-II, यशोदा नगर, कानपुर
Mob.: 0512-2633004 • E-mail: shailjaprakashan@gmail.com
9 789380 788494

नयी सदी : नये नाटक ● डॉ. अर्जुन घरत, प्रा. संदिप कदम

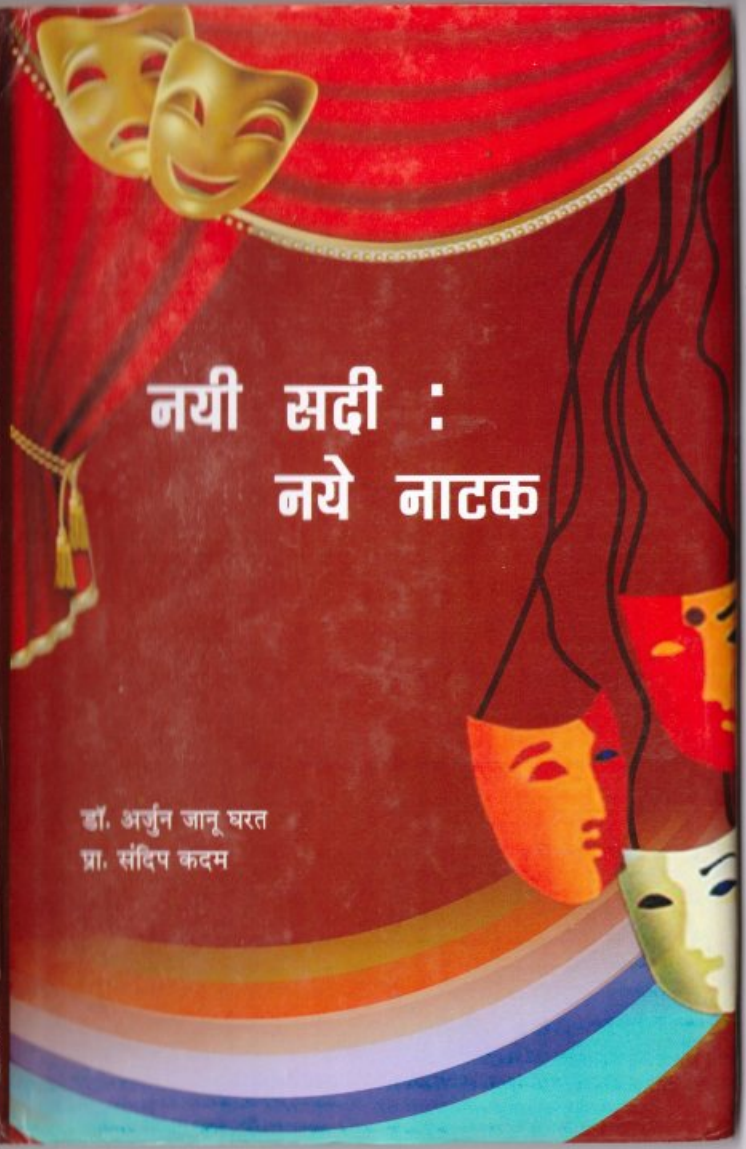

नयी सदी : नये नाटक

डॉ. अर्जुन जानू घरत
प्रा. संदिप कदम

इस पु

- हिंदी न
- हिंदी न
- नाट्य-
- इक्की
- जवाप मूल र
- इक्की 'दरोग
- 21वीं रंगमं
- दयाप्र में व्य
- 'गाथ समर
- 'अन
- 21वीं भूमंड
- 'जन
- गोड, गांध
- 'वहं साह
- 'वह का

मूल्य -300/-

पुस्तक	:	नई सदी : नये नाटक
संपादक	:	संपादक डॉ. अर्जुन घरत, प्रा. संदिप कदम
प्रकाशक	:	शैलजा प्रकाशन 57- पी, कुंज विहार-II, यशोदा नगर, कानपुर-2080 011
संस्करण	:	प्रथम 2016
शब्द सज्जा	:	शिखा ग्राफिक्स, जूही, कानपुर
मुद्रक	:	पूजा प्रिंटर्स
ISBN	:	**978-93-80788-49-4**

NAEE SADI : NAYE NATAK

Edited by: Dr. Arjun Gharat
Mr. Sandip Kadam

Rs. Three Hundred Only.

समर्पण

"गरीब पीड़ितों के उद्धारक,
मानवता के पुजारी, रयत
शिक्षण संस्था के संस्थापक,
महान शिक्षा महर्षि
डॉ. कर्मवीर भाऊराव पाटील जी
की
पवित्र स्मृति
को
सादर समर्पित"

इस पु

- हिंदी
- हिंदी
- नाट्य
- इक्की
- जयव मूल
- इक्की 'दरो
- 21वीं रंगम
- दयाप्र में व
- 'गाथ समर
- 'अन्त
- 21वीं भूमं
- 'जन
- गोड' गांध
- 'यहं साह
- 'बह का

सहायता से आयोजित था, जो 'इक्कीसवीं सदी के हिन्दी नाटक और भूमंडलीकरण' विषय पर था। इस सेमिनार में अनेक महानुभावों ने अपने शोध निबंध सादर किये। उनमें से कुछ शोध निबंध संगृहित कर इस पुस्तक की योजना बनायी गयी। जिन विद्वजनों ने अपने शोध निबंध देकर हमें प्रकाशित करने की अनुमति दी उन सबके प्राति मैं कृतज्ञता भाव व्यक्त करता हूँ।

सेमिनार के आयोजन के पीछे प्रेरणा के रूप में महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य और व्यक्त शिक्षण संस्था के वर्तमान सचिव प्राचार्य डॉ. गणेश ठाकूर जी के प्रति आभार व्यक्त करना मैं मेरा फर्ज समझता हूँ। प्राचार्य डॉ. संजय कांबळे तथा प्राचार्य डॉ. अरूण आंधळे जी के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिन्होंने पुस्तक प्रकाशित करने में पूरे मनोयोग से सहयोग दिया।

चर्चासत्र में प्रत्यक्ष उपस्थित रहकर प्रतिभागी प्राध्यापक तथा छात्रों में ज्ञान की अनुभूति कर देनेवाले विद्वजनों में डॉ. रतनकुमार पाण्डेय, डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र', डॉ. नवीन चव्हाण, डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. व्ही.एन. भालेराव, डॉ. हुबनाथ पाण्डेय, डॉ. पोपट कोटमे, डॉ. सुभाष तलेकर, डॉ. सुनिल चव्हाण इन सबके प्रति आभार व्यक्त करते समय मैं प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ।

महाविद्यालय के हमारे साथी उपप्राचार्य पी.के. क्षीरसागर, डॉ. ए.डी. आढाव, डॉ. आर.ए. पाटील, प्रा. पी. वाय कांबळे, प्रा. सी.डी. धिंधके, डॉ. बी.डी. शिंदे, डॉ. एन. आर मढवी, प्रा. रमेश म्हाले, श्री एस.टी. कुपेकर, रजिस्ट्रार, शिवाजी राउत, प्रा. एस. गोवे, ग्रंथपाल प्रा. डी.गलांड, प्रा. सुनील अपचिने इन सबके सहयोग के कारण ही हम सफलता को पा सकें उन सबके प्रति आभार।

शैलजा प्रकाशन के मालिक श्री रामेन्द्र तिवारी तथा उनके सुपुत्र आशुतोष तिवारी के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ कि महँगाई के इस जमाने में इन्होंने अनेक मुसीबतों को झेलकर हमारी सामग्री को पुस्तक के रूप में आकार दिया और हमारे सपनों को पूरा किया।

वास्तव में इस रचना का जन्म प्रा. संदिप कदम की मेहनत का प्रतिकल है, यश के सच्चे भागी वही हैं। उनके प्रति कृतज्ञता!

-डॉ. अर्जुन घरत

अनुक्रमणिका

1. हिन्दी नाटक और रंगमंच 11-24
2. हिन्दी नाटक और राष्ट्रीयता 25-29
3. नाट्य-प्रदर्शन के आवश्यक तत्व 30-32
4. इक्कीसवीं सदी और हिन्दी रंगमंच 33-37
5. जयवर्धन के 'हाय! हैंडसम' नाटक में चित्रित मूल समस्याएँ 38-44
6. इक्कीसवीं सदी के नाटकों का कथ्य और शिल्प 'दरोगा जी! चोरी हो गई' नाटक के संदर्भ में 45-47
7. 21वीं सदी के नाटकों का भूमंडलीकरण से रंगमंचीयता में परिवर्तन 48-51
8. दयाप्रकाश सिन्हा के नाटक 'रक्त अभिषेक' में व्यक्त 'आज' 52-56
9. 'गाथा कुरूक्षेत्र की' काव्य नाटक में समसामयिकता-बोध 57-65
10. 'अन्त हाजिर हो' नाटक का कथानक 66-71
11. 21वीं सदी के नाटकों के कथानक पर भूमंडलीकरण का प्रभाव 72-75
12. 'जन विजय' नाटक में भूमंडलीकरण 76-79
13. गोडसे @ गांधी. कॉम: वर्तमान संदर्भों में गांधीवाद की परख और संभावना की तलाश 80-88
14. 'यहीं कहीं... बहुत दूर' मोहन महर्षि का साहसी कदम ... 89-92
15. 'बहादुर कलारिन ' की पृष्ठभूमि : हबीब तनवीर का दृष्टिकोण 93-98
16. रति का कंगन 99-101
17. 21वीं सदी के महिला नाटककारों के नाटकों का भूमंडलीकरण से रंगमंचीयता में परिवर्तन 102-104
18. ''रावण तुम बाहर आओ'' नाटक में व्याप्त समस्याएँ 105-109
19. शकुंतला की अंगूठी 110-113
20. ''सुश्री सुशिला टाकभौरे के नाटकों में सामाजिक सरोकार'' 114-116
21. ''21 वीं सदी के दलित हिंदी नाटकों का कथ्य'' 117-121
22. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में समस्या निरूपण 122-123
23. भूमंडलीकरण और नाटक-'सकुबाई' के विशेष सन्दर्भ में 124-127

3

नाट्य-प्रदर्शन के आवश्यक तत्व

प्रा. पाण्डेय जे.आर

1.प्राचीन संस्कृत नाटकों की परम्परा- संस्कृत नाटकों की उत्पत्ति का कोई निश्चित आधार नहीं है। केवल अनुमान या कल्पना का आधार लगाया जा सकता है। नाटक पहले से ही लोकप्रिय साहित्य का क्षेत्र रहा है। सभी वर्णों के स्त्री-पुरुष इसका समान रूप से रसास्वादन कर सकते हैं। संस्कृत नाटकों की परम्परा का चलन कुछ विद्वान लोग अश्वघोश (ईसा की प्रथम सदी) से मानते हैं। अश्वघोश के कुछ लिखित नाटक ताड़पत्रों पर मिलते हैं। इससे यह मालूम होता हैं कि संस्कृत नाटकों की परम्परा इससे पूर्व भी थी। नाटकों का उच्च विकास महाकवि कालिदास ने किया। कालिदास ने स्वयं घोषित किया कि उनसे पूर्व भास, सोमिल और कविपुत्र नाटककार थे। जिससे भास के अनेक रचनाओंका पता चलता हैं। इन्होंने कुल 13 नाटक लिखे हैं। महाकवि कालिदास ने प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' लिखा। उनके कई नाटक हैं। कालिदास के बाद शूद्रक का नाम आता है जिन्होंने 'मृच्छकटिक' नाटक लिखा। इसके अतिरिक्त 'प्रियदर्शिका' 'नागानन्द' और 'रत्नावली' भी लिखा। विशाखदत्त ने 'मुद्राराक्षस' नाटक लिखा। भट्टनारायण भवभूति भी प्रसिद्ध नाटककार थे।

2. हिन्दी नाटकों की परम्परा -हिन्दी नाटकों की परम्परा 13 वीं शताब्दी से मानी जाती है।कुछ लोग तो 'सन्देश रासक' को इसका केन्द्र मानते हैं। धार्मिक आन्दोलनों से जो रासलीला और रामलीला के रूप में रंगमंच की स्थापना हुई तो उसकी परम्परा आज तक देखी जा सकती है। उत्तर भारत में 'नौटंकी' अत्यंत लोकप्रिय है। 18 वीं शताब्दी तक नौटंकी उत्तर भारत में फैल चुकी थी। सन् 1853 में पहली 'पारसी नाटक मंडली' की स्थापना हुई। इस मंडली के प्रधान श्री फराम जी गुस्ताद जी दलाल थे। सन् 1853 ई. में अमानत जी ने 'इन्दर सभा' नाटक लिखा। प्रारम्भ में पारसी कम्पनियों का काफी प्रभाव था। लोग बेताब के 'महाभारत' नाटक से हिन्दी रंगमंच का आरम्भ मानते हैं। अनेक विद्वानों ने रीवा नरेश विश्वनाथ सिंह के 'आनन्द रघुनन्दन' को पहला मौलिक नाटक माना हैं तो कुछ विद्ववान भारतेन्दु हरीश्चन्द्र के पिता गोपालचन्द्र के 'नहूष' को पहला नाटक मानते हैं। खड़ी बोली

हिन्दी में नाटक लिखने का सूत्रपात भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से मानते हैं। भारतेन्दु जी ने पहला नाटक 'भारत दुर्दशा' लिखा जो की राजनीतिक नाटक था। जिसमें भारतेन्दु जी ने खेद व्यक्त किया था-

"अँगरेज राज सुख साज सजे सब भारी,
पै धन विदेश चलि जाती इहै अति ख्वारी।"

3. नाट्य-प्रदर्शन के तत्व-आजादी से पहले तथा बाद में भी हिन्दी रंगमंच कमजोर ही रहा। हिन्दी के गंभीर लेखक नाटक की ओर जाने से डरते थे, क्योंकि हिन्दी में संतोषजनक रंगमंच नहीं थे। नाट्य प्रदर्शन के तीन बहुत महत्वपूर्ण अंग है-

1. निर्देशक 2. रंगशिल्प 3. अभिनय

1. **निर्देशक**- पश्चिमी रंगमंच में भी निर्देशक की उत्पत्ति का इतिहास अभी सौ वर्ष का ही है। सुरूचिपूर्ण कलात्मक दृष्टि से रंगमंच में निर्देशक का महत्वपूर्ण योगदान होता है। निर्देशक नाट्य प्रदर्शन को विभिन्न तत्वों को एक साथ रखता है। निर्देशक रंगशिल्प के अन्य तत्वों को एक-दूसरे से समुचित जोड़ता हैं। उसके अस्तित्व के बिना नाटक का प्रदर्शन नहीं हो सकता। हिन्दी रंगमंच में भी निर्देशक नया हुआ है। पिछले दो-तीन दशकों में निर्देशक का महत्व बढ़ा है। पारसी रंगमंच के जमाने में नाटक लेखक या प्रमुख अभिनेता या मंडली का संचालक ही नाटक को देखता था, या आवश्यकता पड़ने पर एक अनुभवी अभिनेता लोगों को सही काम करने का तरीका बताता था। हिन्दी रंगमंच में न तो काफी संख्या में निर्देशक सामने आ रहे हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि निर्देशकों ने रंगमंच को अधिक व्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। कभी-कभी निर्देशक का अभिनेता से टकराव हो जाता है जो कि गलत है। जब भी रंगमंच को लोकप्रियता मिलती है उसका एक प्रमुख कारण अभिनेता भी होता है। हिन्दी के रंगमंच में ऊंचे दर्जे के अभिनेता का अभाव है।

2.**रंगशिल्प**- आजकल रंगशिल्प की ओर लोगों का दृष्टिकोण बदल गया हैं। रंगसज्जा भड़कीली, चमत्कारपूर्ण होना आकर्षक का कारण माना जाता है। जहाँ पैसे की कमी के कारण नहीं हो पाता वहाँ कलाकार मानसिक हीनता के शिकार हो जाते हैं। बहुत बार तो इन साधनों के अभाव में नाटक खेलना असम्भव हो जाता हैं। अब वस्त्रों के भड़कीले या मूल्यवान होने की जगह भावदशा के अनुरूप और युगानुकूल होना महत्वपूर्ण हो गया है। संगीत और नृत्य ने रंगशिल्प में एक महत्वपूर्ण स्थान पा लिया है। कल्पनाशीलता को प्रमुखता दी गयी है। सूक्ष्मता इसका आवश्यक तत्व माना जाने लगा है। जिसके कारण रंगमंच का प्रदर्शन अधिक कौशलपूर्ण, कलात्मक बन सका हैं। नये नाटकों के रंगशिल्प में इन सब बातों को विशेष ध्यान दिया जाने लगा है। क्योंकि दर्शक कुछ नया देखना चाहता हैं जो कि उसे फिल्मों में भी नहीं दिखाई देता हो।

3. **अभिनय**- अभिनेता रंगमंच का प्रमुख महत्वपूर्ण घटक है जिसके कारण नाटक प्रभावशाली बनता है। प्रतिभावान, कुशल, कल्पनाशील अभिनेता के बगैर अन्य सारे तत्व चाहे जितने सक्षम और सशक्त क्यों न हो नाटक को सफल नहीं करा सकते। हमारे देश में अभिनय प्रतिभा की कमी नहीं हैं। देश भर के स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयो में अभिनय में रूचि रखने वाले नौजवानों की कमी नहीं हैं। हमें उनके सामने उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी होगी। संस्कृत रंगमंच की अभिनय पद्धति से हमारा सम्पर्क टूट गया है। आजकल अभिनय में कई शैलियों का समन्वय करना पड़ता है। हिन्दी अभिनय परम्परा अभी बहुत विकसित नहीं हैं। फिल्मों का आकर्षण उनके सामने एक प्रमुख चुनौती है। हिन्दी नाटकों के अभिनय की कोई एक व्यवस्थित शैली नही बन पायी हैं। पुरानी शैली को आधार बनाकर बंगाली, मराठी शैलियों की नकल करके हम अपना काम निकाल रहे हैं। अभिनेता प्रायः अपने कार्य के प्रति गम्भीर जिम्मेदार नहीं होते। अपना पाठ तक याद नहीं कर पाते। अधिकांश नाटक दो-चार से अधिक बार खेले नहीं जाते जिसके कारण अनुभव की कमी रहती है। अच्छे अभिनेता के लिये अपने अभिनय तंत्र, शरीर और कंठ पर नियंत्रण रखना चाहिये। अधिकांश अभिनेता फिल्मी सितारों की नकल करते दिखायी देते हैं। कुछ अच्छे अभिनेता है जैसे- मराठी में शम्भुमित्र, तृप्ति मित्र, श्रीराम लागू, सुलभा देशपांडे, बंगाली में उत्पल दत्त, सविता दत्त, कुमार राय, अजितेश बॅनर्जी, हिंदी में एस. एम. जहीर, पकंज कपूर, के.के. रैना, अमरीश पुरी, मनोहर सिंह इत्यादि।

जहां तक अभिनय के प्रशिक्षण का प्रश्न है तो इस क्षेत्र में घोर निराशा देखने को मिलती है। देश की विभिन्न भाषाओं में अभिनय के प्रशिक्षण की कोई स्तरीय व्यवस्था नहीं है। कुछ गिने चुने केंद्र ही इस दिशा में कार्यरत हैं। जैसे बंगला में रवीन्द्र भारती, गुजराती में बड़ौदा विश्वविद्यालय, पंजाबी में पटियाला विश्वविद्यालय, लखनऊ में भारतेन्दु नाट्य अकादमी, दिल्ली में नाट्य विद्यालय इत्यादि। समुचित व्यवस्था का अभाव भारतीय रंगमंच के विकास में सबसे बड़ी बाधा है।

संदर्भ सूची

1. डा. दशरथ ओझा-हिन्दी नाटक: उद्भव और विकास
2. डा. सोमनाथ गुप्त - हिन्दी नाटक साहित्य
3. ब्रजरत्न दास - हिन्दी नाटक साहित्य
4. नेमिचन्द्र जैन -रंगदर्शन
5. डा. बच्चन सिंह - ''हिन्दी नाटक''
6. नेमिचन्द्र जैन -''आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच'

○

4

इक्कीसवीं सदी और हिन्दी रंगमंच

डा. उमेश चन्द्र शुक्ल

साहित्य और रंगमंच से हमारा रिश्ता बहुत गहरा है। हिंदी रंगमंच को हम लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना ही कह सकते हैं। इक्कीसवीं सदी में यह प्रश्न उठाना लाजमी है कि आखिर हिन्दी रंगमंच की दशा और दिशा क्या है? अभी तक हिंदी रंगमंच की कोई निश्चित परंपरा बन ही नहीं पाई है। नाट्य परंपरा के नाम पर कई धाराएँ हैं, जिनसे प्रेरणा ग्रहण कर उन्हें आत्मसात करते हुए अनेक विरोधाभासी प्रवृत्तियों में समन्वय करने का प्रयत्न होता रहा है। इन सबके साथ ही हिंदी रंगमंच की परंपरा बनने की प्रक्रिया है। इसके मूल में संस्कृत नाटकों की सुदीर्घ और पुष्ट परंपरा है। भरतमुनि की अलिखित एक लंबी परंपरा का मानकीकरण एवं शास्त्रीकरण हैं। संस्कृत नाटकों की अतिशास्त्रीयता शायद इसे नाटकों से दूर ले गई। दूसरी ओर लोकनाट्य परंपरा ने ही वस्तुतः भारतीय रंगमंच को जीवित रखा। नौटंकी, नाच विदेशिया, आल्हा, भांड आदि अनेक लोक नाट्य शैलियाँ प्रचलित रहीं जिनमें किसी लिखित आलेख के बिना ही कलाकार मनोरंजन हेतु किस्से गढ़ लेते थे। कालांतर में आधुनिक हिंदी रंगमंच में संगीतबद्ध या संगीत पर आधारित लोकनाट्य जैसे मंचन हिंदी रंगमंच की कड़ी बन गए। प्रत्येक कंपनी अपने नाटककार रखकर इस हिसाब से नाटक लिखवाती और खेलती थी कि वे जनता में लोकप्रिय हों और अधिक से अधिक धनोपार्जन कर सकें उनका जोर अतिनाटकीयता और चमत्कार पर था। चमत्कार भी नाटक के कथानक भाषा अथवा रसभावना में नहीं, रंगमंच की ऊपरी चटकमटक और वेशभूषा की नवीनता में था। आख्यान, इतिहास या पुराण से भी तो नाटक नायक-नायिका के प्रेम शेरोशायरी और वेशभूषा और नाचगाने की चाशनी में लपेटकर पेश किये जाते थे। हम कह सकते हैं कि पारसी थियेटर की यह व्यावसायिक परंपरा रंगमंच से ज्यादा फिल्मों के हिस्से आई। इस अन्तः सम्बन्ध के आधार पर हम कह सकते हैं कि हिन्दी रंगमंच मापदंड औपनिवेशक और आयातित है। आधुनिक तकनीकी के विकास तथा प्रकाश और रंग की युगलबंदी ने रंगमंच को ताकत दी है। मंचन के दृष्टिकोण से नाटक में आमूल क्रांति का दौर चल रहा है। टेक्नालॉजी के प्रयोग, कथ्य की प्रसार क्षमता, मंचन की व्यवस्था ने रंगमंच के

हिन्दी और मराठी

संत साहित्य

समाजशास्त्रीय रचनात्मक प्रासंगिकता का अनुशीलन

सं. डॉ० विद्या शिंदे

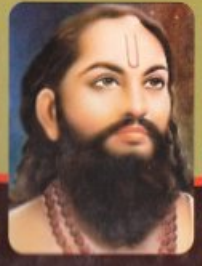

हिन्दी और मराठी संत साहित्य सं. डॉ. विद्या शिंदे

ABS

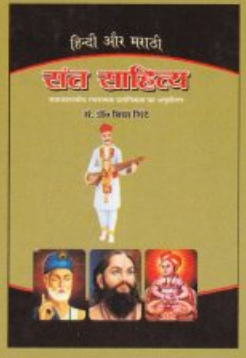

ABS

ए.बी.एस. पब्लिकेशन

आशापुर, सारनाथ, वाराणसी - 221 007

मो० : (+91) 9450540654, 9415447276

E-mail : abspublication@gmail.com

/ AbsPublication

ISBN 978-93-81549-97-1

9 789381 549971

₹ 495/-

प्रकाशक
ए.बी.एस. पब्लिकेशन
आशापुर, सारनाथ
वाराणसी-221007 (उ० प्र०)
मो०: 09450540654, 07376849990

ISBN : 978-93-81549-97-1

© लेखिकाधीन

प्रथम संस्करण : 2016

मूल्य : 495.00 रुपये मात्र

शब्द-संयोजन :
विष्णु ग्राफिक्स
कानपुर

मुद्रक :
साक्षी ऑफसेट
रवीन्द्रनगर, कानपुर

जिल्दसाज :
तवारकअली
कानपुर

Hindi Aur Marathi Sant Sahitya
Edited By : Dr. Vidya S. Shinde
Price : Rs. Four Hundred Ninety Five Only

शिक्षण संस्था के अध्यक्षजी का मनोगत

आज सहजीवन शिक्षण संस्था के महाविद्यालय में संपन्न हुई। "द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी" के संयोगवश सहजीवन शिक्षण संस्था के इतिहास में इतिहास जोड़ने का भाग्य आप सभी मान्यवर तथा अध्यापकों के कारण हमें प्राप्त हो रहा है। इसी कारण हमारे इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा गया इसका मुझे बड़ा आनंद हुआ।

खेड में मैं पहले से ही जिला काँग्रेस पक्ष का अध्यक्ष था। उस काल से मेरे मन में खेद रहता था कि, चिपलून, दापोली, देवरूख, रत्नागिरी सब जगह पर महाविद्यालय आरम्भ हो चुकी थी। लेकिन सिर्फ हमारे खेड़ में कॉलेज नहीं था वैसे देखा जाय तो खेड़ यह रत्नागिरी जिले का प्रवेशद्वार लेकिन यही उच्च शिक्षा का दरवाजा बंद था। वह खोलने का साहस इस संस्था ने किया। वैसे ब्रिटिश काल में इस खेड़ के १५० लोग एक ही दिन में दूसरे महयुद्ध के अवसर पर शहीद हो गये। उस समय ब्रिटिश अधिकारियों को मिलने के लिए जो लोग गये थे उन्हें जो चाहिए वह माँगों ऐसा कहा गया। जिन्होंने त्याग किया था उन्हें माँगने का अधिकार था। लोगों ने शहीदों के स्मरण के रूप में रणस्तंभ माँग लिया। उस समय शिक्षा, आरोग्य सेवा, इलैक्ट्रीसीटी ऐसी कोइ भी सेवा–सुविधा माँगी होती तो मिल जाती। उस समय खेड़ तहसील भारत में ही नहीं तो विश्व में दिखाई देता। लेकिन हमारे लोगों ने रणस्तम्भ याने शूरता का प्रतीक ले लिया। यही खेड की पहचान और संस्कृति है यह मुझे यहाँ गर्व के साथ बतानी है।

इस परशुराम की भूमिस्थल पर संत काव्य की प्रासंगिकता इस विशय पर द्वि–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न होने जा रही है। मुझे अधिक पढ़ने का भाग्य प्राप्त नहीं हुआ। लेकिन हमारे अध्यापकों ने जो पढ़ाया, ज्ञान दिया जिससे मुझे बहुत कुछ सीखने मिला। अनुभव का ज्ञान मुझे आज भी अधिक संपन्न बना देता है। संत वाणी लोक–चेतना का यथार्थ प्रतिबिंब है। इन संतो ने निर्भीक वाणी में समकालीन सामन्त, पंडित तथा धनपंतियों की दमनकारी नीति का विरोध किया। वर्तमान काल में भी इसकी आवश्यकता महसूस की जा रही है। आज मानव त्रस्त है, परिवर टूट रहे है, समाज अव्यवस्थित हो रहा है, नैतिक मूल्य गिरते जा रहे है, धनपति अपनी लीलाएँ चला रहा है। ऐसे अवसर पर संत कवियों ने सत्य, अहिंसा, करूणा, दया, परोपकार और राम–रहिम की एकता का जो संदेश दिया था, उसी का अनुगमन और अनुसरण हमारे देश, समाज और विश्व

अनुक्रमणिका

1. **हिन्दी और मराठी संत साहित्य में विश्वबंधुत्व की भावना** 15
   – डॉ. अर्जुन घरत
2. **संत काव्य में रुढ़ि परंपरा का विरोध** 25
   – प्रा० शरद. बा. शिरोडकर
3. **संत काव्य की भक्तिभावना** 30
   – प्रा. रामचंद्र सा. माने
4. **''दादू दयाल के काव्य में भावपक्ष''** 35
   – डॉ. शाहीन एजाज जमादार
5. **संत साहित्य में गुरु नानक का योगदान** 40
   – प्रा. डॉ. नारायण बागुल
6. **तुकाराम के जाति व्यवस्था संबंधी विचार** 43
   – डॉ. शांतिलाल नाथालाल रावल
7. **संत-साहित्य में प्रतिबिंबित मानव मूल्य** 46
   – प्रा. डॉ. अशोक आनंदराव साळुंखे
8. **भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता** 52
   – डॉ० शंकुतला वसंत चव्हाण
9. **संत काव्य की भक्ति भावना की सामाजिक उपादेयता** 57
   – प्रा. कृष्णात ईश्वरा खांडेकर
10. **बदलते मानव परिवेश में संत साहित्य का मानवमूल्य** 62
    – डॉ. चित्रा मिलिंद गोस्वामी
11. **हिन्दी संतकाव्य के सामाजिक पक्ष की साहित्यिक प्रासंगिकता** 66
    – प्रा. डॉ. शाहू दशरथ मधाळे
12. **संत साहित्य की सामाजिकता** 73
    – डॉ. शक्तिकुमार रवि शंकर चव्हाण
13. **संत कबीर का सामाजिक दृष्टिकोण** 80
    – प्रा. पाण्डेय जे. आर.
14. **संत कवियों का मानवतावादी पक्ष** 88
    – डॉ. जी. बी. सारंग
15. **संत साहित्य में नामदेव और कबीर के काव्य की कर्मचेतना तथा रचनात्मक प्रासंगिकता** 94
    – डॉ. सौ. विद्या शशिशेखर शिंदे
16. **संत मीराबाई के काव्य में चित्रित भक्ति भावना** 101
    – प्रा. शिल्पा शांताराम गोनबरे
17. **कबीर और तुकाराम के काव्य में आध्यात्मिक उन्यन की चेतना और सामासिक संस्कृति** 105
    – डॉ. बालकवि लक्ष्मण सुरंजे
18. **संत काव्य का धार्मिक पक्ष तथा उसकी उपादेयता** 107
    – डॉ. गजेन्द्र सिंह ठाकुर
19. **संत साहित्य में सत्य और सत्ता का संघर्ष** 114
    – डॉ. शीतला प्रसाद दुबे
20. **संत तुकाराम के काव्य में रूढ़ि परम्परा का विरोध** 116
    – प्रा. डॉ. देवीदास बोर्डे

13

संत कबीर का सामाजिक दृष्टिकोण

प्रस्तावना–

डॉ. रामकुमार संत कबीर के बारे में लिखते हैं –

"परम्परा से आने वाली समस्त मान्यताओं को किस प्रकार युग के अनुकूल परिवर्तित किया जा सकता है, किस सीमा तक उनका खण्डन या मण्डन किया जा सकता है, यह अन्तर्दृष्टि संत कबीर में थी। यही कारण है कि शास्त्रीय ज्ञान की उपेक्षा करते हुए उन्होंने जन–मानस को समझा और जाति– भेद एवं कर्मकाण्डों का विरोध करते हुए उन्होंने ऐसे विश्व–धर्म की परिकल्पना की जिसमें, विविध वर्गों के लोग बिना किसी बाधा के समान रूप से एक पंक्ति में बैठ सके।"

आधुनिक अर्थ में कबीर को समाज सुधारक या समाज दृष्टा नहीं कह सकते। उनकी चेतना मूलतः आध्यात्मिक थी। वे समाज–रचना के लिए किसी प्रकार के सुधारवादी आन्दोलन के पुरस्कर्ता न होकर मानव आत्मा की मुक्ति के लिए आध्यात्मिक संघर्ष करने वाले साधक थे। उनका सारा संघर्ष आसक्ति एवं तृष्णा के विरुद्ध था। वे जब संसार में अनादि काल से व्याप्त दुःख के मूल कारण पर विचार करते थे तो उन्हें लगता था कि आसक्तियों पर जय प्राप्त न कर सकने के कारण ही सारा संसार दुःखी है।

उन्होंने कहा है कि क्या गृही, क्या वैरागी सभी दुखी हैं। 'जोगी', 'जंगम', 'तपसी', 'अवधू' सभी दुखी हैं। सभी 'आशा', 'तृष्णा' से ग्रस्त हैं। राजा हो या रंक दुःख की परिधि से बाहर कोई नहीं है। मनुष्यों को कौन कहे, 'ब्रह्मा', 'विष्णु' और 'महेश' भी जिन्होंने सृष्टि के उद्‌भव और विकास का क्रम चलाया हैं दुखी हैं।

"जोगी दुखिया जंगम दुखिया तपसी को दुख दूना हो।
आसा त्रिसनां सबको व्यापै कोई महल न सूना हो।
सांच कहौ तो कोई न झूठ कहा नहि जाई हो।
ब्रह्मा, बिस्नु महेसुर दुखिया जिनु यहू राह चलाई हो।
कहै कबीर सकल जग दुखिया, संत सुखी मन जीती हो।"

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि "स्वामी शंकराचार्य के बाद कोई भी ऐसी विभूति भारत में प्रादुर्भाव नहीं हुई जो इस अंधकार को विदीर्ण करने में समर्थत होती। स्वामी रामानन्द, इसमें कोई संदेह नहीं कि अपने युग के

अद्वितीय देन थे, किन्तु सर्वशास्त्र पारंगत विद्वान होने के कारण तथा साधु के मत में अधिक विश्वास करने के कारण साधारण जनता के सम्पर्क में अधिक न आ सके। इसका फल यह हुआ कि उनका कार्य अधूरा ही रह गया। महात्मा कबीर ने उसी की पूर्ति की थी। कबीर जो संदेश लेकर सामने आये वह रामानन्द की ही देन थी, केवल प्रस्तुत करने का ढंग उनका अपना था। वह भी 'भाव भगति' के सहारे ही उन्होंने व्यक्तिवादिता के समाज को संयमित करने का प्रयत्न किया। इसी के कारण वे विविध अवयवों को एक सूत्र में बाँधने में समर्थ हुए थे।"

कबीर सीमाओं में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने अपनी परिभाषाएँ स्थापित की और 'लीक छोड़ तीनहि चलहि, शायर, सिंह, सपूत' वाली कहावत को चरितार्थ बनाया। उन्होंने सभी पाखण्डों को ललकारा, झुके नहीं, सामने टकरा गये, विशालजयी आत्मा कभी भी शिकस्त नहीं खायी। उन्होंने जमाने को झुकाया, जमाना उनको नहीं झुका सका। जाति–पाँति, छुआछूत आदि अनेक बिन्दुओं पर मौलिक चिन्तन प्रस्तुत किया। वे एक संक्रांति काल से गुजरे और समस्त मानवता का कल्याण किया।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में –

"कबीर ऐसे मिलन–बिन्दु पर खड़े थे जहाँ एक ओर हिन्दुत्व निकलता है, दूसरी ओर मुसलमानत्व, जहाँ से एक ओर ज्ञान निकलता है, तो दूसरी ओर भक्ति धारा प्रवाहित होती है और योग मार्ग प्रशस्त होता है। जहाँ एक ओर निर्गुण भावना निकलती और दूसरी ओर सगुण साधना। उसी प्रशस्त चौराहे पर वे खड़े थे। वे दोनों ओर देख सकते थे और परस्पर विरुद्ध दिशा में गये हुए भागों के दोष गुण उन्हें स्पष्ट दिखाई दे जाते हैं। यह कबीर का भगवद्‌दत्त सौभाग्य था। उन्होंने इसका खूब ही उपयोग किया।"

कबीर के काव्य में विविध सामाजिक दृष्टिकोणों का जो वर्णन हुआ है उसे हम निम्न रूप में देख सकते हैं –

१. जाति–पाँति का खण्डन/खंडन–

रामानुजाचार्य ने सर्वप्रथम शूद्रों को भक्ति का अधिकार प्रदान किया। इसी परम्परा में पुनः लम्बे अवान्तर के बाद क्रांतिकारी सुधारक, जगजयी कबीर की अवतारणा हुई जिन्होंने स्पष्ट रूप से घोषित किया –

"जाति–पाँति पूछे नहि कोई।
हरि को भजै सो हरि को होई।।"

कबीर ने जाति को महत्त्व नहीं दिया वरन् ज्ञान को प्रधानता प्रदान की है। उन्होंने अपने पर कहा कि ब्राह्मण लोग तुम जुलाहे के ज्ञान को पहचानो, उसके जाति पर मत जाओ –

"तू ब्राह्मण मैं कासी का जुलाहा।
बूझइ मोरा गियाना।।"

कबीरदास कहते है कि परमात्मा ने एक ही बूँद से सारी सृष्टि रची है फिर ब्राह्मण और शूद्र का भेद क्यों। उदाहरण –

"एक बूँद वै सृष्टि रची है कौन ब्राह्मण कौर सूदा।।"

कबीर के काफी बाद तुलसी तक समय की हठवादिता के शिकार हुए। तुलसी में भी वह साहस न था जो कबीर के रोम–रोम में भरा था। कबीर के काफी वर्षों बाद आदर्श कवि तुलसी की पंक्ति –

"ढोल गवाँर शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।"

भला कैसे आदर्श कही जा सकती है। निश्चय ही इस सन्दर्भ में कबीर का महत्त्व रामानुज, रामानन्द, बल्लभाचार्य तथा स्वयं गोस्वामी तुलसीदास से अधिक है। बिना अध्ययन करने वाले कबीर की सूझ तथा प्रतिभा का इससे बड़ा सबूत क्या हो सकता है? केवल आत्म–ज्ञान के आधार पर दुनियाँ को इतनी बड़ी रोशनी प्रदान करने वाले कबीर उच्च जाति वालों से स्पष्ट पूछते हैं –

"एक बूँद एकै मल मूतर, एक चाम एक गूदा।
एक जोति मैं सब उत्पनां, कौन ब्राह्मण कौन सूदा।।"

निश्चय ही सब समान हैं। कोई ऊँचा–नीचा नहीं है, सब उसी के अंश हैं। इस तथ्य का स्पष्टीकरण करते हुए कबीरदास जी स्पष्ट भाषा में कहते हैं –

"नहि कोउ ऊँचा नहि कोउ नींचा।
जही का प्यंड ताहि का सींचा।।"

छुआछूत का विरोध भी कवि ने किया है। वे कहते हैं कि पंडित तुम कहते हो कि पवित्र स्थान पर भोजन करना चाहिए, बताओ कौन–सा स्थान पवित्र है। विचार करने पर तो माता–पिता भी जूठे हैं और वृक्षों में लगने वाले सारे फल भी जूठे हैं। अग्नि और जल भी जूठे हैं। गोबर और चौका भी जूठा है और जूठी कलदी से ही अन्न परोसा जाता है। वस्तुतः पवित्र और शुद्ध तो वे लोग हैं जिन्होंने हरि की भक्ति द्वारा अपने मन के विकारों को दूर कर लिया है –

"कहुँ पंडित सूचा कवन ठाउ।
जहाँ बैसि हउ भोजन खाउ।।
माता जूठा पिता भी जूठा जूठे ही फल लागे।
आवहि जूठे जाहि भी जूठै मरहि अभागे।।
अगिनि भी जूठी पानी भी जूठा जूठै वैसि पकाया।
जूठी करछी अन्न परोसा जूठै जूठा खाया।।
गोबरू जूठा चउका जूठा जूठै दीनी कारा।
कहे कबीर तेई जन सूजे जे हरि भक्ति तजहि विकारा।।"

२. बाह्याचारों का खण्डन–

कबीर के साधना के सभी क्षेत्रों में बाह्याचार का विरोध किया है। वे सारे औपचारिक कर्म विधान जिनके मूल में कोई तत्व नहीं है, कबीर के लिए व्यर्थ हैं।

उन्होंने ऐसे योगियों की निन्दा की है जो हाट–बाजार में प्रदर्शन के लिए ध्यान लगाते हैं। प्रदर्शन करने वाले ये योगी कबीर की दृष्टि में कच्चे सिद्ध हैं, जो माया के बंधन में पड़े हैं –

"हाट बजारै लावै तारी, कच्चा सिद्धहि माया पारी।"

कबीर तीर्थों की निरर्थकता सिद्ध करते हैं। तीर्थाटन के पीछे ईश्वर–चिन्तन नहीं मात्र पर्यटन का भाव रहता है। गंगा–स्थान को मुक्ति का साधन बताना नितांत भ्रामक है। इसीलिए वे कहते हैं –

"तीरथ में तो सब पानी है, होवै नय कछु अन्हाय देखा।
प्रतिमा सकल तो जड़ है भाई, बोले नहीं बोलाय देखा।।
कुरान पुरान सबै बात हैं, यह घटका परदा खोल देखा।
अनुभव की बात कबीर कहैं, सह सब झूठी पोल देखा।।"

कबीरदास बड़े स्पष्ट रूप कहते हैं कि योगी योग को नहीं जानता है। वह शरीर से योग करता है, लेकिन मन को बिल्कुल अनियंत्रित दिखता है, जब कोई मन को कब्जे में रखे तो योगी उसे कहा जायेगा।

"तन को जोगी सब करै मन को बिरला कोई।
सब विधि सहजै पाइए जो मन जोगी होई।।"

कबीर ने सामान्यतः वैष्णवों की प्रशंसा की है किन्तु विवेक रहित छापा तिलक लगाने वाले वैष्णवों को भी उन्होंने आडम्बरी ही माना है –

"कबीर वैश्नो भया तो क्या भया बूझ्या नहीं बमेक।
छापा तिलक बनाइ करि, दगध्या लोक अनेक।।"

कबीरदास पूजा अर्चना, तीर्थ–व्रत तथा रोजा नमाज को भी बाह्याचार ही समझते हैं। कबीरदास जी कहते हैं कि भगवान को ढूँढ़ना उसके अस्तित्व के साथ मजाक करना है। मन्दिर–मस्जिद, कांबे–कैलास में ही उनका निवास नहीं है। वह घट–घट तत्वज्ञानी उसे पल भर में पा लेता है, मूढ़ उसे जीवन भर ढूँढ़ता रहता है कबीर सच्ची बात को दो टूक कहते हैं –

"मोको कहाँ ढूँढे बन्दे मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मै मस्जिद ना काबे कैलास में।।
ना तो कौन क्रिया कर्म में नहीं योग वैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौ पल भर की तालाश में।
कहै कबीर सुनो भाई साधो सब खॉसों की खॉस मे।।"

कबीरदास जी जीव हत्या करने वाले शाक्तों के अत्यधिक खिलाफ थे। शाक्त तथा वैष्णवों की स्थिति का मूल्यांकन प्रस्तुत करते हुए कबीरदास जी स्पष्ट कहते हैं कि शाक्त ब्राह्मण भी हेय हैं और चंडाल वैष्णव भी पूज्य हैं। कबीर कहते हैं –

"साखत बाभन ना मिलें, वैष्णव मिले चंडाल।
अंक माल लै भेटिये, मानो मिले गोपाल।।"

३. आर्थिक भेदभाव की निन्दा–

कबीर का ध्यान आर्थिक भेदभाव की ओर न गया हो ऐसी बता नहीं है। उन्होंने कहा है कि जो निर्धन हैं, उनका आदर कोई नहीं करता। जब निर्धन, धनी के यहाँ जाता है तो वह मुँह फेर लेता है किन्तु जब धनी निर्धन के यहाँ जाता है, तो वह उसका आदर करता है। वस्तुतः धनी और निर्धन दोनों भाई–भाई हैं। यह तो प्रभु की कला है जो दोनों दो स्थितियों में पड़ गये हैं। वास्तविक निर्धन तो वह है जिसके हृदय में भगवान का नाम नहीं है –

"निर्धन आदर कोई न देई, लाख जतन करै ओहु चित न धरेई।
जौ निरधन सरधन कै जाई, आगे बैठा पीठ फिराई।
जो साधन निर्धन के जाई, दीया आदर लिया बुलाई।
निर्धन साधना दोनों भाई, प्रभु की कला न मेटी जाई।
कहि कबीर निर्धन है सोइ, जाकै हिरदै नाम न होई।।"

कबीर यह मानते थे कि हिन्दू, मुसलमान, ब्राह्मण–शूद्र, ऊँच–नीच, सुजाति–कुजाति, पवित्र– अपवित्र का भेद अज्ञान जनित एवं मिथ्या है किन्तु धनी और दरिद्र या सम्पन्न और विपन्त के भेद ने भी मानव जाति का अपकार किया है और यह भेद ईश्वर–कृत नहीं है, ये वे नहीं मानते थे।

४. हिन्दू मुसलमान के भेदों का खंडन–

हिन्दू–मुसलमान में भेद–भाव की भावना थी। मुसलमान हिन्दुओं से चिढ़ते थे। हिन्दू भी मुसलमान को नफरत की निगाह से देखता था। डॉ. ईश्वरी प्रसाद ने भी उस समय की जन भावना के विषय में लिखा है –

"मुस्लिम राज्य का कर्तव्य समझा जाता था कि उनके धर्म के सिद्धांतों के प्रतिकूल बातों का विनाश करना और काफिरों को बलपूर्वक मुसलमान बना डालना।"

कबीर ने भेद को नकारा। उन्होंने मुसलमानों का उपहास करते हुए पूछा है –

"जे तू तुरक तरकनी जाया।
ते भीतर खतना क्यूँ न कराया।।"

हिन्दू–मुसलमान को एक–दूसरे पर छीटाकशी करना नितान्त भ्रामक है। कबीरदास इसके सख्त खिलाफ थे। दोनों को दो कहना उस विराट भगवान का मजाक बनाना है। उनको नहीं लगता कि दोनों अलग हैं तभी अपनी बात को इस प्रकार कहते हैं –

"एकै पवन एक ही पानी एक ज्योति संसारा।
एके ही खाक पड़े खड़े सब भाँड़े एक ही सिरजन हारा।।"

मुसलमान अल्लाहताला को बुलाने हेतु मस्जिद पर जाकर बाँग देता है। कबीर कहते हैं कि अल्लाह क्या गूँगा है जो इतने जोर से चिल्ला कर बुलाते हैं। वह क्या इतनी दूरी पर है। दिन को रोजा रहते हैं। भला सायंकाल को गोहत्या करने से खुदा खुश हो सकता है? असंभव।

"दिन भर रोजा रखत हैं, रात हनत हैं गाय।
यह रोजा यह बन्दगी कैसी खुशी खुदाय।।"

हिन्दुओं की आलोचना करते हुए सुधारक कबीर की तीखी किन्तु सच्ची बातों को देखें –

"हिन्दू अपनी करै बढ़ाई जागर छुवन न देई।
वेश्या के पायन पर सोवै यह देखो हिन्दुआई।।"

हिन्दू गो–हत्या को पार करार देता है। लेकिन जिह्वा के स्वाद–हेतु बकरा की हत्या पुण्य मानता है और मुसलमानों के ऊपर ही जीव–हत्या को स्वीकारता है –

"बकरी पाती खात है जाकी काढ़ी खाल।
जो बकरी को खात है ताको कौन हवाल।।"

कबीरदास बार–बार संसार की अकारता को बताकर हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को असत् मार्ग से विरत होने की सलाह देते हैं।

५. कबीर का समाज के प्रति दृष्टिकोण–

मूलतः आध्यात्मिक नैतिक चेतना से प्रेरित होने के कारण ही कबीर के मन में जिस आदर्श मानव की मूर्ति विराजमान थी वह एक सहज, नैतिक, सात्विक ईश्वर भक्त के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। उनकी दृष्टि में भेद–भाव से परे, सत्यनिष्ठ तथा मन, वाणी और कर्म से एक होना चाहिए। मन की विषयोन्मुखता आदर्श मानव के नियंत्रित रखना चाहिए –

"कबीर मारौ मन कूं टूक–टूक है जाइ।
विष की क्यारी बोइ करि, लुणत कहा पछिताइ।।"

आदर्श मानव को अहंकाररहित, तत्वदर्शी, हंस की तरह नीर–क्षीर विवेकी, चंदन की तरह शीतल और दुर्जनों को भी सज्जन बनाने वाला समत्वबुद्धि सम्पन्न होना चाहिए। कबीरदास ने वैष्णवों की बार–बार इसीलिए प्रशंसा की है कि वे दयालु, अहिंसक और हरि का सुमिरन करने वाले थे। कबीर के लिए सदाचार का सर्वाधिक महत्त्व था। उन्होंने शाक्तों की जो निंदा की है, उसका प्रधान कारण यही था कि शाक्त उस समय सर्वाधिक आचारहीन थे।

कबीरदास ने भेद–भाव की समस्त सीमाओं को तोड़कर भक्त के रूप में जिस आदर्श मानव को सामने रखा है, वह मानव–व्यक्तित्व के विकास की सम्पूर्ण संभावना को समाप्त करेक उसे ईश्वरत्व के स्तर तक पहुँचा देने वाला है। नर का नारायणत्व प्राप्त कर लेना ही सच्चा मानव धर्म है। कबीरदास ने कहा है कि हे

प्रभु ! निरंतर तुम्हारा ध्यान करते हुए मैं तुमसे लीन हो गया। अब मेरी अहंता समाप्त हो गई। मैं तुम्हारे नाम पर निछावर करता हूँ जिसे रहने से यह स्थिति प्राप्त हुई है। अब मैं जहाँ देखता हूँ वहाँ आप ही दिखाई पड़ते हैं –

"तू तू करता तूं भया, मुझमें रही न हूँ।
वारी तेरे नाउं परि, जित देखौ तित तूं।।"

कबीरदास का यदि कोई समाज, दर्शन है तो वह मनुष्य के बाह्य जीवन को नैतिक आचरण की मर्यादा को बाँधनेवाला, उसके मन का परिष्कार करने वाला और उसकी आत्मा को विश्वात्मा में लय करके उसे सच्चे धर्म की ऊँचाई तक पहुँचाने वाला है। कबीर का लक्ष्य व्यक्ति ही है।

कबीरदास गरीबों, पददलितों, असहायों तथा छोटी जातियों के मसीहा थे। अनेकों अपमानों को सहन करने के बाद भी वे अपनी सुधारात्मक भावना से नहीं हटे यद्यपि जमाने ने पग–पग पर कहर ढाया। युगजयी, कालजयी कबीर का अभियान साहित्य के युग के किसी कबीर में नहीं मिलता है। वह मात्र कबीर थे। बाबू गुलाबराव के शब्दों में – "कबीर सच्चे सन्त की भाँति सारग्रही थे। उन्होंने सार–ग्रहण ही नहीं किया, वरन् समन्वय भी किया।"

डॉ. रामकुमार वर्मा के शब्दों में – "कबीर की मृत्यु के पश्चात् मुस्लिम शासनकाल में भी प्रायः तीन शताब्दी तक हिन्दू–मुस्लिम धर्म सम्बन्धी अनाचार की कोई घटना नहीं मिलती, प्रत्युत अकबरकालीन मुगल शासन में हिन्दू–मुस्लिम सम्पर्कता सम्बन्धी कितने ही उदाहरण मिलते हैं। इतिहास इसके बहुत से उदाहरण बताते हैं। परन्तु उन सभी कारणों में हिन्दू–मुस्लिम विरोध के मूल स्वरूप सामाजिक अंधविश्वास को निराकार क्षमता का आदेश देने वाले कबीर का प्रादुर्भाव विशेष विचारणीय हैं।"

"कबीर ने धर्म के क्षेत्र में ऐसी क्रांति उपस्थित की जो किसी धर्म के आचार्य के द्वारा जनता के बीच में अभी तक उपस्थित नहीं की जा सकी थी। उन्होंने पहली बार इस धार्मिक क्रांति के सहारे जनता के हृदय में अपने धर्म के लिए ऐसी सच्ची श्रद्धा का बीज वमन किया जो अनेकों युगों तक राजनीति और अन्य धर्मों के प्रचंड आघातो से भी जर्जरित नहीं हो सकता। यह विचारधारा जनता के लिए एक ऐसी शक्ति बनी जिसके द्वारा उनके जीवन का सबसे बड़ा बल सिद्ध हुआ।" हिन्दू और मुसलमानों के अभिचार और कर्मकाण्डों का प्रबल विरोध करते हुए अपने समय के संघर्ष पूर्ण धार्मिक मत मतान्तरों के बीच में उन्होंने ऐसे सहजधर्म का निरूपण किया कि वर्ग–भेद और धर्म–भेद के परे सभी को स्वीकार किया। राम और रहीम के उपासकों ने ब्रह्म की एकता के महत्त्व को स्वीकार किया। अद्वैत दर्शन का मायावाद, वैष्णव दर्शन का प्रपन्तिवाद, बौद्ध दर्शन का शून्यवाद, नाथ दर्शन का समाधिवाद और इस्लाम का एकेश्वरवाद एक दार्शनिक तत्त्व से समन्वित होकर सामान्य व्यक्ति के लिए सहज ही प्राप्त हुआ।

सन्दर्भ :

१. कबीर ग्रन्थावली, संपा. माता प्रसाद गुप्त, प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा
२. कबीर ग्रन्थावली, श्यामसुन्दर दास, नागरी प्रचारिकी सभा, काशी
३. हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, पीताम्बर दत्त बदश्वाल, अवध पब्लिशिंग हाऊस
४. कबीर वाणी पीयूष, डॉ. ठाकुर जयदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन
५. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आ. रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
६. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर वैक्स, नोयडा
७. कबीर मीमांसा, डॉ. रामचन्द्र तिवारी, लोक भारती प्रकाशन

– प्रा. पाण्डेय जे. आर.
द. ग. तटकरे महाविद्यालय
माणगाँव, रायगड
मो. ९४२११६६८००

सल्लागार समिती

अध्यक्ष

प्राचार्य डॉ. शरद एस. फुलारी
द.ग.तटकरे महाविद्यालय, माणगांव

समन्वयक

प्रा. राजेंद्र आचार्य
मराठी विभागप्रमुख द.ग.तटकरे महाविद्यालय, माणगांव

सदस्य

डॉ. शहाजी मुरुड
प्राचार्य, डॉ. बाळासाहेब आंबेडकर महाविद्यालय,महाड - रायगड

प्रा. डॉ. [illegible]
[illegible]

प्रा. डॉ. राजकुमार मस्के
मराठी विभागप्रमुख, महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर - लातूर

प्रा. डॉ. [illegible]
मराठी विभागप्रमुख, [illegible] महाविद्यालय, [illegible] - [illegible]

प्रा. डॉ. शंकर मुंढे
प्राचार्य, डॉ. बाळासाहेब आंबेडकर महाविद्यालय, कोलाड - रायगड

प्रा. डॉ. [illegible]
मराठी विभागप्रमुख, [illegible] महाविद्यालय, [illegible]

प्रा. डॉ. बाळासाहेब साळुंखे
मराठी विभागप्रमुख, द.ग.तटकरे महाविद्यालय, तळा - रायगड

प्रा. डॉ. [illegible]
मराठी विभागप्रमुख, [illegible] महाविद्यालय, [illegible]

प्रा. राजेंद्र सोमोशी
मराठी विभागप्रमुख, सुंदरराव मोरे महाविद्यालय, पंढरपूर - रायगड

प्रा. डॉ. [illegible]
मराठी विभागप्रमुख, [illegible] महाविद्यालय, [illegible]

प्रा. डॉ. जितेंद्र राठोड
मराठी विभागप्रमुख, बाबा जाईक महाविद्यालय, शिरपूर - संगमनेर

प्रा. [illegible]
महात्मा फुले महाविद्यालय, [illegible]

प्रा. ईश्वर दोंदे
देवी कालेज महाविद्यालय, [illegible]

राजर्षी शाहू महाराज गौरव ग्रंथ

राजर्षी शाहू महाराज गौरव ग्रंथ

॥ शील परं भूषणम् ॥

माणगांव शिक्षण प्रसारक मंडळ

द.ग. तटकरे महाविद्यालय

(आर्टस्, सायन्स, कॉमर्स आय.टी. अँण्ड मॅनेजमेंट)

मराठी विभाग आयोजित

संपादकः प्राचार्य.डॉ.शरद एस.फुलारी

सह. संपादकः प्रा. राजेंद्र आचार्य

माणगांव, जिल्हा रायगड

गुणांचा समुच्चय होता. त्यांनी आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक व राजकीय कार्याला वाहून घेतले होते. त्यामुळे त्याच्या राजवटीत कोल्हापूर संस्थानाची सर्वच क्षेत्रात भरभराट झालेली होती, हे सिद्ध केले आहे. त्याच प्रमाणे राजर्षी शाहू महाराजाची ऐतिहासिक पार्श्वभूमी स्पष्ट करून वेदोक्त प्रकरण, आरक्षणाचा जाहीरनामा, शैक्षणिक सुधारणाची पायाभरणी या माध्यमातून मागासवर्गीयांमध्ये शिक्षणाचा प्रसार केले. राजाराम इंडस्ट्रीयल स्कूलची स्थापना त्यांनी केली. शेती व आर्थिक विकास, सिंचन प्रकल्पांना चालना दिली नाटक-तमाशा व चित्रपट यांना चालना दिली. मल्लविद्या, मर्दानीखेळ यांना प्रोत्साहन दिले या त्याच्या सांस्कृतिक क्षेत्रातील रचनात्मक कार्याला त्यांनी उजाळा दिला.

६.राजर्षी शाहू महाराजांचे शेतीसुधारणाविषयीचे धोरण

शेतीव्यापार, व उद्योग विकासात राजर्षी शाहू महाराजांचे योगदान या आपल्या लेखामध्ये डॉ. जयद्रथ जाधव यांनी विसाव्या शतकाच्या प्रारंभी शाहू महाराजांनी कोल्हापूर संस्थानाच्या कार्यातून आधुनिक महाराष्ट्राची पायाभरणी केली. त्यांच्या ठिकाणी दूरदृष्टी होती. प्रत्येक क्षेत्रात त्यांनी रुढे पणाने कार्य केले. त्यांची ही विकासगाथा महाराष्ट्रालाच नव्हे तर संपूर्ण देशाला मार्गदर्शक ठरणारी आहे. ते सतत प्रजेच्या हिताचा विचार करीत असत हे सोदाहरण दाखवून दिले आहे.

हा गौरवग्रंथ वाचकांना निश्चितच आवडेल अशी आशा व्यक्त करतो.

धन्यवाद...

प्रा. राजेंद्र आचार्य
मराठी विभागप्रमुख
द. ग. तटकरे महाविद्यालय
माणगाव – रायगड

D.G. Tatkare Mahavidyalaya
Mangaon, Raigad
राजर्षी शाहू महाराज गौरव ग्रंथ

Content

ISBN:-978-1-312-73129-5

क्र	शिर्षक आणि लेखक	पान नं.
1	राजर्षी शाहु महाराजांचे आर्थिक क्षेत्रातील योगदान डॉ. लोखंडे तानाजी शिवाजी	1
2	राजर्षी शाहु महाराजांचे सामाजिक विचार व कार्य प्रा. गायकवाड राहुल भागवत	3
3	राजर्षी शाहूंचे अस्पृश्यता निवारण विषय कार्य प्रा.के.आर गावडे	7
4	राजर्षी शाहू महाराजांचे अस्पृश्योध्दाराचे कार्य प्रा.डॉ. कदम संतोष तुकाराम	10
5	लोककल्याणकारी राजा छत्रपती शाहू महाराज प्रा.डॉ.दुष्यंत कटारे	13
6	राजर्षी शाहू महाराजांचे शिक्षण व दलितोध्दाराचे कार्य प्रा. डॉ. मधुकर गणेश मोकाशी	15
7	छत्रपती शाहू महाराजांच्या सर्वसमावेशक वसतीगृहे विकास चळवळीचा एक ऐतिहासिक अभ्यास प्रा.भावना श्रीपती पौळ	19
8	राजर्षी शाहू महाराजांचे दलितोध्दाराचे कार्य सौ. पौर्णिमा दिलीप सरदेसाई	23
9	राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक विचार व कार्य प्रा. राजेंद्र आचार्य	28
10	दलितोदधारक राजर्षी शाहू महाराज प्रा. डॉ. मिलिंद साळवे	31
11	राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक विचार व कार्य प्रा. संगिता गंगाराम उतेकर.	37
12	राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक विचार व कार्य प्रभारी प्रा. डॉ. शंकर शिवाजी मुंडे	44
13	आधुनिक समाजरचनेचे महामेरु छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज प्रा. डॉ. श्रीकृष्ण दि. तुपारे.	47
14	शाहू महाराजांचे शिक्षणविषयक धोरण प्रा.डॉ.विनोद दे. राठोड	50
15	सामाजिक क्रांतीचा कृतिशील प्रणेता – राजर्षी शाहू महाराज प्रा.प्रमोद शिवचरण नेऱ्हाम	53

येते . महाराज केवळ बोलघेवडे समाज सुधारक नव्हते तर त्यांनी आपले विचार अमलात आणण्यासाठी आपल्या दरबारी काही जागेवर दलितांच्या नियुक्त्या ही केल्याचे स्पष्ट होते .

महाराजांना माहित होते की दलितांचा उद्धार करायचा असेल तर परंपरेने त्यांच्या वाट्याला आलेली गुलामगीरी नष्ट झाली पाहिजे आणि म्हणूनच महाराजांनी दलित वर्गातील विशिष्ट जातीवर लादलेली हजेरी प्रथा वेठबरळा प्रथा वतनदारी बंद केली आणि सारी वतने दलितांच्या नावे करून त्यांना मालक बनविले . हा निर्णय घेऊन महाराजांनी दलितांना परंपरेच्या जोखडातून मुक्त केले . आणि दलितांनी ही सुतकेचा श्वास घेतला . महाराजांनी केलेल्या दलित उद्धाराच्या कार्याची मीमांसा करताना य . दी . फडके लिहीतात " शतनूशतके ज्यांना अन्याय व विषम समाजव्यवस्थेमुळे अपार दुःख व अपमान सोसावे लागले त्या अस्पृश्य समजल्या जाणाऱ्या तसेच मागास जातीच्या लोकांना मानूस म्हणून स्वाभीमानाने जगता यावे शिकता यावे आणि विकासाच्या वाटा खूल्या व्हाव्यात या साठी शाहू छत्रपतींनी जे महान ऐतिहासिक कार्य केले त्याची नोंद अर्वाचीन काळातील महाराष्ट्राचा एवढेच नव्हे तर भारताचा इतिहास लिहिणाऱ्यांना करावीच लागेल हे निःसंशय .

संदर्भसूची :

१ . राजर्षी शाहू महाराज पृ . ४७
२ . राजर्षी शाहू महाराज स्मारक ग्रंथ पृ . ७२
३ . राजर्षी शाहू महाराज स्मारक ग्रंथ पृ . ७३
४ . शाहूंच्या आठवणी पृ . २२५
५ . राजर्षी शाहू महाराज पृ . ४८
६ . छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज पृ . ५६
७ . प्रेषित राजर्षी शाहू महाराज पृ . ७७
८ . छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज पृ . ५६
९ . छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज पृ . ५७
१० . प्रेषित राजर्षी शाहू महाराज पृ . ७७
११ . राजर्षी शाहू महाराज स्मारक ग्रंथ पृ . ८१
१२ . राजर्षी शाहू महाराज स्मारक ग्रंथ पृ . ८१
१३ . राजर्षी शाहू महाराज स्मारक ग्रंथ पृ . ७६
१४ . राजर्षी शाहू महाराज स्मारक ग्रंथ पृ . ७७
१५ . राजर्षी शाहू महाराज स्मारक ग्रंथ पृ . ७७
१६ . राजर्षी शाहू महाराज स्मारक ग्रंथ पृ . ७८
१७ . राजर्षी शाहू महाराज स्मारक ग्रंथ पृ . ८०
१८ . शाहू छत्रपती आणि लोकमान्य पृ . ३०५

ISBN:-978-1-312-73129-5

राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक विचार व कार्य

प्रा. संगिता गंगाराम उतेकर,
ग्रंथपाल,
द.ग.तटकरे महाविद्यालय,
माणगांव – रायगड

१ . प्रस्तावना :

राजा आणि ऋषी यांचा सुरेख संगम म्हणजे राजर्षी. ज्याने राजा असूनही ऋषीतुल्य जीवन व्यतित केले आणि लोकराजा होण्याचा सन्मान मिळविला असे राजर्षी शाहू महाराज. ब्राम्हणी संस्कृतीच्या वरवंट्याखाली भरडल्या जाणाऱ्या आणि किडया मुंगीसारखे आयुश्य वाट्याला आलेल्या एका मोठया समाजाला स्वांतत्र्य, समता, बंधुता आणि प्रतिश्ठा देण्यासाठी बंड केले. शिक्षणामुळे सत्तेचा समतोल राहू शकतो हे शाहू महाराजांनी ओळखले होते. शिक्षणाच्या चाव्या त्यावेळी ब्राहमण वर्गाकडेच होत्या. त्यामुळे ब्राहमण–ब्राहमणेत्तर दरी वाढत चालली होती. कोल्हापूर संस्थानात देखील गोरे इंग्रज, पारशी आणि ब्राहमण वर्गाचे मोठे प्रस्त होते. बऱ्याच वेळी ते कोल्हापूर गादीला देखील जुमानत नसत. 1894 मध्ये कोल्हापूर राज्यात 71 अधिकाऱ्यापैकी 60 अधिकारी ब्राहमण होते आणि फक्त 11 ब्राहमणेत्तर होते. त्यामुळे ते मनमानी कारभार करीत होते. ग्रामीण भागातील लोकांना ब्राहमणांचा मोठा जाच होता. सामाजिक समतेच्या तत्त्वानुसार शाहू महाराजांनी हुशार आणि होतकरू मराठी, कायस्थ, जैन, लिंगायत इत्यादी पात्रतेनुसार अधिकारांच्या जागा देण्यात आल्या आणि पुढे तर 50 : आरक्षणच मागासवर्गीयांसाठी लागू केली. समाज आतून बाहेरून बदलण्यासाठी बंड करणारा, नवरचना करणारा महाराज म्हणून शाहूंचे नाव अजरामर आहे.

२ . जीवन :

शाहू महाराजांचा जन्म जून 26 इ.स. 1874 रोजी कागल येथील घाटगे घराण्यात झाला. त्यांचे नाव यशवंत त्यांच्या वडिलांचे अप्पासाहेब तर आईचे नाव राधाबाई होते. कोल्हापूर संस्थानाचे राजे चौथे शिवाजी महाराज यांच्या मृत्यूनंतर त्यांच्या पत्नी आनंदीबाई यांनी 17 मार्च 1884 रोजी यशवंतरावांना दत्तक घेतले व शाहू हे नाव ठेवले. एप्रिल 2 इ.स. 1894 रोजी त्यांचा राज्यारोहण समारंभ झाला. राज्याभिशेक झाल्यानंतर इ.स. 1922 सालापर्यंत म्हणजे 28 वर्श ते कोल्हापूर संस्थानाचे राजे होते. मुंबई येथे मे 6 इ.स. 1922 रोजी त्यांचे निधन झाले.

३ . शिक्षणाचे महत्व :

शिक्षण हे एक साधन आहे, साध्य नव्हे, दुखाःच्या दृष्टचक्रातून सुटका करून घेण्याचे शिक्षण एक प्रभावी साधन आहे. शिक्षण म्हणजे केवळ ज्ञान मिळविणे नव्हे. आपल्या जीवनातील सर्व प्रकारच्या गुलामगिरीतून सुटका करून घेणे आणि सर्व लोकांच्या भल्यासाठी उपयोगी पडणारे ज्ञान मिळविणे यातच खऱ्या शिक्षणाचे महत्व सामावलेले आहे. शिक्षणातून शरीर, बुध्दी आणि ह्रदय यांचा समतोल विकास झाला पाहिजे. स्त्री शिक्षणाच्या कार्यातून जण शाहू महाराज स्त्रीयांना पुढील संदेश देऊ इच्छितात.

"शिक पोरी शिक्.....
आता लढायला शिक् .....
भारताच्या पोरी आता लढायला शिक्...

ISBN: 978-81-926634-9-4

Seema
PRAKASHAN

साहित्य और मानवतावाद

साहित्य और मानवतावाद

संपादक

डॉ.अनिल सिंह
रउफ़ इब्राहीम महंमद
सुजाता सुर्यकांत हजारे

ISBN: 978-81-926634-9-4

Sahitya Aur Manavatavad

Book- II (Hindi)

Edited by Dr. Anil Sinha , R. I. Mahammad & S.S. bajare

First Published: 8 April, 2017

© Centre for Humanities & Cultural Studies, Kalyan

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means without written permission of the copyright owner.

Printed & Published by Dr Kalyan Gangarde *for* Seema Prakashan, Parbhani-431401 Mob. + 91 9730721393, +91 9420079975
Email: nmpublication@gmail.com
www.newmanpublication.com

Typesetting and Cover Designing: Seema Zade

Price: Rs. 200/-

Disclaimer: Articles in this book do not reflect the views or policies of the Editors or the Publisher. Respective authors are responsible for the originality of their views / opinions expressed in their articles / papers- **Editors**

भूमिका

संस्कृति और सभ्यता दोनों एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं ,जिसे चाहकर भी पृथक नहीं किया जा सकता । किसी भी देश की सभ्यता उसकी संस्कृति पर अवलंबित होती है। विश्व में सांस्कृतिक या जीवन दर्शन की प्राणदायिनी आन्तरिक उर्जा विश्व पटल पर यदि कहीं देखने को मिल सकती है, तो वह है भारत। भारत की ओर विश्व के लोग आकर्षित हो रहे तो निश्चित ही उसका कोई मूल कारण हैं। वह है भारतीय सभ्यता की अपनी निजी पहचान। 'अनेकता में एकता' का भाव दृढ़तापूर्वक व्याप्त है।

शरीर और आत्मा का जो संबंध है ठीक वही भारत देश और भारतीय संस्कृति का है। भारतीय संस्कृति की मूलभूत एकता की ओर इंगित करते हुए डॉ.नगेन्द्र ने लिखा है"भारतीय साहित्य की धारणा का सीधा सम्बन्ध` भारतीय संस्कृति और भारतीय राष्ट्र की धारणा के साथ जुड़ा हुआ है। जिस प्रकार सहस्त्राब्दियों से धर्म, जाति, भाषा आदि के वैविध्य के रहते हुए भी भारतीय संस्कृति में मूलभूत एकता रही है और भारतीय राष्ट्र आज जीवन्त सत्य के रूप में विद्यमान हैं, इसी प्रकार भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता का निषेध भी नहीं किया जा सकता। तत्व रूप में भारतीय साहित्य एक इकाई है, उसका समेकित अस्तित्व है जो भारतीय जीवन की अनेकता में अन्तर्व्याप्त एकता को अभिव्यक्त करता है।" सम्पूर्ण भारत में वैचारिक एकता आश्चर्य जनक है। संसार की नश्वरता, जीवन की क्षण भंगुरता,प्रवृत्ति मार्ग की निकृष्टता और निवृत्ति मार्ग की श्रेष्ठता जैसे दार्शनिक विचार प्रत्येक भारतीय के मन में दृढ़ मूल है।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर सम्पूर्ण सृष्टि –रचना के केन्द्र में अगर कोई है तो वह मनुष्य ही है। महर्षि व्यास ने भी कहा है–"न हि मानुषात् श्रेष्ठतंर हि किञ्चित्।" अर्थात इस सृष्टि में मनुष्य ही सर्वोच्च सत्य है। साहित्य सच्चा मानवतावादी होता है, जो स्वय से ऊपर उठकर, व्यापक, जीवन को प्रभावित करता रहता है। साहित्यकार और मानवीय चेतना दोनों अलग–अलग न होकर एक दूसरे के पूरक है। इसीलिए आज हर रचनाकार साहित्य में मानव जीवन की आशा–आकांक्षा, जय–पराजय और उसकी सम्पूर्ण गाथा को चित्रित करने में ही अपनी सार्थकता मानता है।

मानवतावाद 'जीवित मानवता से प्रेम' है। मानवतावाद का केन्द्र बिन्दु ही मनुष्य है। यह मनुष्य के अस्तित्व उसकी स्वतंत्रता तथा उसके कल्याण का विभेदन है। यही नहीं मानवतावाद विश्व बन्धुत्व, अंतर्राष्ट्रीय मैत्री और मनुष्य के भ्रातृत्व का समर्थक है। यही कारण है कि विश्व में मानव का स्थान ही सर्वोपरि है। मानवतावाद मानव की सृजनात्मकता में अटूट विश्वास करता है। विश्वव्यापी समाज की धारणा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, तथा बन्धुत्व भाव पर ही निर्भर है।

अनुक्रम

1. संत काव्य की भक्ति भावना / डॉ.एम.एच.सिद्दीकी | 8
2. साहित्य में चित्रित मानवीय बोध / प्रा. सुश्री संज्योति महादेव सानप | 12
3. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में सामाजिक संबंधो का सरोकार / डॉ. सूर्यभान दयाराम उपाध्याय | 15
4. गोविंद मिश्र के 'धीर समीरे उपन्यास में चित्रित मानवीय संवेदना/ प्रा.पाण्डेय जे. आर | 19
5. पाछले बारणे' उपन्यासमें अभिव्यंजित मानवीय संवेदना / डो. विश्वनाथ पटेल | 24
6. सन्त नामदेव की विश्वबंधुत्व भावना / नरेंद्र विजय पाटील | 29
7. हिन्दी कहानी साहित्य में मानवीय संवेदना / विभा लाड | 36
8. भीष्म साहनी की कहानियों में मानवीय संवेदना / चतुरा सि. साकोर्डेकर | 40
9. कबीर काव्य में मानवतावाद / डॉ. गीता यादव | 43
10. इक्कीसवीं सदी के कोंकणी नाटकों में मानवीय संवेदना / डॉ. पूर्णानंद च्यारी | 46
11. हिंदी काव्य में मानवीय संवेदना / जागृति सिंह ठाकुर | 52
12. संत कवि स्वामी परांकुशाचार्य के साहित्य में मानवतावाद / सुबोध कुमार शांडिल्य | 59
13. कथाकार असगर वजाहत के साहित्य में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना / डॉ. लेफ्ट. एस.टी. आवटे | 63
14. हिन्दी साहित्य में मानवीय – संवेदना / प्रा उमा जयवंत प्रियोळकर | 69
15. बलचनमा उपन्यास में चित्रित मानवीय संवेदना / प्रा डॉ रमाकांत आपरे | 72
16. मधु कांकरिया की कहानियों में महानगरीय **जीवन** /प्रा.रीना सिंह | 76
17. साहित्यकार पुंडलिक नायक के " गुणाजी " उपन्यास में चित्रित मानवीय बोध / प्रा. नित्यानंद नायक | 80
18. "समुद्र में खोया हुआ आदमी" में व्यक्त मानवीय संवेदना / जानी क्रिश्ना चिमनभाई | 86
19. दामोदर मोरे के साहित्य में मानवीय चेतना / वाळवंटे राजकुमार अर्जुन | 88
20. डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में चित्रित मानवीय संवेदना / प्रा. डॉ. अविनाश कासांडे | 95

21. कबीर और तुकाराम के साहित्य में चित्रित मानवीय बोध / प्रा. विलास बाळु डोंगरे | 100
22. स्वदेश दीपक के नाटकों में चित्रित मानवी संबंधों का विश्लेषण / गाडीलोहार बन्सीलाल हेमलाल | 105
23. कबीर और विश्वबंधुत्व की भावना / प्रा. मधुकर डोंगरे | 112
24. हिंदी साहित्य में मानवतावादी दर्शन / प्रा.आमलपुरे सुर्यकांत विष्वनाथराव | 116
25. इलाचंद जोशी के उपन्यासो मे मानवीय संवेदना / हेमा तिवारी | 120
26. साहित्य और मानवतावाद /डॉ. अशोक धुलधुले | 123
27. मानवतावाद और साहित्य / प्रा. विजयभाई बी.परमार | 129
28. ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' में दलित चेतना / प्रा. संतोष गायकवाड़ | 132
29. मानवतावाद और साहित्य / डॉ0 प्रतिभा सहाय | 135
30. जाम्भोजी का मानवीय मूल्य, समाज बोध और सबदवाणी / डॉ. मोहसिन ख़ान | 141

पांडे भी पंचायत की असफलता तथा उसके पक्षपात पूर्ण निर्णय के बारे में कहते हैं – "अरे बच्चा किस फेर में हो, मेरा घर फूँक दिया गया। लोगों ने घर फूँकनेवाले को देखा भी। किन्तु जब पंचायत के लिए लोगों को बुलाया तो एक तो बहुत कम लोग आये और जब नीरू ने भरी सभा में कहा कि बैजू ने मेरा घर फूँका है तब किसी की जबान नहीं खुली। यह गाँव अपना – अपना मतलब देखता है।"[5]

वर्तमान राजनीति ने समस्त जीवन–मूल्यों को ताक पर रख दिया है। स्वार्थान्धता, स्वातंत्र्योत्तर राजनीति का एक अंग बन गई है। आज जबकि औद्योगिक विकास की प्रक्रिया चल रही है। शहरी संस्कार गाँवो में प्रविष्ट होने लगे हैं। शहरी भीड़ में रहकर भी अजनबीपन और अकेलेपन का बोध होता है। नैतिकता निरन्तर दम तोड़ रही है। निराशा, कुंठा एवं संत्रास जीवन के अंग बनते जा रहे हैं। उसके बीच सिसक रहा ग्रामीण मानव अपने पुरानेपन के सुखद व्यामोह को विस्मृत करने में जहाँ हिचक रहा है वहीं नवीन वैज्ञानिक नवोत्थान की प्रगतिशील शक्तियों को भी वह अत्यंत प्रत्यक्ष होने के कारण अस्वीकार नहीं कर पाता है। अतैव उदासी, अकुलाहट बेचैनी में फँसा ग्रामीण कराहते हुए महानगरों की ओर पलायन करने को विवश हो रहा है।

संदर्भ –

1) डा. रामदरश मिश्र, 'सुखता हुआ तालाब, पृष्ठ क्र. 116–117.
2) डा. रामदरश मिश्र, 'सुखता हुआ तालाब, पृष्ठ क्र. 116–117.
3) डा. रामदरश मिश्र, बीस बरस, पृष्ठ क्र. 112
4) डा. रामदरश मिश्र, 'सुखता हुआ तालाब, पृष्ठ क्र. 160
5) डा. रामदरश मिश्र, 'पानी के प्राचीर', पृष्ठ क्र. 220.

❑❑❑

4

गोविंद मिश्र के 'धीर समीरे उपन्यास में चित्रित मानवीय संवेदना

प्रा.पाण्डेय जे. आर.
द.ग.तटकरे महाविदयालय,
माणगांव – रायगड

समकालीन उपन्यासकारो में गोविन्द मिश्र का एक बड़ा नाम हैं। वे 1965 से लगातार लिख रहे हैं। अब तक उनके 11 से अधिक उपन्यास 10 से अधिक कहानी संग्रह व साहित्य के अन्य विधाओ यात्रा, निबंध, बाल साहित्य पर खूब लिखे हैं। गोविन्द मिश्रा का रचना–संसार व्यापक और बहुआयामी हैं। उनका कथा–साहित्य मानवीय मूल्यो को वि लेि ात करते हुए परंपरा और प्रगति को एक नया अर्थ देता है। समकालीन कथा–साहित्य में उनकी उपस्थिति एक संपूर्ण साहित्यकार का बोध कराती है, जिसकी वरीयताओ में लेखन सर्वोपरी है, जिसकी चिंताऍं समकालीन समाज से उठकर 'पृथ्वी पर मनुष्य' के रहने के संदर्भ तक जाती है और जिसका लेखन फलक 'वह अपना चेहरा' से भारू होकर अरण्य तंत्र तक आता है। वे पिछले 50 वर्षो से साहित्य पर लिखे जा रहे है। इनके उपन्यासो मे माननीय संवेदना की भरपूर मात्रा में देखा जा सकता है। स्वयं मिश्र जी कहते है कि एक लेखक की पहचान उसकी संवेदना में होती है। वे कहते है कि "जीवन में कभी किसी का बुरा नही किया। यहॉं तक कि वो लोग भी जिन्होनें मेरे परिवार, मेरे माता–पिता के साथ दुर्व्यवहार किया था, जिन्होंने मुझको यातनाये दी उनके प्रति भी मुझे कभी यह नही लगा कि बदले में मुझे उन्हे कोई तकलीफ देनी है। "मै उनको सिर्फ छोड़ देता हूँ – ई वर जाने!"

'धीरसमीरे' उपन्यास गोविन्द मिश्र जी ने 1988 ई. में लिखा था। इसमें ब्रज के चौरासी कोस की पैतालिस दिनो तक चलने वाली यात्रा को लेकर कथावस्तु की रचना की गई है। एक गाव से दूसरी गॉंव को होकर चलने वाली यात्रा है। यात्रा में चलने वाली टोली में कुल पॉंच हजार एक साथ चल रहे है। जीवन यात्रा का छोटा–मोटा प्रतिरूप ही हुई यह यात्रा। यहॉं से उखड़ना वहॉं बसना... वहॉं से फिर उखड़ना। उपन्यास की कथानायिका सुनंदा भी यात्रा में आयी है, एक आस लेकर कि उसका खोया बेटा कि ोर मिल जाये। जब से यात्रा में आयी है, उसकी नजरें हर तरफ टटोलती रहती है। पिछली बार मां के साथ यात्रा में आयी थी तो पति नन्दन मिला था। तब मां के साथ आयी थी, अब अकेली है क्योंकि मॉं नही रही।

सत्यशोधक समाजाच्या तत्त्वांप्रमाणे छत्रपती शाहू महाराज यांनी अस्पृश्यता नष्ट केली. हा त्यांनी स्वराज्याचा खरा पायाच घातला आहे, याची मला पूर्ण जाणीव आहे. प्रत्येकाने हा कित्ता पुढे ठेवून वागण्याचा प्रयत्न करावा.

- म.गांधी

ISBN 978-93-5240-161-1

978-93-5240-161-1

अरुणा प्रकाशन, लातूर.

१०३, ओंकार कॉम्प्लेक्स - अ, खडेकर स्टॉप,
औसा रोड, लातूर - ४१३५१२ मो. ९४२१४८६९३५

लोकराजा राजर्षी शाहू

संपादक

प्रा.डॉ. डी.टी. घटकार प्रा. जे.एल. जायेवार

लोकराजा राजर्षी शाहू

संपादक

डॉ. डी.टी. घटकार प्रा. जे.एल. जायेवार

लोकराजा राजर्षी शाहू

संपादक :- डॉ.डी.टी.घटकार, प्रा.जे.एल.जायेवार

* ISBN 978-93-5240-161-1
* प्रकाशक

  अरुणा प्रकाशन, लातूर

  १०३, ओमकार कॉम्प्लेक्स - अ,

  खर्डेकर स्टॉप, औसा रोड, लातूर

  मो. ९४२१४८६९३५, ९४२१३७१७५७

* प्रथमावृत्ती : २६ जुन २०१७

* © सर्व हक्क संपादकाधीन
* मुखपृष्ठ मांडणी : शिवाजी हांडे
* मुद्रक : आर्टी ऑफसेट, लातूर
* अक्षर जुळवणी : हिंदवी कॉम्प्यूटर, लातूर
* स्वागत मूल्य : ६००.०० रुपये

---

*"लोकराजा राजर्षी शाहू" या पुस्तकातील सर्व मते आणि अभिप्राय संबंधित लेखकाची असून त्या संबंधी संपादक मंडळ, प्रकाशन, मुद्रक व वितरक सहमत असतीलच असे नाही.

सपादकाय मंडळ

उपसंपादक

प्रा.डॉ.एन.पी.कुडकेकर
प्रा.पी.एस.कांबळे
प्रा.एम.एन.कांबळे
प्रा.डॉ.एस.एम.मुंडकर

संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट, जि.लातूर

सहसंपादक

प्रा.एस.डी.मुंढे
प्रा.डॉ.व्ही.आय.पाटील
प्रा.एम.बी.कुलकर्णी

संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट, जि.लातूर

संपादकीय मंडळ

प्राचार्य डॉ.मनोहर तोटरे
शाहीर अण्णाभाऊ साठे महाविद्यालय, मुखेड

डॉ.एम.सी.पवार
डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद

प्रा. रामकिशन मोरे
लक्ष्मीबाई सिताराम हळवे महाविद्यालय, दोडामार्ग जि.सिंधुदुर्ग

प्रा.विनायक राऊत
बाळासाहेब देसाई महाविद्यालय, पाटण जि.सातारा

डॉ.एन.एम.मडावी
गोंडवाना विद्यापीठ गडचिरोली

डॉ.सतीश पाटील
आर्टस अँन्ड कॉमर्स कॉलेज, फोंडाघाट जि. सिंधुदुर्ग

प्रा.प्रदिप पाटील
ए.वाय.व्ये.को.महिला महाविद्यालय, देवपूर, धुळे

डॉ.संभाजी पाटील
एम.ई.टी. अभियांत्रिकी महाविद्यालय, नाशिक

प्रा.मारकवाड एस.एस.
आर्टस, सायन्स अँन्ड कॉमर्स कॉलेज, रामानंद नगर पळुस जि.सांगली

प्रा.मधुकर पवार
गोपाळकृष्ण गोखले महाविद्यालय, कोल्हापूर

प्रा.डॉ.बालाजी गव्हाळे
पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी महाविद्यालय, राणीसावरगाव जि.परभणी

प्रा.सहदेव रोडे
अनंतराव पवार महाविद्यालय, पिरंगुट, पुणे

प्रा.डॉ.शैलेश बनसोडे
वसंतराव नाईक शासकीय कला व समाज विज्ञान संस्था, नागपूर (RBI Chowk)

डॉ.लक्ष्मीकांत जिरेवाड
बलभीम महाविद्यालय, बीड

प्रा.डॉ.अशोक पदमपल्ले
छत्रपती शिवाजी महाविद्यालय, उमरगा

प्रा.प्रभाकर काशिनाथ गायकवाड
शंकरराव जावळे पाटील महाविद्यालय, लोहारा जि.उस्मानाबाद

प्रा.सौ.क्रांती कराडे
संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट जि.लातूर

प्रा.एन.पी.मुसळे
संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट जि.लातूर

प्रा.जे.पी.शेळके
संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट जि.लातूर

प्रा.सौ.ए.बी.सोमवंशी
संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट जि.लातूर

प्रा.उद्धव कांबळे
ईस्माईल युसूफ महाविद्यालय, मुंबई

प्रा.विजय कुमठेकर
मत्सोदरी महाविद्यालय, जालना

प्रा.आनंद दांडगे
पी.डी.कारखनीस महाविद्यालय, अंबरनाथ ठाणे

प्रा.कोटरंगे डी.एन.
शंकरराव जावळे पाटील महाविद्यालय, लोहारा, जि.उस्मानाबाद

प्रा.संगीता उटेकर
डी.जी.तटकरे महाविद्यालय, माणगाव जि.रायगड

प्रा.डॉ.डी.एस.टीमकीकर
संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट जि.लातूर

प्रा.एन.के.राठोड
संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट जि.लातूर

प्रा.व्ही.टी.कल्लूरकर
संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट जि.लातूर

प्रा.चिकटे व्यंकट दगडू
लोहारा कनिष्ठ महाविद्यालय, लोहारा जि.उस्मानाबाद

प्रा.रामचंद्र ना.पस्तापूरे
संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट जि.लातूर

महाराष्ट्र विधान परिषद

आ. विक्रम वसंतराव काळे
(औरंगाबाद विभाग शिक्षक मतदार संघ)
सभापती राज्य समिती सदस्य
प्रोटाम्बर, महाराष्ट्र राज्य राष्ट्रवादी शिक्षक संघ

शुभेच्छा संदेश

लोकराजा राजर्षी शाहू हा ग्रंथ राजर्षी शाहू महाराजांच्या बहूआयामी व्यक्तीमत्वावर प्रकाश टाकण्याच्या उद्देशाने प्रकाशित करीत असल्या बद्दल प्रथमत: संपादकांचे मन:पूर्वक अभिनंदन.

राजर्षी शाहू महाराज यांच्या व्यक्तिमत्वातील समाजसुधारक, राजकीय धोरण, शिक्षण, पर्यावरण, स्त्री शिक्षण, आर्थिक विचार, आरक्षण धोरण, धर्मनिरपेक्षता, शेतकरी धोरण, उद्योग व सहकार धोरण, परिवर्तनवादी विचार व कार्य अशा विविध पैलूंवर प्रकाश टाकणारा हा ग्रंथ सर्वांनाच अभ्यासकास व राजर्षी शाहू महाराजां बद्दल अधिकाधिक माहिती संकलकास उपयुक्त ठरणारा आहे.

लोकराजा राजर्षी शाहू या ग्रंथाच्या पूर्णत्वासाठी **प्रा. डॉ. डी. टी. घटकार, प्रा. जगदीश जायेवार आणि त्यांच्या संपादक मंडळानी** घेतलेल्या परिश्रमा बद्दल मी सर्वांचे अभिनंदन करतो.

लोकराजा राजर्षी शाहू ग्रंथास माझ्या व मराठवाड्यातील तमाम शिक्षक बंधवांच्या वतीने तसेच महाराष्ट्र राज्य राष्ट्रवादी शिक्षक संघाच्या वतीने मन:पूर्वक शुभेच्छा....!

धन्यवाद.

(आ. विक्रम वसंतराव काळे)

शनिवार, २५ नोव्हेंबर २०१७

निवास: 'वसंत विहार', महाराष्ट्र हाऊसिंग सोसायटी, बार्शी रोड, लातूर ४१३ ५३१. फोन: ०२३८२-२२०३७३, मो.: ०९४२२०७२९१०
कार्यालय: 'शिक्षक भवन', बार्शी रोड, लातूर. टेलीफॅक्स: (०२३८२)२२०३९३, औरंगाबाद: टेलीफॅक्स: २३८००३९
Email: vvkmlc@rediffmail.com

२९. राजर्षी शाहू महाराजांचे लोक कल्याणकारी कार्य २००
प्रा. रमेश आसाराम वाघ

३०. सामाजिक न्यायाचे कालातीत नेतृत्व : राजर्षी शाहू महाराज २०७
डॉ. एन. पी. कुडकेकर

३१. राजर्षी शाहू महाराजांचे लोक कल्याणकारी कार्य २१२
प्रा. ससाणे सतीश गंगाराम

३२. राजर्षी शाहु महाराजांचे लोककल्याणकारी कार्य २१८
प्रा.राणी जाधव-गायकवाड, प्रा.राणी जाधव

३३. राजर्षी शाहु महाराज : लोक कल्याणकारी राजा २२६
सहा. प्रा. संगिता गंगाराम उतेकर

३४. राजर्षी शाहू महाराज : बहुजन समाज उद्धारक २३३
प्रा.डॉ.सोमवंशी मुक्ता (गंगणे)

३५. राजर्षी शाहू : एक भारतीय समाजशास्त्रज्ञ २३८
सहा.प्रा.सौ. सोमवंशी अल्का बाबाराव

३६. राजर्षी शाहू महाराज यांची ब्राम्हणेत्तर चळवळीतील भूमिका २४७
प्रा. डॉ. बाबासाहेब केशवराव शेप, मुंडे दत्तात्रय रामकिशनराव

३७. राजर्षी शाहू महाराज आणि अस्पृश्यता निर्मूलन २५८
स.प्रा.हंगरगे यशवंत रामराव

३८. राजर्षी शाहू महाराजांचे अस्पृश्य उध्दाराचे कार्य २६३
प्रा.डॉ.तानाजी लोखंडे

३९. राजर्षी शाहू महाराज आणि धर्मनिरपेक्षता २६८
प्रा.कुडमते विलास देवराव

४०. राजर्षी शाहू महाराज व बहुजन समाज २७३
सहा. प्रा. डॉ. शिंदे अनंत नामदेवराव

४१. छत्रपती राजर्षी शाहु महाराजांचे परिवर्तनवादी विचार व कार्य २७७
प्रा. कोटरंगे दत्ता नामदेव

४२. राजर्षी शाहू महाराज आणि अस्पृश्यता निर्मुलन २८५
डॉ. गाजरे विलास अण्णाराव

४३. राजर्षि शाहू महाराजांचे समाजोन्नत्तीचे तत्त्वज्ञान - एक दृष्टिकोन २९२
प्रा. नरवाडे बालाजी मारोतराव

ISBN 978-93-5240-161-1

४४. राजर्षी शाहू महाराज आणि लोकमान्य टिळक २९८
प्रा.जायेवार जगदीश

४५. लोकराजा राजर्षी शाहू महाराज ३०५
प्रा. गादेकर पी.सी.

४६. लोकराजा छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज ३११
प्रा. राजेश ब. गोरे

४७. राजर्षी शाहु महाराजांचे व्यक्तिमत्व ३१६
प्रा. गजानन ज्ञा. मुनेश्वर

४८. लोकराजा राजर्षी शाहू महाराज ३२६
प्रा.श्याम समर्थ डावळे

४९. राजर्षी शाहु महाराज - महाराष्ट्राचे नररत्न ३३०
प्रा. रंजीत गुणाजी राठोड

५०. शेती व शेतकऱ्यांचे हित जपणारा जाणता राजा - राजर्षी शाहू ३३७
श्री. रमेश चिल्ले

५१. राजर्षी शाहू महाराजांचे कृषी व शेतकरी धोरण ३४४
प्रा.डॉ. संतोष अण्णा तागड

५२. राजर्षी शाहू महाराजांची जलनीती ३५१
संगिता राजापूरकर चौगुले

५३. शेतीतून आर्थिक विकास साधणारा महाराजा छत्रपती शाहू ३५६
प्रा.डॉ.आर.एस. धनुश्वर, केरबा कांबळे

५४. छत्रपती शाहू महाराजांचे आर्थिक धोरण ३६०
प्रा.सूर्यवंशी निळकंठ रामचंद्र

५५. राजर्षी शाहू महाराजांचे आर्थिक विचार व कार्य ३६४
श्री.प्रा.नेलवाडे महेश शिवाजीराव, प्रा.डॉ.एल.एच.पाटील

५६. राजर्षी शाहू महाराज आणि शाश्वत कृषी विकास ३७०
सहा.प्रा.मुसळे एन.पी.

५७. दलित एवं स्त्री उध्दारक राजर्षी शाहु महाराज ३७३
डॉ. वंदना एच. जामकर

५८. "लोककल्याणाला समर्पित समाजक्रांतीकारक महाराष्ट्रीय राजा" "छत्रपती शाहू महाराज" ३७९
प्रा.सारिका व्ही. पाटील

५९. समतेचे पुरस्कर्ते : राजर्षी शाहू महाराज ३८४
प्रा.माधव नरहरी कांबळे

ISBN 978-93-5240-161-1

३३.

राजर्षी शाहु महाराज : लोक कल्याणकारी राजा

सहा. प्रा. संगिता गंगाराम उतेकर
ग्रंथपाल
द.ग.तटकरे महाविद्यालय माणगांव
माणगांव – रायगड ९५५२८०३२४७
sangitagutekar@gmail.com

प्रस्तावना :

शाहु महाराजांनी आपल्या २८ वर्षाच्या कारकीर्दीत अनेक बहुमोलाचे कार्य केली. त्यांनी सत्ता आणि आधिकारांचा उपयोग संस्थानातील सामान्य जनतेसाठीच केला. जाती संस्थेव्द्रारे निर्माण झालेली सामाजिक विषमता दूर करून समाजातील दुर्बल घटकांना न्याय मिळवून देण्याच्या हेतूने त्यांनी बहुजन समाजाला आधार दिला. जाती व्यवस्थेत बदल घडवून आणण्यासाठी प्रयत्न केले. त्याला विरोध झाला. तेही निर्भयपणे त्यांनी स्वीकारले. शाहू म्हणतात आमचे प्रजाजन सदा सुखी व संतुष्ट असावेत. त्यांच्या हिताची एकासारखी आभिवृध्दी होत जावी व आमच्या संस्थानाचा सर्व बाजूनी अभ्युदय व्हावा. अशी आमची उत्कट इच्छा आहे. व यासाठी सर्वांच्या उज्वल राजनिष्ठेची व सहकार्याची आम्हाला आवश्यकता आहे या वरून महाराजांचे बहुजनप्रती प्रेम आपुलकी याची जाणीव होते. राजर्षी शाहु हे प्रजावत्सल दलितबंधू समतेचे पूरस्कर्ते आणि निधडया छातीने कर्ते समाजसूधारक होते. शाहुनी आपल्या आयुष्यात जातीभेद निर्मूलन, अस्पृशता निवारण, स्त्रियांचा उध्दार, बहुजनांचा शैक्षणिक विकास, औदयोगिक प्रगती, शेतीचा विकास, धरणे, रस्ते, कलेवर प्रेम, मल्लविद्या, मर्दानी खेळ रोजगार, सार्वजनीक कामे प्रशासन विषयक सुधारणा या क्षेत्रात मोलाची कामगीरी बजावली त्यामुळेच शाहु हे लोकाचे राजे झाले.

आरक्षणाचे प्रणेते :

मागासलेल्या वर्गाना प्रगतीच्या प्रवाहात आणायचे असेल तर त्याच्यासाठी राखीव जागांची तरतूद केली पाहीले अशी कल्पना महात्मा ज्योतीबा फुले यांनी मांडली.

ISBN 978-93-5240-161-1

राजर्षी शाहूंनी आपल्या आधिकारांचा वापर करून ही कल्पना प्रत्यक्षात उतरवली १९०२ मध्ये शाहू महाराज युरोपच्या दौऱ्यावर गेले तेव्हा तेथिल परिस्थिती पाहून ते भारावून गेले. किंग एडवर्ड दूसरा याच्या राज्याभिषेक समारंभाला इंग्लड येथे उपस्थित होते. तेथे त्यांनी कोल्हापूर संस्थानासाठी आरक्षणचा जाहिरनामा पाठविला. या जाहिरनाम्यामध्ये ५० जागा मागासवर्गीयांना राखून ठेवण्यात आल्या होत्या तसेच मागासवर्गीय कोणाला मानवयाचे हे देखील निर्देश सदर जाहिरनाम्यात देण्यात आले होते. ब्राम्हण, प्रभू, शेणावी आणि पारशी या जाती व्यतिरीक्त उर्वरित समाज मागासलेल्या वर्गात समाविष्ट केला होता. संपूर्ण भारत वर्षात त्यावेळी फक्त कोल्हापुर स्टेटचा राजा होता की त्यांनी सर्वप्रथम आपल्या राज्यात ५० आरक्षण लागू केले. मागासांना राजसत्तेतील वाटा मिळालाच पाहिजे अशी महाराजांची भूमिका होती. वंचितांच्या विकासाचे व्रत घेतलेल्या शाहूंनी कशाचीही पर्वा न करता आपले धोरण चालु ठेवले.

राजर्षी शाहु आणि स्त्रीयांची स्थिती :

शाहु महाराजांनी स्त्री शिक्षणास उत्तेजन देण्यासाठी एक विशेष अधिकारांची जगा निर्माण केली. कु.एच. लिटल यांची त्या जागी नेमणूक केली. त्याच्यानंतर राधाबाई केळकर यांची नेमणूक केली. त्यांनी १८९५ ते १९२२ पर्यंत काम केले. विधवा स्त्रियांच्या जीवनाविषयी विचार करताना राजर्षींचे असे ठाम मते होते की, जर विधवा स्त्री रूढी, परंपराच्या पंजात सापडली तर तीचे जीवन नरकासमान हाईल ती मरेपर्यंत यातना सोसत राहील. तेव्हा तिला मनासारखे जगता आले पाहिजे आणि त्याचबरोबर तिला स्वत:चे सरंक्षण करण्याचे ज्ञान प्राप्त झाले पाहिजे आणि ते साध्य होण्यासाठी शिक्षण हाच एकमेव रामबाण उपाय आहे. राजर्षींच्या धाकटया सूनबाई विधवा होत्या त्यांच्या विषयीही राजर्षीना असेच वाटेत्र. शिक्षणाचे संस्कार घडल्याशिवाय धाकटया सुनेला चांगले –वाईट योग्य – अयोग्य हे समजण्याची शक्ती साध्य होणार नाही. ज्ञानाच्या सहाय्याने विचारांची कक्ष सहाजिकच कर्तव्याचा वेगवेगळया क्षेत्रात तिला संचार करता येऊन तिचे भकास, उदास जीवन काही अंशाने का होईना सुधारेल म्हणून शिक्षणातुनच स्त्री जीवन सुखी समृध्द करण्याचा निर्णन शाहुंनी घेतला.

"वेळ कधी कशी येईल
सुर्य याचक बनून येईल
आणि एक छोट प्रमाणपत्र
काजव्याजवळ मागून घेईल"

काजव्याची भूमिका निभण्यासाठी शिक्षण उपयोगी आहे असे विचार राजर्षीच्या स्त्री

ISBN 978-93-5240-161-1

डॉ. सर्जेराव व्ही. ताठे

दिवसेंदिवस जगासमोर गोड्या पाण्याची भीषण समस्या वाढतच आहे. भारत व भारतातीलमहाराष्ट्र राज्य याला अपवाद नाही. निर्माण होणाऱ्या पाणी समस्येला पावसाच्या प्रमाणाबरोबरच पाण्याच्या नियोजनाचा अभावही तेवढाच कारणीभूत आहे. भारतामध्ये काही भागात खूप पाऊस पडतो, तर काही भागात खूप कमी पाऊस पडतो. हीच परिस्थिती महाराष्ट्रामधे सुद्धा असून, महाराष्ट्रातीलइतर विभागाच्या तुलनेत मराठवाडा विभागात सरासरी सर्वात कमी (८२६ मी.मी.) पाऊस पडतो. पावसाचे प्रमाण कमी व नियोजनाचा अभाव यामुळे या विभागात भीषण पाणीटंचाईचे संकट निर्माण झालेले आहे. मराठवाड्यातीललातूर शहराला मिरज या ठिकाणाहून रेल्वे बोगीद्वारे पाणीपुरवठा केला गेला. या ठिकाणी पाणी वापर काटकसर सुरक्षेसाठी १४४ कलमाचा वापर लागला. यावरून २०१६ साली तेथीलपाण्याची भीषणता दिसून येते. या उलट इस्त्राईलया देशात मराठवाड्यापेक्षा कमी (५०० ते ६०० मि.मी.) पाऊस पडूनही पाण्याच्या नियोजनामुळे येथे जगात आदर्श शेती केली जाऊन तेथे पाणीटंचाईचे संकट दिसून येत नाही. जलसमस्येमे देशाचे आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक व विकासाचे गणित बदलत आहे. पाणी वितरणातीलअसमानता, पाणी वाटपाच्या चुका, पाण्याचा अपव्यय, अतिरेकी जलसिंचन, पुरातन जलसिंचन पद्धती, भूमिगत पाण्याचा अमर्याद वापर, अमर्याद वाढू उपसा, अतीपाण जलसंचय, मानवाचे बेजबाबदार वर्तणूक, जलजागृतीचा अभाव आदीमुळे जलसंकट निर्माण झाले. याजलसंकटातून बाहेर पडावयाचे असेलतर व्यक्तिगत पातळीपासून ते देशपातळीवर जलजागृती, जलनियोजन, जलव्यवस्थापन होणे गरजेचे आहे.

पाण्याची सततची वाढणारी मागणी लक्षात घेऊन पावसाच्या पाण्याचा थेंब न थेंब साठवून त्याचा योग्य वापर करणे आवश्यक आहे. त्यासाठी रेन वॉटर हार्वेस्टिंगसारख्या उपायांचा वापर करणे आवश्यक आहे. रेन वॉटर हार्वेस्टिंग म्हणजे 'पावसाचे पाणी जमा करणे व त्याचा साठा करणे तसेच त्याचे बाष्पीभवन होऊ नये किंवा गळती होऊ नये म्हणून काळजे घेणे' महाराष्ट्रामध्ये विशेषतः मराठवाड्यासारख्या पर्जन्य छायेच्या प्रदेशामध्ये रेन वॉटर हार्वेस्टिंगची अत्यंत आवश्यकता आहे. प्रस्तुत पुस्तकामध्ये पाण्याच्या संवर्धनासाठी अनेक तज्ज्ञांनी आपापली मते मांडलेली आहेत.

डॉ. एस. बी. जाधव
भूगोल विभागप्रमुख व संशोधक मार्गदर्शक,
अंकुशराव टोपे महाविद्यालय, जालना.

चिन्मय
प्रकाशन, औरंगाबाद
९८२२८७५२१९

RAIN WATER HARVESTING ■ संपादक: डॉ. सर्जेराव व्ही. ताठे ■ चिन्मय प्रकाशन

RAIN WATER HARVESTING

पावसाच्या पाण्याचे संधारण

संपादक: डॉ. सर्जेराव व्ही. ताठे

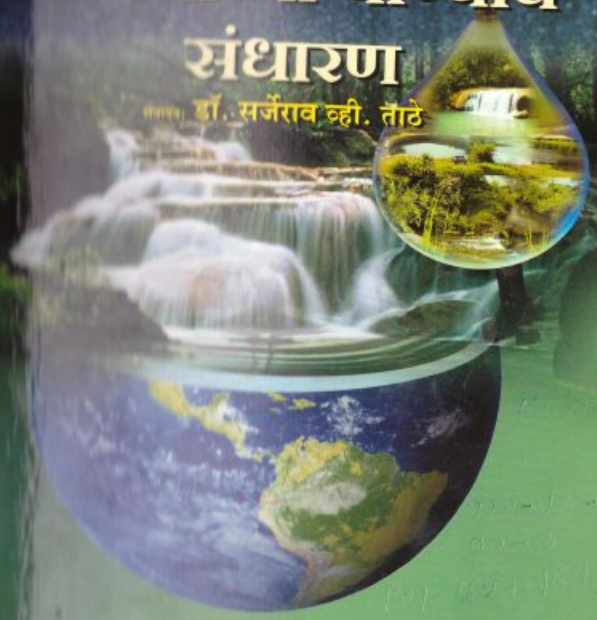

RAIN WATER HARVESTING

पावसाच्या पाण्याचे संधारण

: संपादक :

डॉ. एस. व्ही. ताठे

प्रकाशक
चिन्मय प्रकाशन,
सवणेकर बिल्डिंग, जिजामाता कॉलनी,
पैठणगेट, औरंगाबाद. मो. ९८२२८७५२१९
Email : chinmayprakashan@gmail.com

अक्षरजुळवणी
श्री. ज्ञानेश्वर के. सुस्ते
वेदिका टाईपसेटर्स,
औरंगाबाद

© सर्वाधिकार लेखक

२२ सप्टेंबर २०१६

मुद्रक
प्रिंटो ग्राफिक्स
औरंगाबाद.

मुखपृष्ठ : अपूर्वा ग्राफिक्स

किंमत : ४००/-

ISBN : 978-93-81948-90-3

Massage

I give me immense pleasure that Department of Geography of our Sant Ramdas Arts, Commerce and Science college, Ghansawangi is organizing Two Day National Level Conference on Rainwater Harvesting: A life-line for human well being sponsored by UGC on 22 and 23 September 2016. I am sure that the participants will best utilize this opportunity and enrich their research studies.

I also like to welcome all the research scholars, academicians and students from different parts of Maharashtra and India. I would like to congratulate to the organizing committee and hope that the conference will have a great success.

At present the world and India in particular reeling under natural disasters like draught and floods while one part of our country is facing water shortage. Even trains are pressed into service to provide drinking water. Heavy industrialization, mindless deforestation are one of the causes for these conditions. The ideal forest cover should be 33 present of total land but districts like jalna has only one present forest. So there is tremendous defiat in rainfall. So the need of the hour is water harvesting. We have to utilize every drop of water and must stop wastage and overutilization of water. Rainwater harvesting is the only option to the scarcity prone areas.

I extend a warm welcome to all the participants in the conference.

Hon. Shri Shivajirao Chothe
President
Swami Ramanand Shikshan Prasarak Mandal Shahagad Dist Jalna.

अनुक्रमणिका

1. Rainwater harvesting – "A Effective Tool for Groundwater Management in Maharashtra State"
Dr.Sachin H.More, Dr.PramodB.Pathrikar 11

2. RAINWATER HARVESTING TECHNIQUES
Mr.Sunil Deore, Dr, Bhaskar Shinde 17

3. RAINWATER HARVESTING NEED FOR FUTURE WATER CONSERVATION
Mr. Sunil Ashok Deore, Dr. S. V. Tathe 27

4. Geographical Case Study of Female literacy in Aurangabad District
Dr. Madan Suryawanshi, Miss Rupali Kondekar 30

5. Rain water harvesting in Omerga & Lohara Tahsil for the Scheme of "JALYUKT SHIVAR" Abhiyan
Dr. BALIRAM.P. Shivanand Tanajirao Jadhav 34

6. Jalyukt Shivar for sustainable development in rural area of Solapur district in Maharashtra in 2016
Ramkari J. Bagade 38

7. "The need of rain water harvesting for future water conservation"
Dr.Amar A. Pawar 42

8. A Study of River Pattern in Beed District : A Geographical View
Dr.Udhav E. Chavan, Dr. P.H. Mhaske 45

9. Role of rain water harvesting in human life
Ghule Namdeo Subhash, ...51

10. ROLE OF WIND ENERGY IN WATER HARVESTING
SHOUKAT FAKIR, DR. BHALSHING R.R 54

11. NEED OF RAINWATER HARVESTING
Sawate S.R., Yede G.N., Gangarde R.S 56

12. Rain water harvesting and Natural Resources Management : The Case of Babhulgaon Village
Dr.Sarjerao Tathe, Dr. Sunil Khandebharad 59

13. CRITICAL STUDY OF GROUND WATER IN OSMANABAD DISTRICT
R.G.Koli, K.L.Kadam, P.H.Mhaske 63

14. "Trend of Development of Towns in Ahmednagar District with Help of Remote sensing and GIS : A case study of Shrigonda Town"
Dr. D. G. Mane, Dr.N.T.Deshmukh 69

15. Sustainable water management and rain water harvesting: A Case Study of Bajarvahegaon Village
Dr. Sunil Khandebharad.....74

16. Status of Irrigation in Yavatmal District
Dr. Kadam N.B.....78

17. Water Resource and Agriculture Development : In Kaij Tehsil, Beed
Mr. Khadke V. V. 83

18. SECTORAL CHANGES IN GROSS YILD OF MAHARASHTRA STATE – A GEOGRAPHICAL ANALYSIS
Dr. A.T. Doke 87

19. Spatial Analysis of General Landuse Pattern in Latur District
Dr. Sanjiv H. Kolpe 92

20. IMPACT OF LITERACY ON SEX RATIO IN JALNA DISTRICT - A GEOGRAPHICAL ANALYSIS
Shaikh Sameena Firdos Israil
Dr. D.S. Gajhans 93

21. "TOWADS UNDERSTANDING OF RESEARCH METHODS IN GEOGRAPHY" PROF. KENDLE VIJAY NARAYAN
DR. Khade Sominath Saranghar 97

22. CHALLENGES AND OPPORTUNITIES OF THE AGRICULTURAL SECTOR IN INDIA ECONOMY
DR. Khade Sominath Saranghar 104

23. The Problem of Water Pollution : Types,Causes, And Remedial Measures
Mr. Laggad P. P. 108

24. 'WATER MANAGEMENT AND GOVERNMENT POLICY'
DR. Anil. A.chudhari. 112

25. Rural Development in India : Problems and Prospect
Dr. D. H. Chaudhari.....116

26. "Importance Recharging of Underground Storage for Well irrigation in Beed district"
USARE B.R., DR. GAJHANS D.S. 119

27. Geographical Analysis of Roof Rainwater Harvesting
Mr. Parmeshwar V. Poul 123

28. "RAIN WATER HARVESTING FOR FUTURE WATER CONSERVATION : AN ANALYSIS"
Rathi Gopinathu Nair 128

29. Climate Change : Impact and Water Disputes
Dr. Raut Radheshyam , Ashok S. Jadhav 131

30. "ROLE OF RAIN WATER HARVESTING IN RURAL FOOD SECURITY : AN ECONOMIC ANALYSIS"
Resear Guide 136

31. Rainwater Harvesting : Tools and Methods
Dr. Vijay Rajale, Dr.Tukaram Gajar.....140

32. Sustainable water management and rain water harvesting.
Mr.Pradip Bhaurao Adhao.....142

33. SOURCES OF IRRIGATION IN SOLAPUR DISTRICT OF MAHARASHTRA STATE
Dr. P. R. Baravkar.....147

34. Artificial Rainfall (Cloud seeding): The better way to avoid water scarcity and drought situation in Marathwada region."
Dr. Gajhans D.S., Ausarmal Deepali, Patekar G . U. 152

35. A Geographical study of Size and Spacing of the Rural Settlement in Buldhana District (M.S.)
J. C. Wasnik, Dr. Vijay B. Kharate 159

36. "Importance of Rainwater Harvesting In Droughted Region"
Pr Dr. Sandeep R. Pathrikar, ...163

37. METHODS OF WATER CONSERVATION FOR RURAL DEVELOPMENT IN MARATHAWADA
Dr. Phoke Dilip Uttamrao, Dr.Khade Sominath Sarangdhar , Baban Singare. 165

38. Rain Water Harvesting Management: A Short Review on the Previous Studies
Pravin Vilasrao Thakare 170

39. "AGRICULTURAL LAND USE PATTERN IN WASHIM DISTRICT"
Mr. Namdev S.Gound , Mr.B.T.Patil 174

40. Modern Technology and Water Harvesting
Dr. Raju Lahanu Rupwate 179

41. ROOFTOP RAINWATER HARVESTING (RRWH) AT TACSC CAMPUS, SENGAON, DISTRICT HINGOLI - A CASE STUDY
Dr. U. L. Sahu, Dr. K.G. Bhalerao, Dr. B.B. Ghute, Mr. S.G. Talnikar 184

42. WATERSHED MANAGEMENT PROGRAMME & REGIONAL DEVELOPMENT IN INDIA
Dr. D. G. Mane , Prof. P. N. Dhage. 190

43. NEED OF RAINWATER HARVESTING IN URBAN AREAS
Pramod Jaybhaye 194

44. Rain Water Harvesting : Solution to Conserve Water
Mahesh B. Lavate 197

ISBN : 978-93-81948-90-3

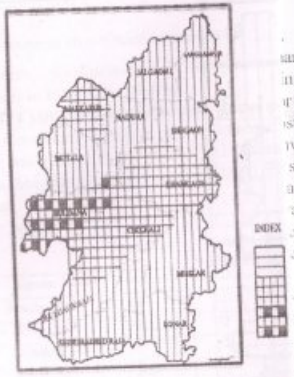

arvesting in marathwada.
nfall but also natural leakage 90% of rainwater is
r agriculture or domestic use water harvesting is a
si water. The importance of rainwater harvesting
rwada where the rainfall is very less so to avoid
should fallow the natural process of conserving
agriculture
ailable for
ir work in
every drop

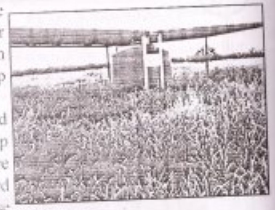

water and
ans to keep
anywhere
lowmward
n purpose

2. Moderate Spacing 3.5 – 4 Km -: This category occupies maximum port
Lonar, Shindhakhed R., Buldhana, Mehak

3. Very high Spacing <4 Km.-: Deulg
Spacing of this tahasil is above 4.61Km. Th
of its capability of support the population.

Conclusions : The topography featur
of potable water and transport network has
In this three main physicals factors like Satf
and Khadpurna rivers are impact on the s
district. Only one Deulgaon tahasil have hig
this tahasil hilly and low fertility soil. After t
tahasil city is famous for holy place but surr

onds, cannels, ditches, canals, canal etc, to rich
e.
in the history of 140yr of marathwada faces times
ght. In 1877, 1899, 1918 and 1972 marathwada
nce of rain-water harvesting is increases here.
s become a very essential thing now a days. We
elopment of agriculture conserved rain-water is
other way of collecting water can be used though
ike water cup and 'jal shivar yojna' give inspiration
fter all just using water carefully is not the option
ost important thing and it can only happen when

References

- Balbhadra Jhu 1995 : Village in anci
- Ahamd, E 1962 : "Indian village pat
- Dr. V.B. Kharate 2015 : "Pattern of R
- Singh R.Y.1994: "Geography of Setl
- Kumbhar, A.P. 1997 : "Rural Habitat
- Charles, T. S. J. 1958 : The Size and
- Census Handbook of Buldhana distri
- www.google map

Rainwater catchment systems. IT Publications,
r from roofs. Danida
harvesting: The collection of rainfall and run-
ion
007) *Roof water harvesting: A handbook for*
nd Sanitation Centre. Available at: www.irc.nl/
rangabad.

ISBN : 978-93-81948-90-3

METHODS OF WATER CONSERVATION FOR RURAL DEVELOPMENT IN MARATHAWADA

37

Dr. Phoke Dilip Uttamrao
Asst. Prof. Dept. of Geography
Godavari Arts College, Ambad
Dist. Jalna.

Dr.Khade Sominath Sarangdhar
Asst. Prof. Dept. of Geography
R.M.I.G. College, Jalna.
Dist. Jalna.

Baban Singare
Asst. Prof. Dept. of Geography, Tatkare college, Mangaon Dist. Raigarh

Introduction

Consider the planning for a water supply for a town or an irrigation project. How much water is available in the rivers? How does this supply compare with the demand? is reservoir storage needed? River flow varies and therefore reservoirs are built to store water to tide over from times of excess to times of deficiency.

"Watershed is topographical natural geo-hydrological unit draining runoff water at a common point by a network of channels and streams." Water conservation is the judicious use of all resources of the watershed area to achieve optimum production with minimum hazard to the resources and for the well being of the people. Water conservation factors are applied to all the sensitive spots on the area leading to soil and efficient water management. It is generally heard that in case of India even after realizing the total irrigation potential of the country, sizable area of the cultivated land will continue to depend on the rainfall. Obliviously water conservation will a key position in the national agriculture. Soil, water and vegetation form the resource base for agriculture and these are in the dynamic state. Water has been an important input for agricultural progress. The managing available water in agriculture is the pre-requisite for scientific crop husbandry.

Soil, water and vegetation are the most vital natural resources for survival of life on the biosphere. These resources are under tremendous stress duet to ever increasing biotic pressure and mismanagement of recourses. The prosperity and development of nation depends to a great extent on natural resources and their sustainable management. Water is prime national key resource for watershed development leading to sustainable agriculture. In India even today about ¾ area is depends on in situ rainfall contributing almost 42% of national production. Now rainfall being the main source of water and its conservation is essential for successful crop production in rain fed area.

NEW MAN PUBLICATION
www.newmanpublication.com
PARBHNI / AURANGABAD / MUMBAI

ISBN: 978-93-83973-74-2

HUMAN CONCERNS AND ISSUES IN LIBRARY SCIENCE

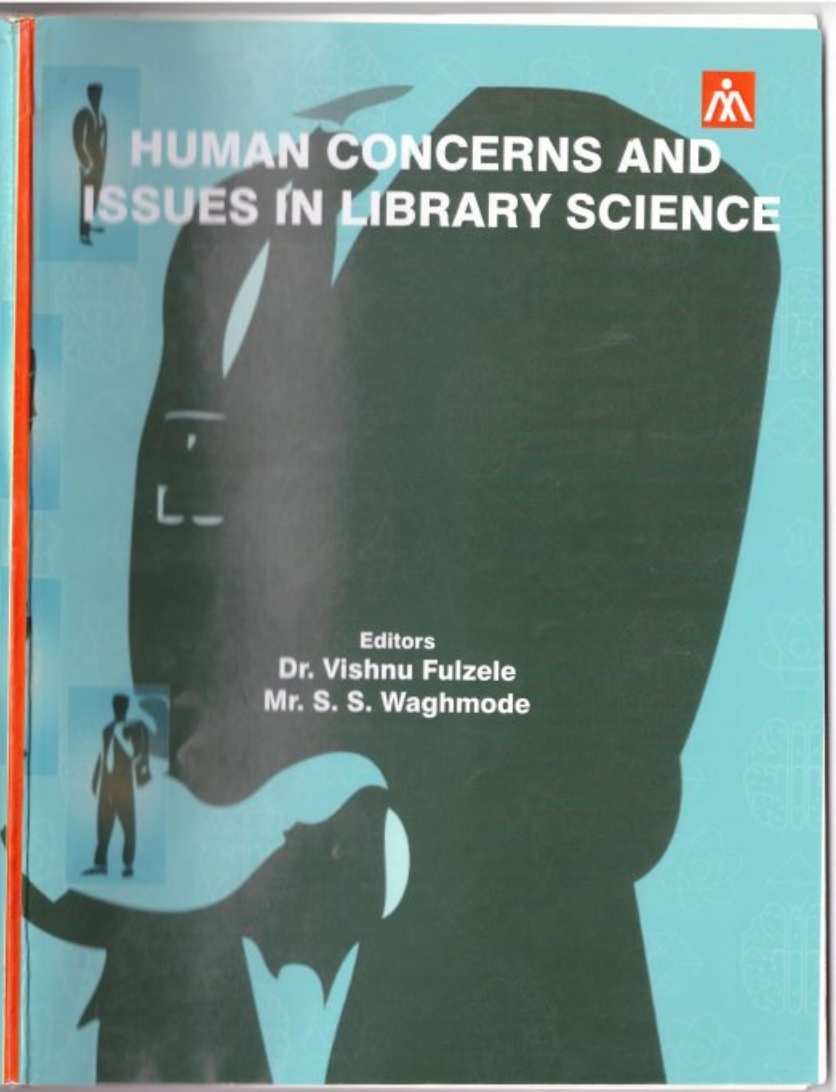

Editors
Dr. Vishnu Fulzele
Mr. S. S. Waghmode

ISBN: 978-93-83871-74-2

Human Concerns and Issues in Library Science
Edited by Dr. Vishnu Fulzele & Mr. S. S. Waghmode

First Published: April, 2017

© Centre for Humanities & Cultural Studies, Kalyan

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means without written permission of the copyright owner.

Printed & Published by Dr KalyanGangarde *for* New Man Publication,
A/108, Brahma Apts, Nr. Dattadham, Parbhani- 431401.
Mob. + 91 9730721393, +91 9420079975
Email: nmpublication@gmail.com
www.newmanpublication.com

Typesetting and Cover Designing: Prof. Hanumant Patne & Seema Zade

Disclaimer: Articles in this book do not reflect the views or policies of the Editors or the Publisher. Respective authors are responsible for the originality of their views / opinions expressed in their articles / papers- **Editors**

PREFACE

It gives us immense pleasure to note here that S. B. College, Shahapur is going to organize one day Multidisciplinary International Conference in collaboration with Centre for Humanities and Cultural Studies, Kalyan on *"Human Concerns and issues in Literature, Social, Sciences, Commerce, Science and Technology"* on 8th April, 2017. The deliberations of the conference on this innovative topic will be beneficial to empower people in general and academia in particular

The present multidisciplinary International conference aims to bring together contributions from all traditional and non-traditional fields of Humanities, Social Sciences, Commerce, Science and Technology which relate to crucial contemporary human affairs. The underlying strategy is to advance human self understanding and communication via innovative, interpretative, critical and historical contributions transcending disciplinary and cultural frontiers. By addressing primarily, though not exclusively, original, theoretical, empirical studies and their interpretations, the conference aims at fostering multicultural and international conversation concerning the whole range of human and social issues. Thus, the conference intends to focus on methodological and ontological issues, in particular on those concerned with contested issues, and contested categories of Humanities, Social Sciences, Commerce, Science and Technology and of those primarily on the categories of human, individual and person.

All the papers and articles, which are being published in this book, are undoubtedly the most authentic and highly resourceful in the content and form.

We appreciate the efforts of all the members, peer review committee, editorial team and all the members associated with the conference and proceedings publication

We congratulate all the contributors, delegates and the researchers for unearthing the issues in the field of Language & Literature and exploring opportunities in this area. We are sure that the present book would be a valuable source for the researchers.

We would like to express our sincere gratitude to the staff of our college and the members of CHCS for their outstanding efforts to make this event a grand success. We hope the conference will be a grand success and it will evolve suggestions and recommendations for the betterment of humanity.

- **Editors**

CONTENTS

1. A Study Of Information Gathering Habits Of Internet Users In Ahmedabad / Dr. Sangita Purohit | 5
2. Review Of E-Resources In College Libraries / Bhise Kiran Rangnath | 11
3. Application Of Knowledge Management In Libraries / Prof.Dr.D.T.Ghatkar | 14
4. Knowledge generation in University of Kashmir:A study from 2011 to 2015 / Mohammad Ishaq Lone | 17
5. Crowdsourcing in Library Management / Nandkishor R. Motewar | 23
6. Application of RFID Technology in Libraries: Methodologies, Challenges and Recommendation / Neelam Bansal | 26
7. Knowledge Management in Academic Libraries / Dr. Nilima R. Bankar | 33
8. Quick Response (QR)Code: ANew Tool for Library / Mr.Nitin Mahendra Chaware | 37
9. Use of Social Media for Marketing of Library Services and Products / Patade Nandkishor S. | 40
10. Use of Electronic Resources by Post Graduate Students of Shri Shivaji College, Parbhani: A Study / R.B.Tekale & Dr. Daya B.Dalve-Patil | 44
11. Information Literacy and Libraries / Dr. Rajkumar P. Ghule | 49
12. Need For Importance Information Literacy And Society / Rathod Kashinath R.& Pawar Ganpat R. | 40
13. Inflibnet And Knowledge Society / Mr.Ratnesh G. Gosavi | 54
14. An overview of social networking sites and new technologies Application for cater the need of library users / Rautray Sandip Wamanrao | 56
15. Governement Of India Digital Resources / Ravi Sankar Reddy Narala & Dr.M.Doraswamy | 61
16. Information Literacy / Sangita Gangaram Utekar | 68
17. Social Networking Tools For Library Services / Snehal Sandeep Pawar | 72
18. ICT In Kendriya Vidyalaya Southern Command, Library Pune: An Overview / Mrs. Sucheta Chandanshive | 75
19. Application of Barcode Technology in Libraries / Tukaram Waghmare | 79
20. Information Literacy in Digital Library / Dr. VikramVithal Giri | 83
21. Role Of Knowledge Management In Libraries / Mr. Vinayak Savatagi | 86
22. A study of the growth and development in Bibliometric / Vinod Purushottam Ghar | 90
23. Changing Role of Library & Information Professionals in Digital Era / Vishnu M Pawar | 93
24. An Overview Role of Librarian in Information Literacy / Miss. Yadav Shyamla Chandrakant & Arun Vishnu More | 96

A STUDY OF INFORMATION GATHERING HABITS OF INTERNET USERS IN AHMEDABAD

Dr. Sangita Purohit.
B.Sc .M.Lib , PhD
Library Head.Ahmedabad University.

Email—sangitapurohit3@gmail.com Mobile no-91-9409656469

ABSTRACT: The Internet provides a wealth of information of users using the internet significantly and it occupies an important place among various information sources. It is widely used by the students for their research purposes and it plays an active role in searching of information.. Mostly internet users are in the age group of 20-24 years .Some of the user (22.5%) are in the age group of 25-30 . A very rare Internet users are in the age group above 40 years It can be concluded that Majority of Internet users are from new generation . It is a good sign of development of Information technology. Lots ofinformationare available from many search engines. Their habitsespecially internet users of Ahmedabad includes chatting, online shopping, music downloads, health & wealth managements, travels etc.

KEYWORDS.-Information,Habits. Internet users ,Information technology

1. INTRODUCTION: Libraries are mainly entrusted with a host of predetermined tasks acquiring organizing, preserving, retrieving and disseminating information to the users. Right from ancient times to be present internet era, the present internet era, the primary objective of library has always been its, However, the way this purpose has been achieved has drastically changed.Information technology has influenced the very nature of business and management libraries. They are undergoing significant changed today not only in outlook but also in function, services, methods and techniques for collection development ,processing and dissemination for information.. The conventional set up of brick and mortar libraries that store information within a constrained physical space have given way to data centers that integrate data sources around the globe by way of networking. Libraries have not yet explored their full potential to the full with the advancement in technology and its direct application to libraries, business and management libraries are becoming lean and agile libraries that streamline information supply.

The pervasive nature of the internet ,coupled with platform independent database connectivity is turning library portals more and more effective.[1]

If we talk on the progress of last two decades, the country has been preparing for 21st century. The electronic revolution has brought out innovations in the field of information technology. Modernization has gifted mechanized preservation and dissemination of the information. The scientists and academicians are thinking of online services and networking of information system. Keeping in view the advancement in technology and many folds increase in information. Government has initiated number of steps. Now the documents are given due recognition and store items are no more considered in the list of government. The under for dealing with the unwanted document has been issued by ministry of finance. Documents for formulation national policy for library and information science.

The use of library will create awareness in users about their rights. They will also know the other's achievements. The competition will encourage them to think about themselves and about other too.[1]

The term library usually invokes in our mind a storehouse of information in the form of print on paper publications like books, journals, reports, etc. and newer media such as films, filmstrips ,video and audio cassette. Most of us view the library as a place where such information 'containers' are acquired and organized for the purpose of consultation, search ,extraction and information dissemination. While the walls of the libraries have begun to be less solid with the use of technologies like OPACs,CD-ROM and online systems, libraries are still largely associated with buildings that house a variety of information 'containers'. This image is being serious challenged today by the rapidly emerging 'network information 'environment digital information that is produced managed and accessed over computer networks. Developments taking place over the internet is an indication of these trends.

16

INFORMATION LITERACY

Assit. Prof. Sangita Gangaram Utekar,
Librarian
D. G. TatkareMahavidyalayMangaon,Mangaon-Raigad 402104,
Maharashtra –India sangitagutekar@gmail.com 9552803247

Abstract: Information Literacy Skill develop competencies in users to retrieve particular information they need. After that needed information was from books followed by magazines, journals. They use hundred percent online sources for their required information followed by documentary and non documentary sources. They can define their information needs. They search though subject keywords. They can select their relevant source of information though online searching.

Key Words: Information skills, Information literacy, Needs, Information literacy standards, Services, Types etc.

Introduction: "Information literacy forms the basis for lifelong learning. It is common to all disciplines, to all learning environments, and to all levels of education. It enables learners to master content and extend their investigations, become more self-directed, and assume greater control over their own learning." Information Literacy forms the basis for lifetime learning. It is common to all discipline to all learning environment and all level of education. Librarians should be able to transfer and apply this knowledge to new environments and research tools that were new to them. Information literacy expands this effort beyond libraries and librarians and focuses an thee learner rather than the researcher. Information literacy is a set of ability remaining individuals to "recognize when information is needed and here the ability to locate, evaluate and use effectively the needed information." Information literacy also is increasingly important in the contemporary environment of rapid technological change and proliferating information resources. Because of the escalating complexity of this environment of rapid technological change and proliferating information resources individuals are faced with diverse abundant information choices in their academic studies, in the workplace and in their personal lives. Information is available through libraries, community resources, special interest organization, media and internet.

Definition:

Computer literacy: An understanding of the concepts, terminology and operationsthat relate to general computer use. It is the essential knowledge needed to functionindependently with a computer. This functionality includes the ability to solve andavoid problems, adapt to new situations, keep information organized and communicate effectively with other computer literate people."

Information: Information as knowledge, intelligence, facts or data which can be used, transferred, or communicated.

Information literacy: information literacy is a set of abilities requiring individuals to "recognize when information is needed and have the ability to locate, evaluate, and use effectively the needed information. "a set of competencies that an informed citizen of an information society ought to possess to participate intelligently and actively in that society."

Information literate person: To be information literate, a person must be able to recognize when information is needed and have the ability to locate, evaluate, and use effectively the needed information."

Information Retrieval: Finding documents, or information contained in documents, in a library or other collection, selectively recalling recorded information. Methods of retrieval vary from a simple index or catalogue to the documents, to some kind of punched card or microfilm record which required. Large or expensive equipment for mechanically selecting the material required. Classification, Indexing and machine searching are all systems of information retrieval.

Information Services: Library information center process information- bearing documents and organizes them for use to those who seek it. A library makes both extensive and intensive efforts to inform the users what information is available in what document through its various bibliographical and documentation services.

Library: The terms used for a collection of books and other librarian which have been kept for reading, study and consultation.

Library literacy: Library literacy is usually defined as 'the learning of the basic skills of finding information' and refers to competence in the use of

libraries with a particular emphasis on being able to make informed decisions about sources of information.

Library services: Refers to the facilities which are provided by the library for the use of the books and the dissemination of information.

Network literacy: Knowledge: 1. awareness of the range and uses of global networked information resources and services. Skills: 1. the ability to retrieve specific types of information from the network using a range of information discovery tools.

Reference services: Reference service means contact between the right reader and the right book at the right time and in the right personal way.

Tool literacy: "ability to understand and use the practical and conceptual tools of current information technology, including software, hardware and multimedia, that are relevant to education and the areas of work and professional life that the individual expects to inhabit. This can be taken to include the basics of computer and network applications as well as fundamental concepts of algorithms, data structures, and network topologies and protocols"

Library standards for Information Literacy: Library literacy is the skills acquired in library orientation and user education. Thelibrary should recognize that the development of information literacy skills in students and researchers. This collaborative process between the library staffs and the users undertakes to provide appropriate training and assistance.

Information literacy standards: The information literate person recognizes the need for information and determines the nature and extent of the information needed.The Library will teach students:

- How to identify key concepts and terms relating to the research topic or

  Information need.

- How to define the scope and scale of information required
- About variety and types of information sources relevant to their subject discipline, including: books, journals, encyclopedias, dictionaries, statistics, data books, newspapers, video and sound recordings, media broadcasts, websites, unpublished sources, people, etc. Print, electronic and audiovisual formats. About differences in content and function of types of information sources relevant to their subject discipline

1. The information literacy person accesses needed information effectively and efficiently:

The library will teach students:

- About the range of information access tools in their subject area, in print andelectronic format, including library catalogues, indexes and bibliographies, citation and full-text databases
- How to select the most appropriate access tools and use them effectively About the role of library staff as sources of expertise in the information gathering process
- How to devise and carry out effective search strategies, including the use ofBoolean operators, truncation, thesauri and field searching in electronic database and search engines. Internet searching techniques including the use of search nines, directories and specialized subject gateways
- Internet searching techniques including the use of search engines, directories and specialized subject gate ways.

3. The information literacy person evaluates information and its sources critically and incorporates selected information into their knowledge base and value system.

The library will teach students:

- How to critically evaluate search results
- How to evaluate sources for authority, validity, bias and accuracy

4. The information literacy person classifies, stores, manipulates and redrafts information collected or generated.

The library will teach students:

- How to identify and record the basic elements of a bibliographic citation
- How to cite correctly the information sources they have used
- How to use a nominated bibliographic software package e.g. ProCite, endnote

5. The information literacy person expands, reframes or creates new knowledge by integrating prior knowledge and new understandings individually or as a member of a group.

The Library will assist students with tools they may use to support this process by:

- Providing basic troubleshooting assistance with IT applications available at library workstations

ABOUT THE EDITORS

DR MANGALA HIRWADE (1968) B. Sc, MLISc, NET and Ph D in Library Science and has 23 years of professional experience. Presently working as Assistant Professor & Head, Deptt of Library & Information Science, RTM Nagpur University, Nagpur. She has worked at Shivaji Science College, Nagpur as a Librarian for 6 years and at Patent Information System, Nagpur for 11 years. Presented Papers at USA (2009), South Africa (2011) and Sri Lanka (2010 and 2011) and chaired the Session on IPR and Copyright, 7th International Conference at, Sri Lanka. She has delivered more than 200 Lectures as Resource Person in Refresher, Orientation Courses,sponsored by UGC, AICTE and CBSE and at other Institutes and promoting awareness about Intellectual Property Rights and Open Access. She is recognized Ph.D Supervisor at RTM Nagpur University and SGB Amravati University. Eleven students have been awarded Ph.D. and three have been submitted. 13 students have been registered. She has guided 33 students guided for M Phil Research work and 52 students for M Lib project work. She has five books, twelve edited books, 45 papers in National and International journals and 81 papers in conference proceedings published to her credit. She has been associated with UNESCO-SALIS Information Literacy Interactive Portal for South Asia (2007-2008), UNESCO Handbook on Open Access [Published in English, German and Chinese] and Encyclopedia of Cyber Behavior as Content Writer. She has completed one Minor Research Project of UGC, one Major Research Project and one ICSSR Research Project. She is recipient of 2011 Emerald Indian LIS Research Fund Awards (UK), P.V. Verghese - Best Paper Award - 2002. ILA, New Delhi. (National Level), Granth Mitra Puraskar 2010, Shiksha Rattan Puraskar, Best paper award at NAAC sponsored National Conference at Hislop ollege, Nagpur. She is associated with 4 National Journals as Editorial Board Member. She is also Life Member of Professional Associations: ILA, IATLIS, IASLIC, VLA, LISSA, SALIS

Dr. Devendra S. Bhongade is working as Principal at Jeevan Vikas Mahavidyalaya, Devgram, Distt. Nagpur (Maharashtra) and has 17 Yrs. of teaching and professional experience to his credit at UG and PG level. He has completed M.Sc.(Maths), MLISC and Ph.D and is the 3rd merit in MLISc in Summer 2000 batch in the RTM Nagpur University rank. He has presented more than 37 research papers in seminars/ conferences at various National and Inter-national level, published 3 papers in National Journals and visited Colombo (Shrilanka) and Maleshiya. He has completed one UGC Sponsored Minor Research Project on "Creation of Institutional Repository of Jeevan Vikas Mahavidyalaya, Thugaondeo". He has been actively engaged in educational as well as social activities undertaken by Antyodaya Mission of India, one of the dedicated societies working in rural part of Maharashtra. Because of his special interest in rural area, he is actively involved in the village development programs, the work of which is appreciated by the Government of Maharashtra and has organized various up-gradation programs for the poor people in the backward area. He is the recognized Ph.D.Supervisor of RTM Nagpur University. Till the date, 01 scholar has been awarded Ph.D., 02 have submitted and o2 are doing research under his supervision. He has been invited on various selection committees by the university as a subject expert. He is the life member of professional organizations viz. ILA, IATLIS, IASLIC, VLA, NUTA , NUCLA and working on various NGOs.

JTS Publications
V-508, Gali No. 17, Vijay Park Delhi-110053
Mob.08527460252, 09990236819
Email: jtspublications@gmail.com
Branch Office: A-9, Navjeevan Enclave
Ghaziabad, Uttar Pradesh, Pin-201102

₹ 895/-

ISBN 978-93-87580-01-5

LIBRARY MANAGEMENT IN MODERN ERA

DR. MANGALA HIRWADE
DR. DEVENDRA BHONGADE

LIBRARY MANAGEMENT IN MODERN ERA

EDITORS

DR. MANGALA HIRWADE
DR. DEVENDRA BHONGADE

JTS Publications
V-508, Gali No. 17, Vijay Park Delhi-110053
Mob.08527460252, 09990236819
Email: jtspublications@gmail.com

Branch Office: A-9, Navjeevan Enclave
Ghaziabad, Uttar Pradesh, Pin-201102

©Jeevan Vikas Mahavidyalaya, Devgram, Nagpur-441301

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright owner.

First Edition 2017

ISBN 978-93-87580-01-5

PRINTED IN INDIA

Designed By
Harsimran Singh Pahwa (Harry)
Graphics Insight, Mahal, Nagpur-440032

Printed By
SHIVNERI OFFSET
Ram Coolers Square, New Shukarwari Road, Mahal, Nagpur-440032

All the views expressed are of the authors. Editors are not responsible for that.

Editorial

It gives us immense pleasure to offer you brainstorming insights and thoughts of working library professionals from this edited book. This is the outcome of working experience of the actual forerunners of the librarianship over last few decades in the field of library management under the changing environment; powered by Information Technology. The principal aim and basic motive behind the organization of this conference is to bring together library science teachers, academic librarians, library activists and reformers at one platform to give vent of confined views and opinions. Hence, the articles in this book are actually several remarks from the bird's eye-view which certainly shade light on challenges and immediate issues in modern library management system.

The conference is unique of its kind as it is a joint venture of a College Learning Resource Center, Devgram, Department of Library and Information Science, RTMNU and NUCLA together. The Jeevan Vikas College LRC, who is principal instrumentation for this successful organization has certainly paved the way of new leadership in LIS as it is the need of time that all the streams should come together to face the new immerging challenges. It would be a strong and fruitful alliance of classic theories and principles of discipline with practical and working experiences together. Hence, it will not be an exaggeration to say that the articles in this book are actually reflection of theories and practical of library and information science. The most of the authors are having working experience of changes and alteration in library operation and management due to advancement in ICT. They have observed both pre and post IT revolution era and facing several challenges. This makes their opinion as authentic evidence, which would certainly help us to understand the scenario, trend, opportunities and problems properly.

It was most challenging and critical job of selecting papers to be published in this book, due to huge response from the professionals; which underlines the need of such common and strong platform and encourages us for further organization. As we witness the ICT revolution today which has deeply altered all the trinities of library i.e. Library Staff, Library Users and Library Collection that force us to restructure and redefine the library services, library management, library housekeeping, library functions and new role and responsibility in the new framework of working conditions. The papers in this book touch upon all such aspects including professional communication, research, library system security, application of technology etc and so on.

Dear colleagues, we are passing through a transitory phase. This brings new opportunities as well as posed several new survival challenges. In this transitory phase, the fate of librarianship greatly depends on how we could utilize these challenges as an opportunity to survive in future. We hope, this book will certainly give a new insight and direction which would help us to cope-up with today's immediate challenges. For this, we need to work together and follow the resolution of this conference in future also for successful destiny of librarianship. Best complinfents and Happy New Year. Thank you.

Dr. Mangala Hirwade
Dr. Devendra Bhongade

Bhagavadgita Manuscripts in Maharashtra Based on National Mission for Manuscripts
Dr. Sangita Chore, Dr Mangala A. Hirwade and Mr Rajendra Chore 116-121

The Information Needs and Problems Regarding Competitive Exams of Library users in Arts Colleges in Vidarbha Region
Dr. Ramanik S. Lengure 122-127

Electronic Information Literacy Among the Faculty Members in Degree College
Dr. Sudhir Astunkar and Dr. Chandrashekhar Hanwante 128-130

Information Awareness through User Education
Dr. Sudhakar S. Thool and Dr. B. K. Thawakar 131-137

G P Birla Museum Library Hyderabad: A Study
Mr. Rajendra Pahade 138-142

Awareness, Application and Implementation of Copyright Provisions in Dr. V.B. Alias Bhausaheb Kolte Knowledge Resource Centre, RTM Nagpur University, Nagpur
Ashok S. Khobragade 143-146

Information Needs Of Schedule Tribe Research Students: A Study
Mrs. Sarika G. Choudhary and Dr. Satyaprakash M. Nikose 147-152

Important Role Ofmobile Application and Knowledgein Digital Age
Dr. Ashish A. Thanekar 153-157

Management and Indicators for Qualities in Library Services
Ms. Sangita Gangaram Utekar
Ms. Kalpana Ranganatha Tathare 158-163

A Study of Impact of Intervention on Reading Habits of Students
Dr. Mrs. Aparna S. Choudhary 164-167

E-Resources and Services in Academic Libraries
Dr. Chandramani Kailash Gajbhiye and Dr. Satyaprakash M. Nikose 168-172

Academic Library and Financial Sources
Dr. Rajkishor S. Gupta
Mr. Devendra H. Wasade 173-178

Information and Communication Technology in Libraries
Kiran G. Jayade, Chandrashekhar. J. Gaikwad 179-180

Electronic Resources Management
Dr. Niraj T. Khobragade 183-188

E-Services through Library Website in E-learning Environment
Dr. (Mrs.) Usha M. Dangre 189-194

Higher Education and Academic Libraries in India and ICT
Dr. Vijay Dakhole, Dhananjay Mendule and Dr. Pradeep N. Dhote 195-199

Library and Information Science Education in Maharashtra : at A Glance
Dr. Vaishali. D. Malode (Wadnerkar) 200-207

A Conceptual Overview of Digital Libraries
Dr. Gulshan D. Kuthe, Mr Gyanchand Ailani 208-210

Kaizen and 5s Application in Library for TQM
Dr. Shalini M. Sakharkar 211-216

Best Practices to Enhance Library Services Through Ict
Dr. Mrs. Shivani Balkundi 217-220

Best Practices in Annasaheb Gundewar College Library: A Study
Dr Nita Sharma 221-224

MANAGEMENT AND INDICATORS FOR QUALITIES IN LIBRARY SERVICES

Ms. Sangita Gangaram Utekar
Ms. Kalpana Ranganatha Tathare

Abstract
Librarian must have very good quality to manage all services with the help of technical staff, information in several supports to produce quality services. Quality services have a very good meaning that is resources & services put in to real user at exact time .There is no excuse the Librarian must use management tools to provide quality services to user. Internet offer libraries many opportunities in a number of areas including management, services e-information collection development .The basic aim of this composition is to describe and identify the issues meriting attention by the library Professional to rise the library inform. The paper discus about the Management and indicators for qualities in library services in College

INTRODUCTION

The role of Librarian is considered to be the most important as it is concerned with the ongoing need for access to learning resources for academic community. In era of ICT, responsibility of Library professional has increased much to remain update and to respond effectively in challenging web environment. Libraries also required to change their form as well as to develop the provided services to user. It is very essential need of user. Quality services is said to be one which satisfy the users expectation resulting a good experience .Throughout the history, libraries were mainly concerned with collection development and processing. The library professionals gave less concern to quality in product and services, never checked whether the user were satisfied or not. The social and economic changes have promoted the libraries to develop services. The library Human ware is very vital part in quality services .The library being a service organization its primary function is to provide right information & right reference to its users. Only the user's satisfaction survey will facilitate the assessment of their satisfaction with products and services offered. There are various methods, tools and techniques to measures, control and improve the quality of library services. Quality measurement and evaluation assumes great importance in modern libraries as it brings immense to the library as well as user community.

Management: Management is the art of getting things done by group of people with the effective utilization of available resources. A Minimum of two persons are essentials to form a management. These persons perform the functions in order to achieve the objectives of an organization. Peter F. Druckerdefines, "Management is an organ ;organs can be described and defined only through their functions."

Library Management: Library management as the process of co-

coordinating total resources of an organization towards the accomplishment of desired goals of that organization through the execution of a group of inter-related functions .Managing a Big Library is a specialized and complicated task. It is so because a Librarian deals with different type of readers, specialist in various fields of knowledge. Since a library is an institution of social change, a Librarian also performs a dynamic role in the process of transformation of a society from an old social order to new one.

Quality: Quality terminology has several meaning. The conventional definition is-"One that wears well, is well constructed will last for long time"and the strategic definition is "meeting customer's requirement." According to Robinson, "Quality is meeting the requirements of customer now and in the future.

NEED OF QUALITY MANAGEMENT FOR THE LIBRARIES

The Implementation of quality management in the library is a useful way to evaluate the quality of library services and provide goals for improvement. One especially beneficial aspect of quality management is its emphasis on continuous improvement. If a library is to be managed according to quality criteria, quality needs to needs to be defined and made measurable.

QUALITY CONCERN IN LIBRARY SERVICES

The Library is an educational service organization to offer reference and information to its users. Library services mean the bunch of the access, analysis, process and, retrieval and its delivered to right users. In a library the services offered from acquisition section technical section, periodical section, reference section, circulation section, catalogue section etc. These are the central farts of quality library services. A user who had an unpleasant experience from the library will tell it to many people, but a good experience will be told to very few. Therefore it is very necessary for librarian to understand the users, what they want, how they want, and when they want the documents and information.

INDICATORS TO IMPROVE THE QUALITY IN LIBRARY SERVICES

The information based society and its main requirement is information in this age it is very easy to make a quality based library services .If the parent body or concern authority assist financially as well as collectively .It is very necessary for the librarian and its parent body to look forward for the present and future generation to cope up universal phenomena .A user must be educated with proper technology to use the library effectively. User should have knowledge of what facilities and services are available in the library or information centre and how to access these efficiently and effectively in their learning process. To improve the service quality the user satisfaction survey is a tool that provides

Mr. Chintan K. Pandya, (B.Com, M.L.I.Sc.) is presently working as a Librarian at Gujarat Power Engineering and Research Institute, (GPERI) Mehsana-an. He is having more than 15 years' of experience in different libraries like Academic, Research, Corporate and Public libraries. He has worked with prestigious organizations i.e. British Council, Tata Consultancy Services and Physical Research Laboratory Ahmedabad. His research interests include: Institutional Repositories, Change Management, Publicity, Modern Library Practice, and Promotion of Library Services etc... He has published 7 research articles in national and international conferences. He has also attended various seminars, conferences and corporate training programs.

Ms. Shilpa J. Boricha, (B.Com, M.L.I.Sc., Ph.D. Cont.) is presently working as a Librarian at Gujarat Institute of Disaster Management (GIDM), Gandhinagar. She is having 8+ years' of experience in different libraries like Academic, Research, and Corporate libraries. She has worked with prestigious organizations i.e. Tata Consultancy Services and Physical Research Laboratory Ahmedabad and M.S. University Baroda and Zydus School for Excellence. Her research interests include: School Library Networking, Digitization of Libraries, Modern Library Practice, and Promotion of Library Services etc... She has published 5 research articles in national conferences. She pursuing her Ph.D. from Hemchandracharya North Gujarat University, Patan.

Mr. Bharatkumar V. Naikele, (B.A., M.L.I.Sc.) is presently working as a Library Assistant at Gujarat Power Engineering & Research Institute (GPERI), Mehsana. He is having 7+ years of experience in the field of LIS. He has also worked with Education Trust Institute of Technology, Nadiad. His area of interest is Digital Library, Website Designing, Open Source Software, and Networking.

GUJARAT POWER ENGINEERING AND RESEARCH INSTITUTE

(AICTE Approved | GTU Affiliated | ISO 9001:2008)

Near Mewad Toll Naka, Ahmedabad - Mehsana Express Highway

Village - Mewad, Ta. & Dist. Mehsana - 382 715, Gujarat, India

Tel.: 02762 - 261975 | Web.: www.gperi.ac.in

CREATING ENGINEERS FOR TOMORROW

ISBN 978-93-5388-314-1

Rs. 499/-

ITERNET OF THINGS & CURRENT TRENDS IN LIBRARIES

PUBLISHED BY

GUJARAT POWER ENGINEERING AND RESEARCH INSTITUTE, MEHSANA

FIRST INTERNATIONAL CONFERENCE - ITCTL 2018

CONFERENCE PROCEEDINGS

Editor : CHINTAN PANDYA

INTERNET OF THINGS AND CURRENT TRENDS IN LIBRARIES

Co-Editors : SHILPA BORICHA & BHARAT NAIKELE

INTERNET OF THINGS AND CURRENT TRENDS IN LIBRARIES:
INTERNATIONAL CONFERENCE PROCEEDINGS JANUARY 2018

Copyright © 2018 Chintan Pandya. All rights reserved. First paperback edition printed in 2018 in the Mehsana, Gujarat, India.

All rights reserved

No part of this book shall be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or by any information retrieval system without written permission of the publisher.

ISBN: 978-93-5288-314-1

Edit, Design, Printing and Published by

Gujarat Power Engineering and Research Institute,

Nr Toll Booth, Ahmedabad–Mehsana Expressway, Village–Mewad,
Dist–Mehsana. Gujarat, India 382710.

Tel. +91- 2762 - 285875 | www.gperi.ac.in | Mobile: +91 - 9428009866
For more copies of this book, please email to: pandyachintan@gmail.com

Rs.300/-

Cover design by Chintan Pandya

Although every precaution has been taken in the preparation of this book, the publisher and author assume no responsibility for errors or omissions. Neither is any liability assumed for damages resulting from the use of this information contained herein.

PREFACE

WHEN YOU TALK, YOU ARE ONLY REPEATING WHAT YOU ALREADY KNOW.
BUT IF YOU LISTEN, YOU MAY LEARN SOMETHING NEW – DALAI LAMA

The thinking that led to this book and conference has many roots. One of the most important trigger was an informal discussion with my wife (who also hails from a library science background) Shilpa Boricha, on technological innovations, particularly the GPS family tracker device. Suddenly a question arose in our mind - What does a world, where billions of everyday objects connect with each other and share information, mean for libraries? Dr Suresh Lalwani, Librarian, TIMS joined the conversation by voicing his valuable inputs; and we came to the conclusion, that the theme of the conference should be "*Internet of Things and Libraries*".

According to a survey – the internet will soon be dominated by machines and sensors rather than people. By 2020, there will be close to a trillion sensors sending data over the web and these will be added to the world of the Internet of Things. This will open up major opportunities for libraries to connect their services to more people and more things in more places than ever before - thereby expanding their geographical and numerical reach astoundingly.

As we all are well aware that, when it comes to finding out what's happening in and around library science, there's nothing quite like attending conferences and seminars...

Gujarat Power Engineering and Research Institute, Mehsana has completed 6 years of excellence in the field of technical education in the North-Gujarat region. We are thoroughly committed and ambitious to gain the 'The State Asset' status. We are the curator of the first Public Private Partnership (PPP) Model College of the country. Being the Librarian of the institute, it is my responsibility to take this mission forward.

The Three Days International Conference on Internet of Things (IoT) and Current Trends in Libraries (ITCTL) being held from 18-20 January 2018 at GPERI Campus in Mehsana, India is part of this initiative. The committee has invited research papers/articles, case-studies and innovative paradigms in the field of LIS and IoT. All submissions to the conference were reviewed by independent peers from the perspective of technical merit and content. Forty-two papers have been accepted for publication in the conference proceedings. I express my sincere gratitude to the authors and contributors of the conference.

Deep appreciation goes to Viral Asjola, Shashikumar AA and Prof. Bhargav Pandya for their consistent support in generating plagiarism reports. I am also thankful to all the Advisory Members without whose valuable suggestions and inputs this conference could not have been organized.

My colleague Bharat Naikele has been a great helping hand during the last three months - his technical expertise has facilitated the entire process.

I extend my profound gratitude to the hundreds of library professionals (especially North-Gujarat Library Circle) who have supported us in sharing and spreading the information on social media. I am thankful to the librarians who have participated or nominated their colleague in this conference.

I would also like to put on record my sincere gratitude to Dr. Shrikant Wagh, Principal - GPERI for being the motivational force behind the ITCTL and for extending his unstinting support for this conference.

Looking forward to a fruitful brainstorming session and great ideas emanating from this platform...

C.K. Pandya

Chintan K. Pandya,
Librarian, GPERI, Mehsana & Conference Convener, ITCTL 2018
Mehsana, Gujarat. Thursday, 18 January 2018

TABLE OF CONTENT

Sr.	Title	Author(s)	Page No.
	Theme: Internet of Things (IoT) & Big Data		
1	360 DEGREE APPROACH TO INTERNET OF THINGS (IOT) AND ITS APPLICATION TO THE LIBRARIES	Chintan K Pandya	1
2	BIG DATA ARCHITECTURE FOR DIGITAL LIBRARY PERSPECTIVE	Harshad Nirmal & Purvi Doshi	6
3	INTERNET OF THINGS & ITS APPLICATION TO THE LIBRARIES	Hitendra Janardan Patil & Daya T. Patil	12
4	INTERNET OF THINGS (IOT) AND LIBRARY AND INFORMATION SERVICES	NCH. Varadaraju	17
5	INTERNET OF THINGS BASED SMART WEATHER MONITORING SYSTEM	Moulik A. Patel & Irshad Gandharva	24
6	ROLE OF BIG DATA IN ACADEMIC LIBRARY	Indira N. Dodiya	30
	Theme: Massive Open Online Courses (MOOCs)		
7	CURRENT TRENDS IN MASSIVE OPEN ONLINE COURSES (MOOCS)	Kush Sibbu	34
8	IMPORTANCE OF BOOKS IN THE ERA OF MOOCS: A CASE STUDY	Kaushik Rao & Deepak Mishru	44
9	MOOCS: A GATEWAY TO LEARNING ENVIRONMENT	Sangita Gangaram Utekar	48
	Theme: Social Media and Libraries		
10	DIGITAL MARKETING OF LIBRARY SERVICES AND LIBRARY RESOURCES WITH THE HELP OF SOCIAL MEDIA IN THE ACADEMIC LIBRARIES: A STUDY	Dipti Prajapati & Vaishaliben Bhavsar	55
11	SOCIAL MEDIA, SOCIAL NETWORKING AND SCHOOL LIBRARIES	Shilpa Boricha & Bharatiben Solanki	60
12	USE OF SOCIAL MEDIA NETWORKING IN LIBRARIES	Urjita Patel & Sejal Patel	64
13	USE OF SOCIAL MEDIA IN MARKETING OF LIBRARY SERVICES	Unnati Acharya	68
	Theme: Digital Resources, Library Consortia, Current Trends in Libraries...		
14	CHANGING ROLE OF LIBRARIES IN TO THE INFORMATION RESOURCES CENTER	Dharmendra D. Dholakiya	72
15	DIGITAL PRESERVATION: PROCESS AND STANDARDS	Kishore Sakariya	75
16	DSPACE AS AN OPEN-ACCESS DIGITAL INSTITUTIONAL REPOSITORY: ISSUES AND SOLUTIONS	Shanthakumara, T. N.	84
17	E-JOURNALS AND RESOURCE SHARING THROUGH CONSORTIA	Deepak Ramesh Patil	87
18	ELECTRONIC RESOURCES MANAGEMENT: AN OUTLOOK	Vasantray A Chauhan	93
19	ENHANCING ACADEMIC RESEARCH AND RESEARCHER PROFILES USING UNIQUE AUTHOR IDENTIFIERS	Manu T.R., Viral Asjola & Shashikumara A.A.	98
20	ENHANCING LIBRARY SERVICES WITH THE APPLICATION OF MAKERSPACES IN ACADEMIC LIBRARIES	Anjana R. Bunkar	104
21	GREEN LIBRARY INITIATIVES: AN OVERVIEW	Smita Shamrao Patil	109
22	INTEGRATION OF LIBRARY WITH SWOC ANALYSIS WITH SPECIAL REFERENCE TO DIGITAL NATIVES	Urmila Pravin Rawat	117
23	OPEN SOURCES DIGITAL LIBRARY SOFTWARE'S: AN OVERVIEW	Yadav Shyamla C & Ghumre Shivshankar K	124
24	RE-ENGINEERING OF LIBRARIES AND INFORMATION CENTRE: A NEED	Ganesh D Sagre	132

MOOCS: A GATEWAY TO LEARNING ENVIRONMENT

Sangita Gangaram Utekar

Librarian, D.G. Tatkare Mahavidyalay Mangaon, Maharashtra

ABSTRACT: Massive Open Online Courses (MOOC) are a path breaking new concept which can definitely be considered as a game Changer. It eases the flow of knowledge and information rapidly available at a click of a button. This paper will explain the concept of MOOC and explores its present role in LIS field. Also it will describe the SWAYAM – Indian MOOC Platform which may helpful in knowing perceptions towards MOOCs in a massive domain of India.

Keywords: MOOCs, Online learning, Participatory learning.

1.0 INTRODUCTION

The Landscape of higher education is changing rapidly and is witnessing a seismic shift of 'online social learning.' The pervasiveness of internet connectivity with technological developments have created perfect storm for changing how we learn. Emergence of informal learning on social platforms and within online communities is taking place against the rising cost and insular culture of attending a traditional college. Content and the learner's interaction with it is socialized through online collaboration due to disruptive innovation in education. These developments continue to force the evolution of connectivism of learners to instructors and course materials remotely, which in turn have evolved into Internet Connected online learning environment.

Massive Open Online Courses (MOOCs) are a new model of learning on this emerging trend and need for free or low cost learning, delivered through an increased use of social networking platforms across the web. MOOCs are built on the virtual course- long offered by way of online and distance learning efforts, within educational institutions – but allows courses to be taken free for anyone, anywhere.

2.0 LITERATURE REVIEW

By combining literature review, we can outline the scenario of MOOC, its impact on Academic Library services and various roles for LIS professionals in evolving and expanding learning environments.

Michael Stephens (2013) explores new transformative learning environments and he provides the potential roles of LIS professionals in networked, participatory learning environment. These include roles in Self-Directed Learning (SDL), Professional Development Learning 2-0 and the emerging MOOC environments. He summarizes several new roles that 21st century LIS professionals, must consider and they might play new roles in network- enabled, large scale learning environments. In addition, he also adapted online graduate course, called the Hyperlinked Library, at San Jose State University's School of Library and Information Science, In order to explore how LIS professionals can use emerging technologies and participatory practices to serve their communities.

Whereas Hannah Gore (2014) reviews, changed landscape in higher education, the position of libraries in emergence of MOOCs and the role that a librarian could undertake within the research production and presentation of MOOC. He also states that what are the issues and challenges that librarians must face? He draws some conclusion about the impact of emerging disruptive technological developments for libraries and librarians. He means that the MOOC bubble has by no means burst. The landscape of education maybe continually shifting, but the role of the Librarian will remain at the core.

Forest Wright (2013) examines the MOOC Phenomenon, identifying aspects that Academic Librarians should consider in the coming years, including how these courses interact with scholarly resources and library services. He also evaluated the methods for integrating library services in these courses.

Some of the areas of collaboration were discussed by S.M. Pujar and P.G. Tadasad (2016) which enable LIS teachers and Schools to adopt MOOCs to further LIS education and research especially in developing countries.

Similar kind of responsibilities explored by Meghan Ecclestone (2013) that how reference and Instructional Librarians taking over new areas of subject tools which can develop professional expertise using new eLearning model called MOOCs.

Whereas current scenario of e-learning system using MOOC and its platform is explained by Abhishek Kumar and ShwetaBrahmbhatt (2015).In recent studiesDr. Mohd. Asif Khan and Dr. Nishat Fatima (2015) conclude that MOOCs are revolution or constructive learning in Academic Libraries.

The guidelines given by Kevin Smith (2012) are intended to help in navigation especially at the very beginning of this exciting new venture when there are many uncertainties, the use of copyrighted materials in the development of MOOC.

Some limited attempts have been made to present a comprehensive review of MOOC in India.This paper makes an attempt to present a current scenario of MOOCS in India with the latest available information on SWAYAM. It also highlights the role of Libraries and Librarians in MOOCs.

3.0 WHAT ARE MOOCs

The soaring costs of on-campus education, coupled with improved models for online learning interfaces are two obvious reasons for the emergence of open online education. Changes in the global higher education landscape have evolved the recent emergence of 'online social learning'.In response to this horizon, MOOCs are evolved rapidly as a means, to transform teaching and learning for the 21st century, an opportunity for global, open participation. Learners can access an educational opportunity from anywhere with peers from all over the world.

The term MOOC was first used in 2008 by George Siemens and Stephens Downes to describe a free, online course taught at the University of Manitoba for 2,300 students. (Educause 2011)

In principle, MOOC is denoted as:

- Massive – as registration is not capped.
- Open – to take advantage of widely available OER and open registration.
- Online – with no requirement for face to face attendance.
- Course – the concept of a pedagogically designed learning journey.

We can consider a MOOC to be an online course that requires no prior qualifications for entry, can be accessed by anyone who has an Internet connection and includes large or very large numbers of learners.

A growing number of educational institutions have been experimenting with MOOCs and an increasing number of individuals across the globe are enrolling in MOOCs. One reason for this growing interest is that MOOCs make content and learning more accessible and affordable. Many MOOCs are offered at no cost to students, who receive no course credit. Typically, they include open educational resources, easily accessible course sites (Ex. a blog or wiki), and interaction with other students via online forums, study groups and peer review of assignments. In some MOOCs, student performance is automatically assessed via tools such as online quizzes. It's a way to connect and collaborate, engaging in the learning process.

Dr. Veeresh B. Hanchinal is presently working as the Deputy Librarian at **Tata Institute of Social Sciences (TISS)**, Tuljapur campus, Maharashtra, India. He has more than Two decades of professional experience in Library administration, research & training. He has published more than twenty papers in conference proceedings, journals & edited Three books. He is a recognized academic counselor for BLISC, PGDLAN & MLISC programmes of IGNOU, New Delhi. He served as a member of editorial committee of BOSLA Newsletter. He has actively participated in several national & international professional seminars /workshops /conferences/ gatherings etc. He has visited Germany & Turkey on academic assignments. He is a Life member of professional bodies such as ILA, Bombay Science Librarians Association (BOSLA), & KULISA. His areas of interest are digital library, information management, open access initiative, Information needs and seeking behavior & information literacy.

Mr. Shivjee Prasad is presently working with **Chanakya National Law University, Patna** is one of the prestigious law universities of India. He holds Master Degree in Sociology, and qualified UGC(NET) in Library and Information Science. He has about Ten years professional experience in Library management, research & training. He has published more than papers Eight in national & international conference proceedings and journals. He has actively participated in several national & international professional Seminars/Workshops/Conferences etc. He has received Manohar Research Award(Best Runners up) for Research Papers presented in 2nd International conference on conjugative management, library information science, social science and technology for virtual world (ICCLIST -2017). He has visited several libraries; Supreme Court of India Hon'ble Judges Library, Parliament of India Library, Indian Law Institute, National Law University Delhi, American Library centre, National Library Kolkata and many reputed universities & government institutions. His areas of interest include digital library, web based resources information management, open access initiative, Information needs, Library Automation etc.

Mrs. Kumari Amrita is associated with the Library of **Chanakya National Law University, Patna.** She holds Master Degree in Political Science, Bachelor Degree in Law (LLB) and has qualified UGC-NET in Library and Information Science. She has more than a decade of professional experience of library administration & management. Her research interests are library automation, digitization, knowledge organization and management. She has actively participated in several national and international seminars and conferences, workshop and contributed many research papers/ articles. She has received Manohar Research Award (Best runners up) for her research paper presented in 2nd International conference on conjugative management, library information science, social science and technology for virtual world (ICCLIST – 2017). She is an Academic counsellor in Library & Information Science at IGNOU.

Vidit PUBLICATION HOUSE
www.myvph.in

ISBN 9781947099036
9 781947 099036
INR 1170 USD 95

Cutting Edge Technologies For Library and Information Services

Editor-In-Chief
Dr. Veeresh B. Hanchinal
Editors
Shivjee Prasad, Kumari Amrita

Vidit PUBLICATION HOUSE
www.myvph.in

CUTTING EDGE TECHNOLOGIES FOR LIBRARY AND INFORMATION SERVICES

CETLIS

FIRST EDITION

Editor -In- Chief
Dr. Veeresh B. Hanchinal

Editors
Shivjee Prasad, Kumari Amrita

Vidit PUBLICATION HOUSE

First Impression: 2018

© Vidit Publication House

C/o Modern Rohini Education Society(Regd.),

Cutting Edge Technologies for Library and Information Services

ISBN: 978-1-947099-03-6

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the copyright owners.

DISCLAIMER

This book is originally based on entitled "*Cutting Edge Technologies for Library and Information Services*". The Authors are solely responsible for the contents of the chapters compiled in this book chapter volume. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the author/s or publisher to avoid discrepancies in future.

Published by:

VIDIT PUBLICATION HOUSE

C/o MODERN ROHINI EDUCATION SOCIETY

J-147, Second Floor, Vikas Puri, New Delhi-110018

E-mail: vph@myvph.in , http://www.myvph.in

Typeset by : **Vidit Print Services**, New Delhi- 110018

Foreword

The contemporary Intellectual Property regime coupled with recent digital innovation poses *'de novo'* challenges for modern libraries. With increasing significance of Intellectual Property regime in general and copyright law in particular for the libraries catalysed the urge of serious discussion with the reference to the lightening growth of internet and its varied applications. It has been said that the internet is the biggest copy machine and there are numbers of research which supports this view. With advent of digital technology copying and dissemination of any electronic document become a cakewalk even without diminishing its quality. The new set of complications arises when the copyright regime touches the shores of Internet Ocean. It escalated the increase of copyright infringements in online world with newly evolved digital innovations. With this backdrop it is really become a daunting task for the modern libraries to develop counter measures which are technologically robust and based sound legal principles, to curb the rampant increase in copyright infringement. A momentous duty is imposed on the libraries to evolve a harmonious construction amongst the various conflicting interest of copyright regime in online world so that the rights of users as well as owners can be protected adequately. This internet technology paved us the way for the knowledge based society. Now it's for the modern libraries being one of the significant stakeholder of this society to efficiently aware people so that they can contribute with their work, disseminate it within the permissible framework of IPR regime in the development of resilient knowledge based society.

The present book **'Cutting Edge Technologies for Library & Information Services'** is an honest attempt to touch imaginative contours of digital technology which influenced the world of Library Science as well as its users. This book addresses diversified area of library science, nuances of digital technology, implications of copyright law on library as well as innovative practices in library science.

CONTENTS

Foreword i-iii
Message iv
Preface v-xvi
About the Book xvii

1. Need of Student Centric Higher Education System for Today's Changing Global World — 1
Dr. Pradeep Kumar
2. Transformation of Sahitya Akademi and its Library in Digital Era — 12
Dr. Sufian Ahmad
3. Library Automation and Changing Development of Library Services in the New Scientific World — 17
Shivali Gupta, Arun Gupta
4. Effects of Library Automation on Academic Libraries : An overview — 29
Barun Naskar, Payel Saha
5. Knowledge Management : Practical Approaches And Strategies — 44
Dr. Priya Darshini
6. Digital Fundamentals : Technique and its Representation — 55
Dr. Shailini Dixit
7. Digital Media Preservation : What Why and How? — 63
Doly Ghosh
8. Use of Web 2.0 Application Tools in Libraries — 77
Sujit Kujur
9. Application of Data Mining in Library and Information Centers — 89
Bibhash Kumar Mishra
10. Beyond Search : An Overview of Emerging Applications for Scholarly Digital Libraries in the Era of Big Data — 96
Dr. Debarshi Kumar Sanyal
11. Evaluation of Select University Library Websites : A Webometric Study — 116
Dr. Shalini Wasan

12. Electronic Resources : Types, Utilities, and Management Challenges in Libraries — 132
Doly Ghosh
13. Qualitative Research Techniques : A Perception in ICT Scenario — 145
Dr. Ashwani Kumar
14. ICT Skills Development Activities and Constraints by Library Professionals of Engineering College Libraries in Jaipur : A Study — 155
Dr. Pradeep Kumar Sengar
15. An Investigation into Online Information Searching Pattern of Students : A Case Study of Seva Sadan College of Education — 176
Dr. P. Arul Pragasam, Dr. Vidya V. Hanchinal
16. AICTE Mandatory E-Journals : Measurement of Clientele Satisfaction in the Libraries of Engineering Colleges in Pune City — 186
S P Gudi, Dr. P M Paradkar
17. Use of Social Networking Sites (SNSs) by Engineering and Technology Students, Aligarh Muslim University, Aligarh : A Survey — 197
Dr. Faizul Nisha, Dr. Akhtar Hussain, V.Senthil
18. Adoption of Interactive Technology in Central Universities of India — 220
Asifa Ali, Masood Ahmad Bhat
19. Relative Growth Rate and Doubling Time of Research Output of select North Indian Universities : A Study — 234
Dr. Jyoti Sharma, Dr. Rupak Chakravarty
20. Towards Software License : Special Emphasis on Open Source Library Software — 251
Pompa Bhadra
21. Mobile Technology & Service-oriented Architecture — 258
Sangita Gangaram Utekar
22. Digital Repositories in the New Age Learning — 272
Dr. G. Anbalagan
23. Adoption of Project Management Key Element Strategy for Building Sustainable Institutional Repository in the African Countries — 283
Dr. Michael O. Fagbohun, Goodluck IFIJEH, NwanneMary NWOKEOMA, Oyeronke ADEBAYO, Oluwaseun ABIODUN-ASANRE

Chapter-21

Mobile Technology & Service-oriented Architecture

Sangita Gangaram Utekar

1. Introduction

Mobile technology is "IT" technology & is trend of generating innovations for library services. Great shift is achieved due to this, for librarians and libraries. Librarians are preparing for the future &implementation has slashed travel budget of the community. Academic community users' smart phone drastically rising, so the demand for mobile library services is becoming stronger and more diversified. The rapid increase in the internet and mobile penetration helping library professionals to keep innovating newer ways of effectively reaching their targeted users and create relevant favorable relationship with them. Especially, in the university libraries because of teenage users, the demand for mobile based library services that facilitate the library durational resources and services provided is indispensable. The widespread mobile technology is emerging the need to integrate mobile library resources. This chapter will discuss the use of mobile technology in library that will necessitate to access the information for everyone, The purpose of this chapter was to evaluate mobile services in academic libraries, which will allow it to develop its library services in a future-proof manner and useful for libraries searching new and innovative technological channels to communicate and deliver their services.

Librarian, D.G.Tatkare Mahavidyalay Mangaon
Maharashtra (sangitagutekar@gmail.com)

2. Service Oriented Architecture

A **service-oriented architecture (SOA)** is a style of software design where services are provided to the other components by application components, through a communication protocol over a network. The basic principles of service-oriented architecture are independent of vendors, products and technologies. A Service Oriented Architecture (SOA) is an approach to software development by which discrete business functions and data interactions occur through a predefined, machine-friendly syntax. Think about when you submit an e-mail signup form on a website. The form is capturing data, sometimes validating it, and then it will submit this data to a Web Service. The web form does not need any knowledge of the rest of the signup process, database inserts, an e-mail "welcome message" and so on; the service in the back end takes care of all of this. This approach allows a fairly clean decoupling of the front end user interface and the back end programming and business logic. So, while this sounds great, one might ask, *"What are the benefits are to this approach, and why go through the trouble of adding another layer?"* There are a number of benefits to this option, but the one that has great potential is to help with ever-changing mobile websites, as well as mobile native apps.

Fig.1. Service Oriented Architecture

प्रियदर्शिनी इंदिरा गांधी

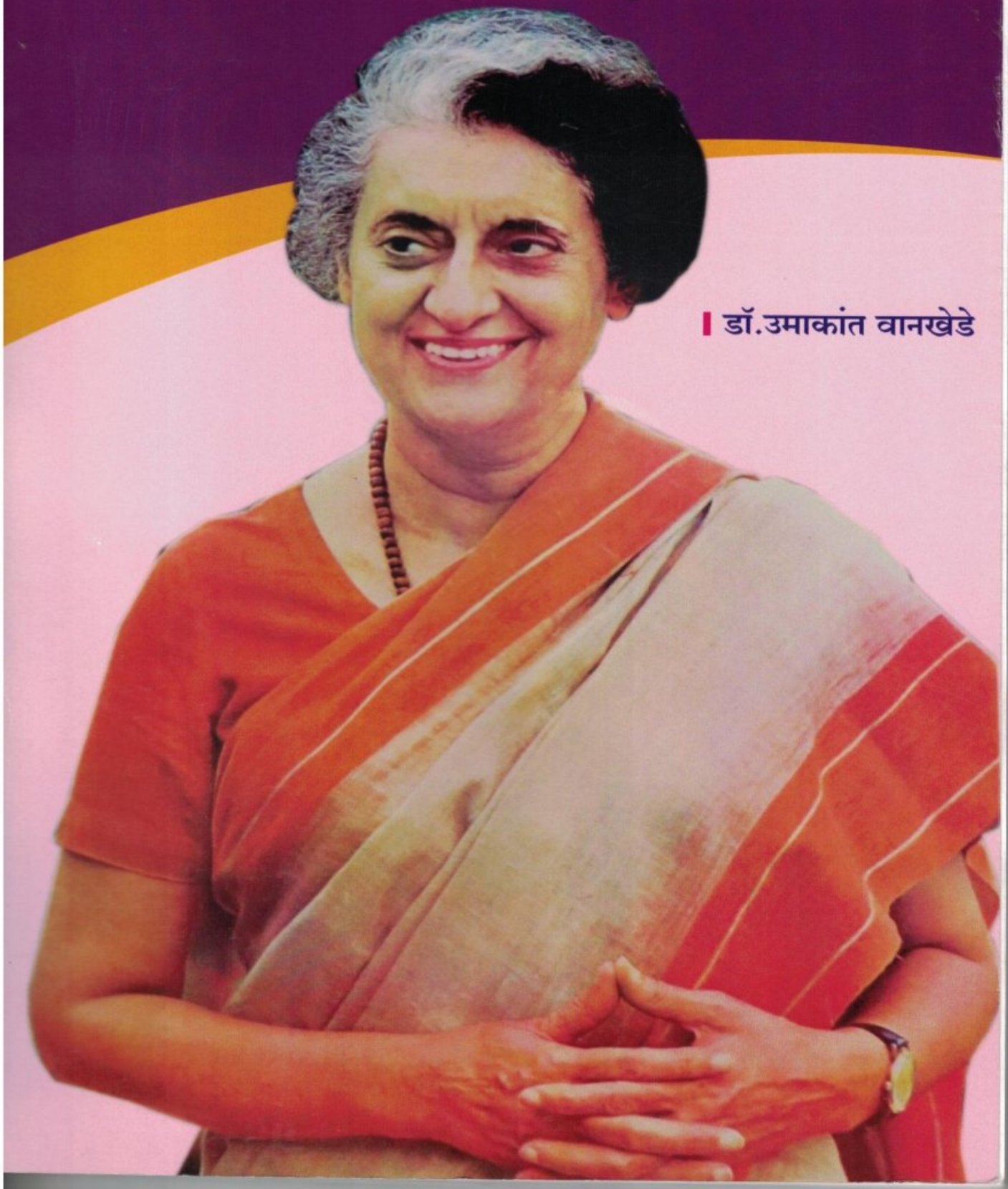

डॉ.उमाकांत वानखेडे

प्रियदर्शिनी इंदिरा गांधी : जीवन आणि कार्य

© डॉ. उमाकांत वानखेडे
9421336952

❖ **Publisher :**
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed (Maharashtra)
Pin-431126, vidyawarta@gmail.com

❖ **Printed by :**
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
www.vidyawarta.com

❖ **Page design & Cover :**
Shaikh Jahuroddin,Parli-V

❖ **Edition:** December 2020

ISBN 978-93-85882-65-4

❖ **Price : 499/ -**

All Rights Reserved, No part of this publication may be reproduced, or transmitted, in any form or by any means, electronic mechanical, recording, scanning or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner. Responsibility for the facts stated, opinions expressed. Conclusions reached and plagiarism, If any, in this volume is entirely that of the Author. The Publisher bears no responsibility for them. What so ever.Disputes, if any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

http://www.printingarea.blogspot.com

40) इंदिरा गांधी आणि आणिबाणी
प्रा.राजेश अनंतराव कांबळे, कन्नड, जि,औरंगाबाद ||128

41) भारतातील कर्तबगार राजकीय महिला नेतृत्त्व
प्रा.शहाणे रंजना प्रल्हादराव, परळी-वैजनाथ जि.बीड ||130

42) इंदिरा गांधी आणि बँकांचे राष्ट्रीय कारण
प्रा.डॉ.तानाजी लोखंडे, माणगांव रायगड ||132

43) इंदिरा गांधी यांची अभिनव वानरसेना
प्रा.आवटे भाऊ दगडोबा, मंठा जि.जालना ||134

44) इंदिरा गांधी यांचे शांती निकेतनातील एक वर्ष
प्रा.डॉ.औचित्ये बी. सी., गंगाखेड जि.परभणी ||136

45) इंदिरा गांधींचे शिक्षण आणि संस्कार
प्रा.डॉ.धायगुडे राजाभाऊ भाऊसाहेब, परळी-वैजनाथ जि.बीड ||139

46) इंदिरा गांधी यांच्या कार्याचा आढावा
प्रा.दुनघव अशोक ज्ञानोबा, भूम जि.उस्मानाबाद ||141

47) इंदिरा गांधी जीवन आणि कार्य
प्रा.डॉ.कंधारे विश्वास शामराव, चौसाळा ता.जि.बीड. ||143

48) इंदिरा गांधी यांची भारतीय राजकारणात भूमिका
स्मिता विजय मामीलवाड, लातूर ||145

49) गरीबी हटाव आणि इंदिरा गांधी
प्रा.डॉ.मुळे उध्दव माधवराव, परळी-वै. जि.बीड ||147

50) भारताच्या पहिल्या महिला पंतप्रधान इंदिरा गांधी
प्रा.निर्वळ उध्दव गणपतराव, पालम ||149

51) इंदिरा गांधी आणि बँकेचे राष्ट्रीयीकरण
प्रा.डॉ.पवार रणजित कवरसिंग, कन्नड जि.औरंगाबाद ||151

52) इंदिरा गांधींच्या काळातील भारताचे रशिया व अमेरिकेशी असलेले संबंध
डॉ.नामदेव वा. ढाले, बुलडाणा ||153

ISBN 978-93-85882-65-4

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

इंदिरा गांधींच्या कार्याचे मूल्यांकन करताना आपल्याला एक गोष्ट मान्य करावी लागेल की, इंदिरा गांधींचे व्यक्तिमत्त्व विलक्षण गुंतागुंतीचे आणि अंतर विरोधाने पूर्णपणे भरलेले होते. परंतु तरीही त्यांच्यात विलक्षण कणखरपणा, धाडसीपणा, एकदा निर्णय घेतला की त्याला चिकटून राहण्याची वृत्ती दिसून येते. इंदिराजींचे राजकीय कौशल्य राजकारणात वारंवार दिसून येते. आव्हानात्मक परिस्थितीत त्यांना काम करण्याची सवय होती. तरी सुध्दा कोणत्याही प्रश्नावर त्या स्वतःच निर्णय घेत असत आणि निर्भयपणे आमलात आणत होत्या.

काँग्रेसचे विभाजन, बांगला देशाचे युध्द, आणिबाणी घोषणा, पुन्हा राजकीय सत्ता संपादन, ऑपरेशन ब्लू स्टार ची कारवाई, जनता पक्षाने चौकशी समित्या नेमून केलेली चौकशी यातून इंदिराजींच्यात असलेली निर्भयता आणि त्या परिस्थितीत निर्णय घेण्याची क्षमता दिसून येते. आंतरराष्ट्रीय आणि राष्ट्रीय क्षेत्रात त्यांची तुलना आपल्याला आर्यपुत्र, चाणक्य किंवा मॅकेव्हली यांच्याशीच करावी लागते.

म्हणून असे म्हणावे लागते की, अचूक निर्णय घेणाज्या, स्पष्ट बोलणाज्या, धैर्यशील वृत्तीच्या, कणखर अशा इंदिरा गांधी ह्या आपल्या राष्ट्राचे मोठे चैतन्यमयी व्यक्तिमत्त्व होते. त्यांची बरोबरी इतर कोन्हीही करू शकले नाहीत. इंदिरा गांधी या नूसत्याच राजकीय नव्हत्या, कुटनीतीज्ञही नव्हत्या, तर त्यांचे स्थान एखाद्या महाराणीसारखे होते. हजारो लोकांना असे वाटत होते की, इंदिराजी ह्या काहीतरी दैवी शक्ती बाळगून आहेत. असे हे स्थान इंदिराजींनी स्वतःच्या कष्टाने मिळविले आहे हे विसरता येणार नाही. म्हणूनच भारतात इंदिरा गांधी यांना सर्वात सामर्थ्यशाली शासक म्हणून ओळखले जाते हे सत्य आहे.

संदर्भ ग्रंथ

1) संपादक डॉ.कुलकर्णी श्री.प्र., डॉ.सौ.साठे शुभा, डॉ.सौ.कडू मोहिनी "भारतीय राजकारण दशा आणि दिशा", विजय प्रकाशन, नागपूर

2) सौ.हंप्रस प्रतिभा, "भारतातील कर्तृत्ववान स्त्रिया", साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद.

3) धर पी.एन., अनुवाद जैन अशोक, "इंदिरा गांधी, आणिबाणी व भारतीय लोकशाही, रोहन प्रकाशन

4) जयकर पुपुल अनुवाद जैन अशोक, "इंदिरा गांधी", राजहंस प्रकाशन, पुणे.

5) डॉ.तांबोळी ज्युबेदा, "इंदिरा गांधी : एक कणखर नेतृत्त्व".

❑❑❑

42

इंदिरा गांधी आणि बँकांचे राष्ट्रीय कारण

प्रा.डॉ.तानाजी लोखंडे
द.ग.तटकरे महाविद्यालय,
माणगांव रायगड

****

१) प्रस्तावना:-

भारतीय बँकांचीपार्श्वभूमीपूर्वी पासून असलेले सावकार व सराफी पेठ्या हेच भारतीय बँक व्यवसायाचे पूर्वज आहेत.भारतीय सावकार राजे-राजवाडे व संस्थानिकांना ही कर्ज देत असत.या सावकारी व्यवसायात मारवाडी , जैन ,श्रेष्ठी, पठाण, रोहिले या जमातींचे वर्चस्व होते. त्यांचा मुख्य व्यवसाय शेती किंवा व्यापार असे पण या सावकारी पद्धतीत अनेक दोष होते. कर्जदाराची मालमत्ता हडप करण्याची प्रवृत्ती जास्त असल्याने सावकार बदनाम झाले. ग्रामीण भागात जमीनदार सावकारी चा व्यवसाय करून लहान शेतकऱ्यांच्या जमिनी हडप करीत.सावकारी खेरीज लहान - मोठ्या शहरातून सराफी पेठ्या देखील बँकांचे कार्य करीत त्याचे हे व्याजाचे दर अधिक व परत फेडीच्या अटी गैरसोयीच्या असत. युरोपियन व्यापाऱ्यांना भारतातील सावकारांच्या पद्धती आवडल्या नाहीत म्हणून त्यांनी भारतामध्ये बँकेचा व्यवसाय करण्यात सुरुवात केली. इ.स. १८२९ ते १८३२ या काळात आर्थिक संकट आले होते त्यामुळे दलालीचा व्यवसाय पूर्णपणे बंद पडला होता.त्याची जागा बँकांनी घेतली ईस्ट इंडियाच्या मदतीने बँक ऑफ बेंगाल (१८०९) बँक ऑफ बॉम्बे (१८४०) व बँक ऑफ मद्रास (१८४३) या तीन बँका प्रथम स्थापन झाल्या होत्या . १८५५ ते १९१९ या काळामध्ये अनेक बँक स्थापन झाल्या .बँकांचे रूपांतर इंपेरियल बँकेच्या निर्मिती मध्ये झालेले आपणास दिसून येते.

२) रिझर्व्ह बँकेची स्थापना :- (१९३५)

भारतामध्ये अनेक लहान बँकांची निर्मिती झालेली होती परंतु या तिन्ही बँकांचे एकत्रीकरण करून इंपेरियल बँक ऑफ इंडिया मोठी बँक स्थापन करण्यात आली. स्वतंत्र

ISBN 978-93-85882-65-4

Proceedings Book of National Seminar

संशोधन पद्धती

Research Methodology

डॉ.संजय वाघमारे
(प्राचार्य)

डॉ.ओमशिवा लिगाडे
(समन्वयक)

संपादक
प्रा.अमोल पगार
डॉ.लहू वाघमारे
डॉ.विनोद सोनवणे
डॉ.अरविंद कदम
डॉ.चंद्रशेखर ढोले
प्रा.रामराव चव्हाण

PROCEEDINGS BOOK OF NATIONAL SEMINAR
संशोधन पद्धती (Research Methodology)
संपादक - प्रा.अमोल पगार, डॉ.लहू वाघमारे, डॉ.विनोद सोनवणे
डॉ.अरविंद कदम, डॉ.चंद्रशेखर ढोले, प्रा.रामराव चव्हाण

ISBN 978-93-5240-186-4

अरुणा प्रकाशन
१०३, ओमकार कॉम्प्लेक्स - अ,
खर्डेकर स्टॉप, औसा रोड, लातूर
मो. ९४२१४८६९३५, ९४२१३७१७५७

© सर्व हक्क लेखकाधीन

: प्रथम आवृत्ती :- २२ ऑगस्ट २०१८

: मुद्रक : आर्टी ऑफसेट, लातूर

अक्षर जुळवणी : हिंदवी कॉम्प्यूटर, लातूर

मुखपृष्ठ रेखाटन :- विरु गुळवे ८६००८८११२७

मूल्य : ५००.०० रुपये

*"संशोधन पद्धती" या प्रोसेडींग बुक मधील सर्व मते आणि अभिप्राय संबंधित लेखकांचे असून त्यास संपादक, प्रकाशन, मुद्रक व वितरक सहमत असतीलच असे नाही.

Our Patrons

Hon. Madhavraoji B. Patil (Founder President, Shivjagruti Sr. College, Nalegaon)
Hon. Babruwanji Jadhav (President, S. S. V. B. U. Vikas Mandal, Nalegaon)
Hon. Vishwanathji Satalkar (Secretary, S. S. V. B. U. Vikas Mandal, Nalegaon)

President of Inaguaral Session

Dr. J.M.Waghmare (Former Vice Chancellor, S.R.T.M.U., Nanded)

Inaugurator :

Hon. Dr. Pandit Vidyasagar (Vice Chancellor, S.R.T.M.U., Nanded)

Keynote Speaker :

Hon. Dr. R.D. Kaplay (Professor, School of Earth Science, S.R.T.M.U., Nanded)

Chief Guests :

1. Dr. Somanath Rode (Ex Principal, Mahatma Basweshwar College, Latur)
2. Hon. Madhavraoji B. Patil (Founder President, Shivjagruti Sr. College, Nalegaon)
3. Hon. Babruwanji Jadhav (President, S. S. V. B. U. Vikas Mandal, Nalegaon)
4. Hon. Vishwanathji Satalkar (Secretary, S. S. V. B. U. Vikas Mandal, Nalegaon)

Session Chairpersons

1. Dr. N.G. Mali (Mahatma Basweshwar College, Latur)
2. Dr. N.T. Kamble (Swami Vivekanand College, Shirur Taj.)

Resource Persons

1. Dr. A. G. Singare (Sant Janabai College, Gangakhed)
2. Dr. Vikas Sukale (People's College, Nanded)

National Advisory Board

Dr. Somnath Rode (Latur)
Dr. N. G. Mali (Latur)
Dr. Sandesh Wagh (Mumbai)
Dr. Shivaji Waghmode (Jeur)
Mr. Ajay Kate (Chalisgaon)
Mr. Shashikant Bhamre (Chalisgaon)
Dr. Anil Singare (Parbhani)
Mr. Bhujang Bobade (Jalgaon)
Dr. Santosh Reoor (Raichur, K.S.)
Dr. Sadhana Sarmah (Debrugarh, Asam)
Dr. Ravishankarkumar Choudhari (Bhagalpur, Bihar)
Dr. Vishwanath Mishra (Bhagalpur, Bihar)

Organizing Committee (Senior College) :

Dr. Saniay D. Waghmare (Principal)
Dr. Omshiva V. Ligade (Convener & Head, Dept. of History)
Dr. Arvind V. Kadam (Head, Dept. of Geography)
Dr. Chandrashekhar S. Dhole (Head, Dept. of Pol. Sci.)
Mr. Amol A. Pagar (Head, Dept. of Economics)
Mr. Ramrao D. Chavan (Head, Dept. of Sociology)
Dr. Jayshri S. Bhave (Asst. Prof. in Geography)

करणारे दिसत नाही. म्हणूनच आ 'ल्या दे.. २१ व्या शतकातही पारंपरिक अनिष्ट प्रथा नष्ट होण्याऐवजी वाढतच आहेत. त्यामुळे भारतीय समाजासमोर आज अनेक आव्हाने उभा ठाकली आहेत. याचा अर्थ आपल्या देशात ज्ञानाची वानवा आहे, असा मात्र नाही. तर उपलब्ध असलेल्या ज्ञानातील गुणात्मक तथ्ये शोधले आणि त्या ज्ञानाचे योग्य प्रकारे उपयोजन झाले, तर आपले राष्ट्र एक जागतिक शक्ती आणि महासत्ता म्हणून पुढे येईल. महाविद्यालयीन स्तरावरील शिक्षक हा समाजशिक्षकही असतो. उत्तम शिक्षक हा उत्तम संशोधकही असतो. या उच्च शिक्षणातील पवित्र कार्य करणाऱ्या समाजशिक्षकाने आता या संदर्भात जागल्याची भूमिका घेणे आवश्यक आहे. तरच आपला देश जगाच्या तुलनेत टिकून राहील. अशा परिस्थितीत महाविद्यालयीन स्तरावरील शिक्षकांमध्ये परिसंवाद घडवून आणावा. त्याचे चिंतन व्हावे. या हेतूने या विषयावरील चर्चासत्राचे आयोजन आम्ही केले आहे. या चर्चासत्राचे औचित्य साधून आम्ही अनेक संशोधक-अभ्यासकांचे शोधनिबंध ग्रंथरूपाने प्रकाशित करून आपल्या हाती देत आहोत. यातील शोधनिबंधाचा अभ्यासक, संशोधक आणि विद्यार्थी यांना नक्कीच उपयोग होईल, असा विश्वास आम्हाला वाटतो.

धन्यवाद !

प्रा.अमोल पगार
डॉ.लहू वाघमारे
डॉ.विनोद सोनवणे
डॉ.अरविंद कदम
डॉ.चंद्रशेखर ढोले
प्रा.रामराव चव्हाण

अनुक्रमणिका

1. Essential Qualities of a Research Scholar २३
Dr. Nalini Avinash Waghmare

2. Investigation Method for Social Sciences २९
Dr. Prakash Ratanlal Rodiya,

3. Cloud Computing for Research: Issues and Challenges ३४
Dr. Sudhir V. Mane

४. इतिहास संशोधनपद्धतीतील गृहीतकृत्ये याविषयीचा चिकित्सक अभ्यास .. ४०
प्रा. डॉ. तानाजी शिवाजी लोखंडे

५. संशोधनातील प्रश्नावलीचे महत्त्व ४५
प्रा. डॉ. तांबारे व्ही. जी.

६. तथ्यसंकलन : संशोधनाचा आधार ४९
प्रा. हुडगे मधुबाला गंगाधर

७. सामाजिक संशोधन आणि मुलाखतीचे प्रकार ५४
प्रा. परदेशी भगवान ईश्वरलाल

८. संशोधनात 'नमुना निवड' तंत्राचे महत्त्व ५८
सातलिंग काशिनाथ गौंड

९. शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, परभणी येथील प्रशिक्षणार्थ्यांच्या ६३
व्यक्तिमत्त्व विकासात योगशिक्षणामुळे होणारा बदल : एक अभ्यास
डॉ. उर्मिला मुरलीधर धूत

१०. संशोधनाचे प्रकार ६७
प्रा. गोविंद रामराव काळे

11. Research Methodology and Methods ७०
Porf. Bichkunde Shashikant Sangram.

१२. सामाजिक शास्त्रातील संशोधन पद्धती ७५
श्री. दत्तात्रय मारुती कदम, प्रा. डॉ. डी. डी. माने

१३. संशोधनातील गृहीतकृत्य - एक अवलोकन ८१
प्रा. डॉ. जनार्धन केशवराव वाघमारे

14. Application Method of Research in Socio-Economic Transformation ८५
Dr. N. G. Mali, Mr. S. P. Dharne

४.

इतिहास संशोधनपद्धतीतील गृहीतकृत्ये याविषयीचा चिकित्सक अभ्यास

प्रा. डॉ. तानाजी शिवाजी लोखंडे
इतिहास विभागप्रमुख
द. ग. तटकरे महाविद्यालय, माणगांव-रायगड.

१) गृहीतकृत्ये :-

संशोधन समस्येबाबत प्राथमिक स्वरूपाचे काही ज्ञान व अनुभव संशोधनकर्त्याला असते. त्या ज्ञान व अनुभवाच्या आधारावर संशोधन समस्येच्या संदर्भात काही संभाव्य उत्तरे किंवा अनुमान विधानाच्या स्वरूपात मांडले जातात. या संभाव्य उत्तरे व अनुमानांमुळे संशोधक आपले लक्ष काही निश्चित व आवश्यक तथ्यांवरच केंद्रित करतो. त्यामुळे संशोधनाला एक निश्चित दिशा प्राप्त होते. या संभाव्य उत्तरे किंवा अनुमानांसच गृहीतकृत्ये किंवा उपकल्पना असे म्हणतात.

कोहेन व नॅगेल यांच्या मते "चौकशी वा संशोधनास चालना देणाऱ्या प्रारंभिक अडचणीचे वा समस्येचे संभाव्य निराकारण उत्तर सुचविल्याशिवाय आपण संशोधनकार्यात पहिले पाऊलसुद्धा पुढे उचलू शकत नाही. "एखाद्या घटनेच्या दोन किंवा दोनपेक्षा जास्त चलांमध्ये आढळणाऱ्या संबंधाबाबत संशोधनकर्ता जे अनुमान लावतो, तेदेखील गृहीतकृत्य होय."

पी. व्ही. यंग यांच्या मते गृहीतकृत्य हे वैज्ञानिक पद्धतीची पहिली पायरी आहे. गृहीतकृत्याची निर्मिती वैज्ञानिक संशोधनाचे अंतिम उद्दिष्ट नाही. अध्ययनाचा विषय सत्य आहे, हे सिद्ध करण्यासाठी संशोधनकार्यात गृहीतकृत्य निर्माण केले जात नाही. गृहीतकृत्य हे केवळ संशोधनास दिशा दाखविण्याचे कार्य करते. म्हणून गृहीतकृत्य हेच सत्य आहे, हे मानणे योग्य नाही. संशोधनकर्त्याने आपणास निश्चित स्वरूपात काय करायचे आहे, यासंबंधात सर्व पैलूंवर आपले लक्ष केंद्रित करावे आणि त्या संबंधित तथ्यांना एकत्रित करता यावे. संशोधनकार्याच्या दरम्यान संशोधनकर्त्याने इकडे-तिकडे भटकू नये, एका निश्चित दिशेने सत्याचा शोध घेता यावा, याकरिता गृहीतकृत्याची निर्मिती केली जाते.

२) गृहीतकृत्याची व्याख्या :

१) पॉलिन व्ही. यंग : "तथ्यांच्या विषयाबाबत सामान्य ज्ञानाच्या आधारावर एक शास्त्रज्ञ प्रयत्न व चूकभूलाची किंवा परीक्षणाद्वारा चूक सुधारण्याच्या पद्धतीद्वारा त्या विशिष्ट घटकांना निवडले जाते की, जे अध्ययनसमस्येवर प्रकाश टाकूशकतील. काल्पनिक विचार किंवा धुर्ल कल्पनांद्वारे तो तथ्यांच्या विभिन्न वर्गांमध्ये कारणात्मक संबंध प्रस्थापित करण्याचा प्रयत्न करतो. ही सूक्ष्म कल्पना तात्पुरता, मध्यवर्ती महत्वपूर्ण विचार, जो फलयुक्त संशोधनाचा एक आधार बनतो."

२) गुड आणि हॅट : "गृहीतकृत्य म्हणजे असे विधान आहे की, ज्याची सप्रमाणता ठरविण्यासाठी परीक्षण केले जाते आणि पुढील संशोधनासाठी उपयुक्त असते."

३) इ.एस. बोर्गाडस् : परीक्षण केल्या जाणाऱ्या विधानास गृहीतकृत्य असे म्हणतात.

४) एक. जे. मेक्युगुइगन : "दोन किंवा अधिक चलांच्या कार्यक्षम संबंधाचे परीक्षणयोग्य विधान म्हणजे गृहीतकृत्य होय."

वरील व्याख्यांवरून हे स्पष्ट होते की, गृहीतकृत्य हे एक असे कामचलाऊ अनुमान वाक्य, पूर्वविचार, कल्पना असते की, ज्याची संशोधनकर्ता संशोधनाच्या स्वरूपाच्या आधारावर सुरुवातीलाच निर्मिती करतो आणि संशोधनाच्या दरम्यान गृहीतकृत्याचे परीक्षण केले जाते. सर थॉमसन यांनी याविषयी अतिशय सुंदर उदाहरणे दिली आहेत. "शास्त्रज्ञाची कल्पना संभाव्य उत्तरांचे एक चित्र रेखाटते व या उत्तराच्या सत्यासत्यतेची चाचणी घेण्यासाठी संशोधनकर्ता पुढे सरसावतो. कुलूपस्वरूप असणाऱ्या समस्येस तो निरनिराळ्या बौद्धिक किल्ल्या लावून त्यापैकी कोणत्या किल्लीने कुलूप उघडेल, हेच तो जणू काही पाहत असतो. गृहीतकृत्याची किल्ली कुलूपास लागली नाही, तर तिचा त्याग करून तो दुसरी किल्ली किंवा गृहीतकृत्य बनवितो व पुन्हा कुलूपास ती लावून पाहतो. शास्त्राच्या कार्यात अशा हजारो निरुपयोगी किंवा फेकून दिलेल्या किल्ल्या असतात."

गृहीतकृत्याची वैशिष्ट्ये : (Characteristics of Hypothesis) गुड आणि हॅट यांनी (Methods in Social Research) या ग्रंथात गृहीतकृत्याच्या पाच प्रमुख वैशिष्ट्यांचा उल्लेख केला आहे.

१) स्पष्टता
२) अनुभवसिद्धता
३) विशिष्टता
४) उपलब्ध तंत्रपद्धतीशी संबंधित
५) सिद्धांताशी संबंधित

लोकराजा राजर्षी शाहू

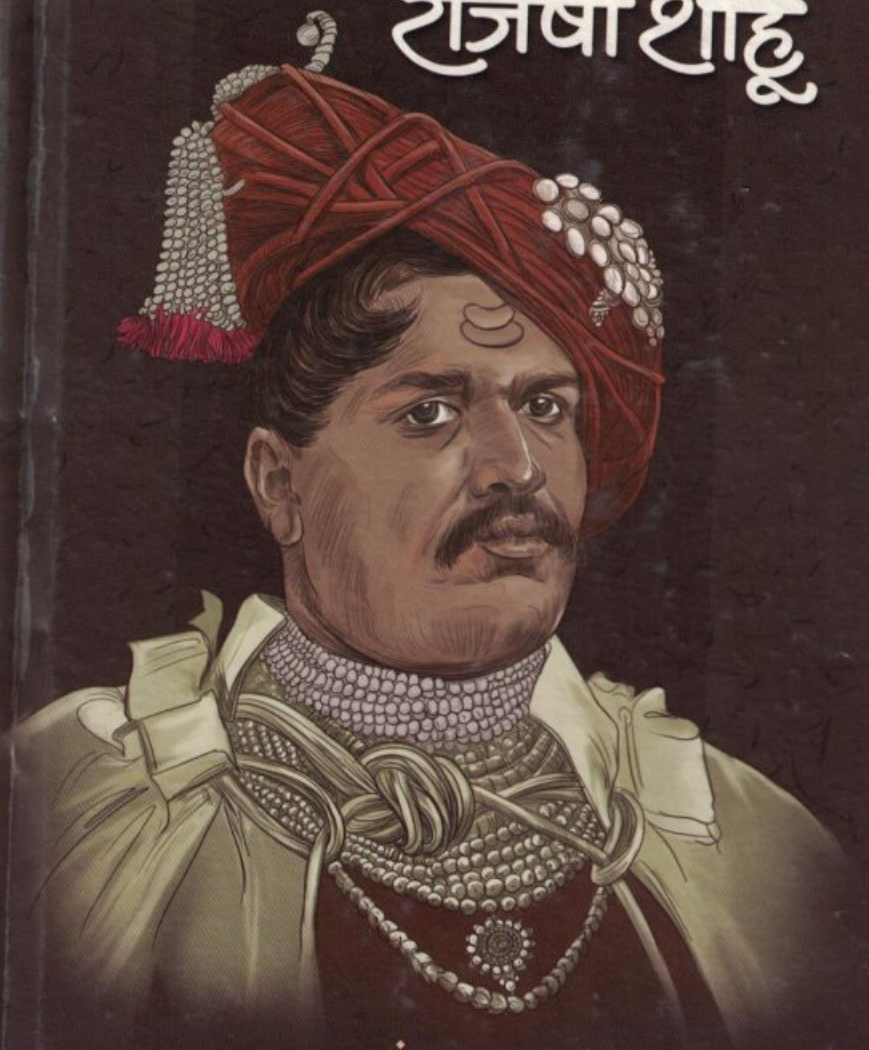

संपादक

प्रा.डॉ. डी.टी. घटकार

प्रा. जे.एल. जायेवार

लोकराजा राजर्षी शाहू

संपादक :- डॉ.डी.टी.घटकार, प्रा.जे.एल.जायेवार

* ISBN 978-93-5240-161-1

* प्रकाशक

अरुणा प्रकाशन, लातूर

१०३, ओमकार कॉम्प्लेक्स - अ,

खर्डेकर स्टॉप, औसा रोड, लातूर

मो. ९४२१४८६९३५, ९४२१३७१७५७

* प्रथमावृत्ती : २६ जुन २०१७

* © सर्व हक्क संपादकाधीन

* मुखपृष्ठ मांडणी : शिवाजी हांडे

* मुद्रक : आर्टी ऑफसेट, लातूर

* अक्षर जुळवणी : हिंदवी कॉम्प्यूटर, लातूर

* स्वागत मूल्य : ६००.०० रुपये

---

*"लोकराजा राजर्षी शाहू" या पुस्तकातील सर्व मते आणि अभिप्राय संबंधित लेखकाची असून त्या संबंधी संपादक मंडळ, प्रकाशन, मुद्रक व वितरक सहमत असतीलच असे नाही.

संपादकीय मंडळ

उपसंपादक

प्रा.डॉ.एन.पी.कुडकेकर

प्रा.पी.एस.कांबळे

प्रा.एम.एन.कांबळे

प्रा.डॉ.एस.एम.मुंडकर

संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट, जि.लातूर

सहसंपादक

प्रा.एस.डी.मुंढे

प्रा.डॉ.व्ही.आव.पाटील

प्रा.एम.बी.कुलकर्णी

संभाजीराव केंद्रे महाविद्यालय, जळकोट, जि.लातूर

संपादकीय मंडळ

प्राचार्य डॉ.मनोहर तोटरे
शाहीर अण्णाभाऊ साठे महाविद्यालय, मुखेड

डॉ.एम.सी.पवार
डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद

प्रा. रामकिशन मोरे
लक्ष्मीबाई सिताराम हळवे महाविद्यालय, दोडामार्ग जि.सिंधुदुर्ग

प्रा.विनायक राऊत
बाळासाहेब देसाई महाविद्यालय, पाटण जि.सातारा

डॉ.एन.एम.मडावी
गोंडवाना विद्यापीठ गडचिरोली

डॉ.सतीश पाटील
आर्टस ॲन्ड कॉमर्स कॉलेज, फोंडाघाट जि. सिंधुदुर्ग

प्रा.प्रदिप पाटील
ए.वाय.व्ये.को.महिला महाविद्यालय, देवपूर, धुळे

डॉ.संभाजी पाटील
एम.ई.टी.अभियांत्रिकी महाविद्यालय, नाशिक

प्रा.मारकवाड एस.एस.
आर्टस, सायन्स ॲन्ड कॉमर्स कॉलेज, रामानंद नगर पळुस जि.सांगली

प्रा.मधुकर पवार
गोपाळकृष्ण गोखले महाविद्यालय, कोल्हापूर

२९. राजर्षी शाहू महाराजांचे लोक कल्याणकारी कार्य २००
प्रा. रमेश आसाराम वाघ

३०. सामाजिक न्यायाचे कालातीत नेतृत्व : राजर्षी शाहू महाराज २०७
डॉ. एन. पी. कुडकेकर

३१. राजर्षी शाहू महाराजांचे लोक कल्याणकारी कार्य २१२
प्रा. ससाणे सतीश गंगाराम

३२. राजर्षी शाहु महाराजांचे लोककल्याणकारी कार्य २१८
प्रा.राणी जाधव-गायकवाड, प्रा.राणी जाधव

३३. राजर्षी शाहु महाराज : लोक कल्याणकारी राजा २२६
सहा. प्रा. संगिता गंगाराम उतेकर

३४. राजर्षी शाहू महाराज : बहूजन समाज उद्धारक २३३
प्रा.डॉ.सोमवंशी मुक्ता (गंगणे)

३५. राजर्षी शाहू : एक भारतीय समाजशास्त्रज्ञ २३८
सहा.प्रा.सौ. सोमवंशी अल्का बाबाराव

३६. राजर्षी शाहू महाराज यांची ब्राम्हणेत्तर चळवळीतील भूमिका २४७
प्रा. डॉ. बाबासाहेब केशवराव शेप, मुंडे दत्तात्रय रामकिशनराव

३७. राजर्षी शाहू महाराज आणि अस्पृश्यता निर्मूलन २५८
स.प्रा.हंगरगे यशवंत रामराव

✓ ३८. राजर्षी शाहू महाराजांचे अस्पृश्य उध्दाराचे कार्य २६३
प्रा.डॉ.तानाजी लोखंडे

३९. राजर्षी शाहू महाराज आणि धर्मनिरपेक्षता २६८
प्रा.कुडमते विलास देवराव

४०. राजर्षी शाहू महाराज व बहुजन समाज २७३
सहा. प्रा. डॉ. शिंदे अनंत नामदेवराव

४१. छत्रपती राजर्षी शाहु महाराजांचे परिवर्तनवादी विचार व कार्य २७७
प्रा. कोटरंगे दत्ता नामदेव

४२. राजर्षी शाहू महाराज आणि अस्पृश्यता निर्मुलन २८५
डॉ. गाजरे विलास अण्णाराव

४३. राजर्षि शाहू महाराजांचे समाजोन्नत्तीचे तत्त्वज्ञान - एक दृष्टिकोन २९२
प्रा. नरवाडे बालाजी मारोतराव

ISBN 978-93-5240-161-1

४४. राजर्षी शाहू महाराज आणि लोकमान्य टिळक २९८
प्रा.जायेवार जगदीश

४५. लोकराजा राजर्षी शाहू महाराज ३०५
प्रा. गादेकर पी.सी.

४६. लोकराजा छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज ३११
प्रा. राजेश ब. गोरे

४७. राजर्षी शाहु महाराजांचे व्यक्तिमत्व ३१६
प्रा. गजानन ज्ञा. मुनेश्वर

४८. लोकराजा राजर्षी शाहू महाराज ३२६
प्रा.श्याम समर्थ डावळे

४९. राजर्षी शाहु महाराज - महाराष्ट्राचे नररत्न ३३०
प्रा. रंजीत गुणाजी राठोड

५०. शेती व शेतकऱ्यांचे हित जपणारा जाणता राजा - राजर्षी शाहू ३३७
श्री. रमेश चिल्ले

५१. राजर्षी शाहू महाराजांचे कृषी व शेतकरी धोरण ३४४
प्रा.डॉ. संतोष अण्णा तागड

५२. राजर्षी शाहू महाराजांची जलनीती ३५१
संगिता राजापूरकर चौगुले

५३. शेतीतून आर्थिक विकास साधणारा महाराजा छत्रपती शाहू ३५६
प्रा.डॉ.आर.एस. धनुश्वर, केरबा कांबळे

५४. छत्रपती शाहू महाराजांचे आर्थिक धोरण ३६०
प्रा.सूर्यवंशी निळकंठ रामचंद्र

५५. राजर्षी शाहू महाराजांचे आर्थिक विचार व कार्य ३६४
श्री.प्रा.नेलवाडे महेश शिवाजीराव, प्रा.डॉ.एल.एच.पाटील

५६. राजर्षी शाहू महाराज आणि शाश्वत कृषी विकास ३७०
सहा.प्रा.मुसळे एन.पी.

५७. दलित एवं स्त्री उध्दारक राजर्षी शाहु महाराज ३७३
डॉ. वंदना एच. जामकर

५८. "लोककल्याणाला समर्पित समाजक्रांतीकारक महाराष्ट्रीय राजा" "छत्रपती शाहू महाराज" ३७९
प्रा.सारिका व्ही. पाटील

५९. समतेचे पुरस्कर्ते : राजर्षी शाहू महाराज ३८४
प्रा.माधव नरहरी कांबळे

ISBN 978-93-5240-161-1

धुळ बनून जगावे लागत होते वारंवार अन्यायाला व अत्याचाराला बळी पडावे लागत होते. हे सर्व बदलून टाकण्यासाठी महाराज प्रयत्नशील होते

शाहूंच्या या अलौकीक प्रेमामुळे व निष्ठेमुळे त्यांना मागासवर्गीय व अस्पृश्य मानलेले वर्ग देवासमान मानत होते.

निष्कर्ष :

मानवतावादी विचारातून महाराजांनी अस्पृश्यांच्या उध्दाराचे कार्य केले याच विचारातून महाराजंनी अस्पृशंनी पाटलाकडे दररोज हजेरी लावण्याची 'हजेरी पध्दत' व महार समाजच्या माथ्यावरील 'वेठ वरळा पध्दत' अशा दोन अमानुष पध्दती बंद करुन टाकल्या राजर्षीनी सामाजीक समतेची चळवळ भक्कम पयावर उभी केली अस्पृश्यांचा देव मानण इतपत त्यांच्यासठी झटले जातीभेद नष्ट करणे व अस्पृश्यांना स्पृश म्हणून वागविण्यासाठी अनेक उपक्रम व विचारातून कृतीकडे वळणार शाहू महाराज म्हणजे सामाजीक सुधारणांचे अग्रदू होते. न्याय, समता, नितिमत्ता, मानवता, बंधूभाव व सर्वधर्मसभाव ही मुल्यांची शिदोरी लाभलेले राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज म्हणजे कालप्रवाहास जबरदस्त धक्का देऊन नवमहाराष्ट्र घडविणारे महापुरुष अधुनीक महाराष्ट्राचे खरे खुरे शिल्पकार म्हणजे राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज होय. परीवर्तनशील व्यक्तिमत्व, रयतेचा राजा म्हणून गौरवास्पद, अतलुनीय अपूर्व उत्तुंग कामगीरी केलेल्या राजर्षी शाहू महारजांना केटी कोटी प्रणाम.

संदर्भ ग्रंथ

१. महाराष्टातील समाजसुधारणेचा इतिहास, जी.एल.भीडे, एन डी.पाटील
२. राजर्षी शाहू छत्रपती, रा.तू. भगत
३. यांनी घडवीला समाज, डॉ.लिला पाटील बाजीराव जठार- नाईक
४. देणे समाज पुरुषांचे, अरुण टिकेकर
५. श्रीमंत छत्रपती शाहू महाराजांचे चरित्र, अ.बा.लट्ठे
६. छत्रपती शाहू महाराज आणि कायदे कानून, द.रा.गोराई, आवृत्ती पहिली, मुंबई-१९७९.

❋❋❋

ISBN 978-93-5240-161-1

३८.

राजर्षी शाहू महाराजांचे अस्पृश्य उध्दाराचे कार्य

प्रा. डॉ. तानाजी लोखंडे
द.ग.तटकरे महाविद्यालय माणगांव
माणगांव – रायगड ४०२ १०४

प्रस्तावना :

इ.स. १८९९ चा कार्तिक महिना होता शाहु महाराज नेहमी प्रमाणे भल्या पहाटे कार्तीकी स्तानासाठी पंचगंगेच्या तीरावर गेले. त्यांच्या बरोबर त्यांचे बंधु बापूसाहेब महाराज, मेहुणे मामासाहेब खानविलकर व रामशास्त्री भागवत सोबत होते. महाराजांच्या स्नानाच्या वेळी नारायण भटजी मंत्र म्हणत होते भटजी न स्नान करताच वेदोक्त मंत्राऐवजी पुराणोक्त मंत्र म्हणत होते. शाहू महाराज वेदोक्त मंत्राचे मानकरी असताना नारायण भटजी पूराणोक्त मंत्र म्हणत आहेत हे रामशास्त्री भागवत यांनी महाराजांच्या लक्षात आणून दिले. महाराजांनी भटजींना प्रश्न विचारला त्यावर भटजी म्हणाले शुद्राला पूराणोक्त मंत्र सांगावे लागतात. वैदिक मंत्र म्हणतेवेळी स्नान करण्याची गरज असते. परंतु शुद्रांना पुराणोक्त पध्दतीचा अनुग्रह करावयाचा असल्याने मला स्नानाची आवश्यकता वाटत नाही क्षत्रिय कलावंतास हिंदू पदपातशहा अशी बिरूदावली असणाऱ्या शाहु महाराजांना एका समान्य भटजीने 'शूद्र' म्हणून हिणवावे हे महाराजांना आवडले नाही. तेव्हा पासून शाहु महाराजांनी समाज कार्य करण्यास सुरूवात केली. या गोष्टीचा शांतपणे विचार करून वेदोक्त प्रकरणा विरोधात एक नवीन चळवळ संस्थानमध्ये सुरू केली त्यामुळे जन जागरणाचक नवीन आंदोलन निर्माण झाले.

नव विचारांची पहाट फुलली :–

वेदोक्त प्रकरणाची चळवळ सुरू झाली आणि सामाजिक न्यायाच्या चळवळीस प्रारंभ झाला. वेदोक्त प्रकरणामुळे शाहु महाराजांच्या मनात नवविचारांची पहाट फुलली. सामाजिक जाणिव जागृतीतुन सामाजिक न्यायाच्या बळकटीस सूरूवात झाली. अशा वेळी गोविंद विष्णु विजापूरकरांनी मराठयांशी संघर्ष निर्माण केला. नंतर लोकमान्य टिळकांनी ही आक्रमक भुमिका घेतली. या संदर्भात मुंबईचे महापौर गव्हर्नर भारत मत्र्याला लिहलेल्या पत्रात म्हणतात. की, हे वेदोक्त प्रकरण कांही न घडता तसेच विरले असते परंतू बाळ गंगाधर टिळक यांनी वेदोक्ताच्या बाबतीत शाहु महाराजांच्या विरूध्द ब्राम्हणांना

ISBN 978-93-5240-161-1

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

काल, आज आणि उद्या

प्रकाश उत्तम हनवते
प्रा.डॉ. उत्तम हनवते

Dr. Babasaheb Ambedkar : Kal, Aaj ani Udhya

Edi. Prakash Hanwate/Prof. Dr. Uttam Hanwate

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : काल, आज आणि उद्या

संपादक : प्रकाश हनवते / प्रा.डॉ. उत्तम हनवते

सर्व हक्क संपादकिय

प्रकाशक : निसर्ग पब्लिकेशन, "स्वरशिल्प" नाईकनगर, हिंगोली.
भ्रमणध्वनी : ०९४२२१७९४६१
pavanprakashan@gmail.com

प्रथम आवृत्ती : ११ जुलै २०१६

मुद्रक : डेल्टा प्रिंटर्स, पूणे

अक्षर जुळवणी : **पत्की झेरॉक्स ॲण्ड कॉम्प्युटर,**
मुकूंद मधुकरराव पत्की,
भाजी मंडी रोड, जिंतूर, जि. परभणी - ४३१ ५०९
मो. ९८८११०२७९०

मुल्य : ५००/-

ISBN No. : **978-81-925656-8-2**

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : काल, आज आणि उद्या या ग्रंथातील सर्व लेखन, मते आणि अभिप्राय संबंधित लेखकांची असून त्या संबंधी संपादक, संपादक मंडळ, प्रकाशक, मुद्रक व वितरक सहमत असतीलच असे नव्हे.

अनुक्रमणिका

१. डॉ. आंबेडकरांचा संदेश/११

२. मानपत्र/१३

३. प्रा.डॉ. वंदना जामकर, नागपुर ..... डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार/१५

४. धोंडीरामसिंह राजपुत, वैजापुर..... डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर एक ज्ञान दिप/१८

५. डॉ. सुनिल कवडे, उमरखेड..... घटनातज्ञ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर/२०

६. प्रा.डॉ. उत्तम सावंत, नांदेड..... डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर : नामांकित वकील/२४

७. प्रा.डॉ. सतिश पावडे, वर्धा..... नाटय समीक्षक बाबासाहेब/२८

८. प्रा. राहुल गजभिये, दर्यापुर..... ब्राम्हणेत्तर चळवळ व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर/३०

९. विशाल हनवते, नांदेड..... डॉ. बाबासाहेबांचा वैचारीक वारसा/३५

१०. प्रा. अनिल जाधव, हातकणंगले..... डॉ. आंबेडकर आणि महिला सक्षमीकरण/४१

११. प्रा. संजय महाजन, नवी मुंबई..... डॉ. आंबेडकरांचा शुद्र विषयक विचार/४४

१२. प्रा. रेखा राऊत, परभणी..... डॉ. बाबासाहेब यांचे शैक्षणिक विचार/४७

१३. प्रा. शैलजा दांबरे, लातूर..... महिला सक्षमीकरणात डॉ. आंबेडकरांची भूमिका/५०

१४. प्रा.डॉ. संतोष कोल्हे, परभणी.... भारतीय महिला आणि डॉ. आंबेडकर/५४

१५. प्रा. डी.के. रसाळ, दहिवडी.... डॉ. आंबेडकर आणि शैक्षणिक चळवळ/५७

१६. प्रा. डॉ. अजय दिक्षीत, नवीन पनवेल.... डॉ. आंबेडकरांचे विद्युत व पाटबंधारे विकासातील योगदान/६२

१७. प्रा. डॉ. डि.एस. पाटील, नंदुरबार.... डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय शेती/६९

१८. प्रा. दत्ता हिंगमिरे, ऊरण.... डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे स्त्री कामगार विषयक धोरण/७४

१९. प्रा.डॉ. उत्तम हनवते, जिंतूर..... डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरः कल्याणकारी कररचनेचे पुरस्कर्ते/७७

२०. प्रकाश हनवते, जिंतूर.... डॉ. आंबेडकर : लोकसंख्या धोरण आणि आर्थिक विकास/८५

२१. प्रा.डॉ. विलास पाटील, जिंतूर.... संत साहित्य आणि डॉ. आंबेडकर/९०

२२. प्रा.डॉ. तानाजी लोखंडे, मानगाव..... डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे राजकिय संरक्षण विषयक विचार/९४

२३. प्रा. आनंद कांबळे, गुहागर.... राष्ट्रनिर्माते : विश्वरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर/९८

२४. प्रा.डॉ. गौतम निकम, चाळीसगाव.... नदी जोड प्रकल्पाचे शिल्पकार डॉ. आंबेडकर/१०३

२५. प्रा. बी.बी. घुरके, दहिवडी..... डॉ. आंबेडकरांचे शैक्षणिक धोरण/१०९

२६. प्रा.डॉ. नंदीनी रणखांबे, कराड.... डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शिक्षण विषयक विचार व कार्य/११३

२७. प्रा. रमेश गुडदे, जिंतूर.... प्रज्ञा पुरुषाचे प्रतिभा पैलू/११७

२८. प्रा.डॉ. सुर्यकांत कापसीकर, नागपुर.... अंबादेवी मंदिर प्रवेश सत्याग्रहात सवर्ण हिंदुचे कार्य/१२०

२९. प्रा. रश्मी आडेकर, गुहागर..... शिक्षणतज्ञ : डॉ. आंबेडकर/१२५

३०. प्रा.डॉ. उत्तम हनवते, जिंतूर.... स्पृश्यांच्या दृष्टीतुन डॉ. आंबेडकरांचे मुल्यमापन/१३०

२२. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे राजकीय संरक्षण विषयक विचार

प्रा. डॉ. तानाजी लोखंडे
द.ग. तटकरे महाविद्यालय,
माणगांव जि. रायगड

प्रस्तावना :-

डॉ. भीमराव आंबेडकर आणि राव बहादूर आर. श्री निवासन यांनी गोलमेज परिषदेत पददलित वर्गाच्या विशेष प्रतिनिधीत्वाच्या मागणी संबंधी सादर केलेल्या पुरवणी मागणी पत्र स्वयंशासित भारताच्या संविधानात पददलित वर्गाच्या संरक्षणासाठी राजकिय अधिकाराच्या मागणी संबंधी गतवर्षी आम्ही जे मागणी पत्र सादर केले आहे. आणि जे अल्पसंख्यांक उपसमितीच्या मुद्रित वृत्तांत पुस्तिकेच्या परिशिष्ट भाग 3 मध्ये आहे. त्यात आम्ही अशी मागणी केली होती की, पददलित वर्गासाठी प्रतिनीधीत्वाचे प्रावधान हे संरक्षक प्रावधानांपैकी एक प्रावधान निश्चितपणे असावे. पददलितांसाठी आवश्यक असलेल्या या विशेष प्रतिनिधीत्वाची मागणी सादर करताना त्यांची व्याख्या आणि अन्य विवरण आम्ही सादर केले नव्हते. याचे कारण की, या प्रश्नावर कोणताही निर्णय होण्यापुर्वीच अल्पसंख्यांक उपसमितीची बैठक समाप्त करण्यात आली होती. हे पुरवणी मागणीपत्र सादर करून मुळ मागणी पत्रातुन जे वगळण्यात आले आहे ते याला जोडण्याचा आम्ही प्रयत्न करीत आहोत. म्हणजे अल्पसंख्यांक उपसमिती पुन्हा कार्यप्रवण होणार असेल तर ती समिती हा प्रश्न जेंव्हा विचारात घेईल तेंव्हा त्या उपसमितीकडे सर्व विवरण उपलब्ध असेल.

1) विशेष प्रतिनिधीत्वाची व्याप्ती :-

अ) प्रांतीय विधान मंडळात विशेष प्रतिनिधीत्व,

1) बंगाल, मध्यप्रांत, आसाम, बिहार आणि ओरिसा, पंजाब आणि संयुक्त प्रांतात सायमन कमिशन आणि इंडियन सेंट्रल कमेटी यांच्या अंदाजानुसार पददलितांना त्यांच्या लोकसंख्येच्या प्रमाणात प्रतिनिधीत्व देण्यात यावे.

2) मद्रास प्रांतात पददलितांना 22% प्रतिनिधीत्व दिले जावे.

3) मुंबई प्रांताला - सिंध जर मुंबई इलाख्यात राहणार असेल तर पददलित वर्गाला 16% प्रतिनिधीत्व मिळावे.

ब) सिंधला मुंबई इलाख्यातून वेगळे करण्यात येणार असेल तर, उर्वरित इलाख्यात मुस्लिमांना जेवढया प्रमाणात प्रतिनिधीत्व आहे तेवढयाच प्रमाणात पददलित वर्गांनाही प्रतिनिधीत्व दिले जावे. कारण या प्रदेशात पददलित वर्ग आणि मुस्लीम यांची जनसंख्या सारखीच आहे.

क) केंद्रिय विधान मंडळात विशेष प्रतिनिधीत्व - केंद्रिय विधान मंडळाच्या दोन्ही सभागृहात पददलित वर्गांना हिंदुस्थानातील त्यांच्या लोकसंख्येच्या प्रमाणात प्रतिनिधीत्व मिळावे.

2) आरक्षण :-

खालील गृहीतांच्या आधारावर विधान मंडळात प्रतिनिधीत्वाचे प्रमाण निर्धारीत करण्यात आले आहे.

1) आम्ही असे गृहित धरले की, सायमन कमिशन आणि इंडियन सेंट्रल कमेटी अहवाल या प्रलेखात